CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

व्रजविनोद

लय
सी-५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

L. C. Sharma

आम्नाय-ग्रन्थालय,
रत्ननिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऊ3/19
आम्नाय-ग्रन्थालय, ... वाराणसी-1

ब्रजविनोद

जिसमें

ब्रजमंडल, वनयात्रा, कृष्णलीला, ब्रज के तीर्थ, मन्दिर, वन, उपवन, मेले, उत्सव, घाट, कुंज, धर्मशाला, गाम, स्थान, कुल, मथुरामाहात्म्य, ब्रज के वैष्णवों की सम्प्रदाय, और मथुरा, वृन्दावन, गोकुल, गोवर्द्धन, बरसाना, नन्दगाम, आदि का विस्तार पूर्वक वर्णन है

बाबू तेताराम वर्म्मा

वकील हाईकोर्ट पश्चिमोत्तरदेश अलीगढ़ निवासी ने बनाया

भारतबन्धु यंत्रालय अलीगढ़ में श्री पण्डित मिहिरचन्द्र मेनेजर के प्रबन्ध से मुद्रित हुआ

BRIJ BINOD

Containing an account of the *Birj Mandal*, and its sacred and worth seeing places &c. &c.

BY

BABU TOTA RAMA VARMA,

Vakil High Court N. W.-P., practising at Aligarh.

PRINTED UNDER THE SUPERVISION OF
PANDIT MIHIR CHAND MANAGER
AT
THE BHARAT BANDHU PRESS,
ALIGARH.
1888.

First Edition 500, Copies | प्रथम वार ५०० पुस्तक
Price per Copy 8 Annas. | मूल्य ॥)

All rights reserved.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

समर्पण

श्री ब्रजराज महाराज! आपकी लीला अपरम्पार है—वेद और शास्त्र भी जिसका पार नहीं पा सके—यह ब्रज मंडल आपकी बाल लीला की रंगभूमि है---इसका भी माहात्म्य वर्णन से बाहिर है--मैंने ब्रजभक्तों के विनोद के लिये आपकी अपार लीला का वर्णन—और आपकी जगपावन जन्म भूमि का कुछ माहात्म्य---इस छोटी सी पुस्तक में निज मति के अनुसार लिखकर प्रकाशित किया है---अब उक्त पुस्तक को पुष्पमाला मानकर प्रेम और भक्ति पूर्वक आप के और श्री वृषभानु नन्दिनी के चरणों में समर्पित करने के अनन्तर प्रसाद की रीति पर सेठ श्री लच्छमण दास जी सी---आई---ई---मथुरा निवासी के कंठ में समर्पण करता हूं ॥

आप का दास
ग्रन्थ कर्त्ता

SYAMA CHARAN PAL
CALCUTTA.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

॥ भूमिका ॥

एक वार श्रीवृन्दावनके ब्रह्मोत्सवपर मेरे परममित्र श्रीराधाचरणगोस्वामीजी श्री व श्रीयुत सेठ श्री निवासदास जी की और मेरी यह संमति हुयी थी कि एक ऐसी पुस्तक वनायी जाय जिसमें व्रजमंडल के बन,उपवन,मन्दिर मुख्य२ स्थान आदिका विस्तार पूर्वक बर्णन हो—उक्त मित्रों की अनुमति के अनुसार यह पुस्तकमैंने बनायी है।यद्यपि व्रज भूमि मेरीभी बहुत देखी हुई है,तथापि इस पुस्तक की रचना में मिस्टर ग्रूस साहब बहादुर सी आई ई की प्रसिद्ध (मथुरा मैमायिर) पुस्तक से मुझ को बड़ी सहायता मिली है और बहुतसी ऐसी पुरानी बातें मालूम हुई हैं—जो व्रजवासियों को भी विदित नहीं हैं। मैं मिस्टर ग्रूस साहब को हृदय से धन्यबाद देता हूं---और अपने परम मित्र गोस्वामी श्री राधाचरण जी का भी परमोपकार मानता हूं---जिन्होंने समस्त पुस्तककी अवलोकन करके शुद्ध किया है---इस पुस्तक में मथुरा माहात्म्य आदि से व्रज के तीर्थों का जो फल लिखा गया है उसमें मेरे बिद्यागुरु पंडित मिहिरचन्द्रजी से पूर्ण सहायतामुझको मिली है और उन्होंनेही शुद्ध करके यह पुस्तक छपवाई है---इस पुस्तक की रचना में मैंने इस आशा से श्रम किया है कि यात्री लोग व्रज मंडलके तीर्थ और मुख्य स्थान आदिका वृत्तान्तअनायास से जान कर लाभ उठावें--सज्जनों से यह प्रार्थना है कि बिना जाने जो कुछ भूल चूक रहगयी हो उस को क्षमा करें और मुझको लिख भेजें कि दूसरी बार मुद्रण में वह सुधार दी जाय॥

अलीगढ़ २१ जुलाई सन् १८८८ — सीताराम वर्म्मा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सूचीपत्र

नाम स्थान	पृष्ट	नाम स्थान	पृष्ट
वनयात्रा	२	गोवर्द्धन	१२८
श्रीमथुरापुरी	९	बरसाना	१२८
मथुराजी के त्योहार और मेले	१९	नन्दगाम	१२९
वृन्दावन	२३	संकेत	१२९
वृन्दावन के उत्सव, मेले और त्योहार	३३	परमभद्रवन	१३०
वृन्दावनके महल्ले मुख्यस्थान	३७	मांट	१३०
महावन	३७	ऊंचागाम	१३०
गोकुल	४०	खेलवन	१३०
बलदेवजी	४५	श्रीकुण्ड	१३०
श्रीगोवर्द्धन	४७	गंधर्ववन	१३०
बरसना	५१	परसौली	१३०
नन्दगाम	५४	बिलछूवन	१३२
परगना कौसी के मुख्य स्थान	५५	बच्छवन	१३२
परगना छाता	५८	आदिबद्री	१३२
परगना मथुरा	६५	करहला	१३२
परगना फरह	७१	अजनोख	१३३
परगन, माट	९१	पिसाग्रो	१३३
परगना महावन	७३	कोकिला वन	१३३
परगना सादाबाद	७५	दधिगाम	१३३
ब्रज के पुल और घाट	७५	कोटिवन	१३३
पुलिस स्टेशन	७६	रावल	१३३
ब्रजके पोष्टआफिस (डांक खाने)	७६		

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

व्रज लीला का संक्षेप	७६	व्रज के मुख्य स्थल	१३४
व्रज के मुख्य घराने	६६	वन १२	१३४
जैन मंदिर	८९	उपवन २४	१३४
वृंदावन और वृन्दावनके वैष्णव	८९	ताल २	१३४
व्रजमंडल माहात्मय	८९	बलदेवजी ७	१३४
वनयात्रा का संक्षेप	१२३	श्री कृष्णके चरणचिन्ह ७	१३४
मथुराजी की परिक्रमा के धाम	१२३	श्री राधिकाजी के स्थान २	१३५
मधुवनके धाम	१२३	पोखरि ६	१३५
तालवन	१२३	देवी ७	१३५
कुमोदवन	१२४	कदमखंडी ५	१३५
बहुलावन	१२४	महादेवजी ८	१३४
कामवन	१२४	पर्वत ५	१३५
खदिरवन	१२५	हिंडोरे के स्थान ६	१३५
वृन्दावन	१२५	सरोवर ४	१३५
भद्रवन	१२६	कूप ११	१३५
भांडोरवन	१२६	सिंहासन ६	१३६
		शिला ११	१३५
वेलवन	१२६	दानलीला के स्थान ६	१३६
लोहवन	१२७	श्री आचार्य्य महाप्रभुजी की बैठक २२	१३६
महावन	१२७	श्री गुसांई जी की बेठक ९	१३६
गोकुल	१२७	कुंड ८४	१३६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शुद्धाशुद्ध पत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति
सरावरि	सरोवरि	१	१२	ह	है	१९	४
बसाई	नसई	३	२८	विशष	वैशाष	१९	१६
पायठा	पैठा	४	५	वहस्पति	वृहस्पति	२१	९
हींकार	हीकार	४	२३	मुरशादाबाद	मुर्शिदाबाद	२६	४
मयनों	नयनों	५	३	टोंडर	टोडर	२६	१६
ग्रांम	ग्राम	५	५	परतु	परन्तु	२६	२९
बैठैन	बठैन	५	१६	एंक	एक	२८	९
हयान	हयाना	५	१९	ढोवारीं	ढोवारीं	२८	१३
सियारि	सयानि	५	२६	मुरशदाबाद	मुरशिदाबाद	२८	१८
दुर्सा	दुर्गा	६	६	मुरशदाबाद	मुर्शिदाबाद	२८	२१
चलकल	चलकार	६	१२	अल्लाह	अलह	२८	२१
क्यपि	क्यपि	१३	१५	जिनक	जिनकी	३२	१९
को	के	१३	२०	दोनों	दोनों	३२	२०
गड़ा	गढ़ा	१४	२	हालो	होली	३५	२६
को	की	१४	१२	निवाज़	निमाज़	३८	२७
है सुनते	०	१४	२१	वा	का	३९	३
ह	है	१४	२८	ह	है	३९	३
०	जोकि	१४	२९	करया	कराया	४०	१०
राजकुमारीं	राजकुमार	१५	७	अगरेज	अंगरेज	४३	१२
के	का	१५	७	रीठा	रोढ़ा	४५	३
हैं	है	१५	७	रीठा	रोढ़ा	४५	१५
मुसिफी	मुनसिफी	१५	२४	निट	निकट	४७	१०
चूनकांकार	चूनाकांकर	१६	१२	पहुंतेहे	पहुंचतेहैं	४७	१६
सौरगं	सारगंज	१६	१७	तोथ	तीर्थ	५१	१
अंतपाड़ा	अन्तापाड़ा	१७	१	मदिर	मन्दिर	५२	१९
सतघटा	सतवड़ा	१७	२	न	ने	५२	२७
नगरपायसा	नगरापायसा	१७	११	वलों	वेलों	५५	८
लगकर	लगाकर	१८	२	वेठंगे	बैठंगे	५५	१९
सिंघ	सिंह	१८	५	मामाईभाय	माभय	५५	३३
बनदाया	बनवाया	१८	२१	धार्मसिंह	धर्मसिंह	५७	१४
वाला	बल्ला	१८	२३	ह्यान	ह्याना	५७	२५
वेंव	वेच	१८	२५	फालन	फालेन	५८	२०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
पीछें	पीछें	५९	३	की	को	९५	२४
दायाद	दामाद	५९	६	टो	दो	९६	२८
ह	है	६३	१	हुई	हुये	९७	११
को	के	६३	४	सम्बधो	सम्बन्धी	„	२०
क	को	६३	५	क	के	९८	२५
था	थी	६७	२४	मुक्त	मुक्ताहुआ	९९	१७
मिल	मिला	६७	२७	छात्त	छात	१००	१६
नव	वन	६९	१२	वैकुण्ड	वैकुण्ठ	१०१	४
परसों	०	६९	१३	दर्शका	दर्शनका	„	१९
कंड़ा	कुंडों	६९	२९	पुण्ड	पुण्य	१०२	८
पदारथ	पदार्थ	६९	२९	व्रत्त	व्रत	१०४	१८
वावू	वाबू	७०	१०	रजा	राजा	„	२७
परमगा	परगना	७१	१४	श्वार	श्वर	१०५	७
वेरहीं से	वेरहींस	७१	२९	चन्द्रलं	चद्रलं	१०७	६
०	यहां	७२	१८	जोनिको	जीको	„	७
ह	है	७२	२५	त्वप्ति	त्वप्त	११०	१३
०	की	७३	९	वोलही	वोलताहो	११२	८
लोहजंवा	लोहजंघा	७४	१३	दष	दर्प	११३	२
गोपकूआ	गोपकूप	७४	१८	उमे	उसे	११४	२
भान	मान	७४	२४	कद्दुरा	मद्दुरा	११५	४
दौलतराम	दौलतराव	७५	६	वहां	वहांसे	„	५
सिंधिया	सेंधिया	७५	७	दाच्चि	दच्चि	„	१०
मूर्तिया	मूर्त्तियां	७५	१५	नहो	नसे मुक्तहो	११९	४
अठवा	आठवां	७७	१०	मन्ब	मध्य	१२०	५
मूर्तु	मूर्ति	७८	२५	घ्रुव	ध्रुव	१२२	९
०	पर	७९	१६	„	„	„	२०
ह	है	७९	२७	वऊदे	वलदे	१२४	१२
वहां	जहां	८१	१५	स्नानु	स्नान	„	१५
है	हैं	८७	२१	उनकोभी	भी उनकी	१२६	१२
आन्दद	आनन्द	„	२८	रोनी	रानी	१२८	४
फि	फिर	८८	१	स्त्री क्षणा	श्रीकृष्ण	१२८	१७
मे	से	८९	२	याह	याहे	१२९	२
(जैन	जैन(	„	७	मदिर	मन्दिर	„	११
है	है	„	२४	जीका	जीको	„	२४
दी	दो	„	२५	परभद्र	परमभद्र	१३०	३
वष्णव	वैष्णव	९०	१०	प्रभुजो	प्रभुजी	„	२७
म	स	„	९	यहांते	यहांसे	१३२	२३
हडेगा	पडेगा	„	२५	कुड	कुंड	१३३	१८
दामी	दामा	९२	४	थीक	थीके	„	२०
ाविद्या	बिद्या	९४	२७	साघव	माधव	१३६	२६

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

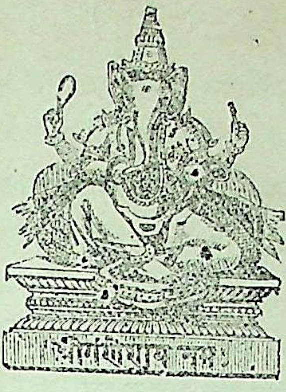

व्रज मंडल

श्री मथुरा, गोकुल और वृन्दावन के आस पास २४ कोस व्रज मंडल प्रसिद्ध है, जहां श्रीकृष्ण और बलरामजी ने जन्म लेकर अनेक लीला कीं और बाल लीला करके अपने भक्तों को नाना प्रकार के सुख दिये, इस व्रज मंडल की लम्बाई ४२ मील और चौडाई ३० मील है, इसके मध्य में श्री यमुनाजी वहती हैं—यमुनाजी के दाहिने तट पर कोसी और छाता के परगने हैं—और बांये किनारे पर मांट, नोहझील और कुछ महावन का परगना है—यह व्रज भूमि परम सुहावनी है—यमुना के पुलिन की शोभा बरनी नहीं आती—सुन्दर कदम के वृक्ष जहां तहां अति शोभायमान दीख पडते हैं—नाना प्रकार वन के वेलिद्रुम और लता प्रतान दृष्ट आते हैं, करील, छोंकर और पीलू के वृक्ष जो कहीं भी अच्छे मालूम नहीं होते, वह इस भूमि में मनोहर मालूम होते हैं—आठ मास तक जो यमुना नदी एक उथली और पतली धार होकर वहती है—वर्षा ऋतु में महा विस्तार हो जाती है—इस पावन भूमि में सरिता, सरोवरि पर्वतद्रुम लता आदि सबप्रकार की आनंद दायक रचना विद्यमान हैं—व्रज के जितने स्थान हैं सब श्रीकृष्ण या राधिकाजी की लीला से सम्बन्ध रखते हैं, छाता के पर्गने में जो नंद गाम और बरसाने की पहाड़ियां हैं, उनमें नन्दगांम नन्द बाबा का स्थान है—और बरसाना वृषभानु और कीरति का निवास-स्थान है।

रूप और सनातन बंगाली गुसाईं वृन्दावन मे रहते थे उनके शिष्य नारायण भट्टने वनयात्रा और रासलीला की रीति निकाली थी—उन्होंने व्रज मंडल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भर में जितने सर और बन उपवन थे सब के नाम धरे थे—पुराने स्थान तो केवल सात आठ थे--पीछे से देव स्थानों के आस पास उन्हो नामों के गाम बस गये या कुछ अदल बदल कर उनके नाम होगये--प्राचीन जितने ग्रामनगर आदिक थे वे देश-बिभागकी दशाके अनुसार थे—जिनमें पशु अधिक थे या वन उपवन बाग या गोचारन आदि की जगह बहुत थीं उनके वैसे ही नाम धरे गये--जैसे गो-कुल, जहां गौ बहुत थीं, गोवर्द्धन, जहां गौ पालन होता था-- माट जहां पर दूध बहुत बिलोया जाता था--इस व्रज मंडल का बिस्तार इस रीति से लिखा गया है।

विंशति र्योजनानांच माथुरं मम मंडलं।
यत्र तत्र नर: स्नात्वा मुच्यते सर्वपातकैः।

भाषा—मेरा मथुरा का मंडल बीस योजन है, जिसके जहां तहां तीर्थों में स्नान कर के मनुष्य सब पातकों से छूटता है।

दो० इत बरहद इत सोनहद उत सूरसेन का गाम।
व्रज चौरासी कोस में मथुरा मंडल धाम॥

बनयात्रा

श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव भादों के महीने में होता है--उसी समय से वनयात्रा का प्रारंभ होजाता है बन उपवनों में मेले होते हैं। रास लीला होती हैं--जिस स्थान पर जो लीला कृष्ण महाराज ने की हैं वहां पर वही लीला कीजाती हैं। जितने वन, उपवन, सर, कूप, गिरि, मंदिर, और कुंजें हैं क्रम२ से देखने में आते हैं गिनती में ये सब १२वन २४उपबन५पर्वत११शिखर (चट्टान)४तालाब ८४पोखरि और १२कूप हैं--परन्तु बन उपवन हीमुख्य हैं इससे यह वनयात्रा कहलाती है।

१२ बन ये हैं (१)मधुवन(२)तालवन(३)कुमुदवन(४)बहुलावन(५) कामवन (६)खदिरवन(७)वृन्दावन(८)भद्रवन(९)भांडीरवन(१०)बेलवन(११)लोहवन(१२)महावन।

२४उपवनयेहैं(१)गोकुल(२)गोबर्द्धन(३)बरसाना(४)नंदगाम(५)संकेत(६)परमभद्र (७)अड़ींग(८)शेषशाई(९)माट(१०)अंचगाम(११)खेलवन(१२) श्रीकुंड (१३) गंधर्व वन(१४)परसोलो(१५)विलछू(१६)बच्छवन(१७)आदिबद्री(१८)करहला (१९) अजनोख(२०)पिसायो(२१)कोकिलावन(२२)दधिगाम(२३)कोठवन(२४)रावल॥

बन यात्रा का मेला मथुरा से उठता है और यात्री लोग चलकर पहिले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सरस्वती भवन, करौंदी वाराणसी-5

मधुवन के महौली नाम गाम में ठहरते हैं।यह गाम मथुरा से दक्षिण-पश्चिम के बीच ४ या ५ मील को दूरी पर है।यहां रामचन्द्रजीके भाई शत्रुघ्नने मधु दैत्य के किले को उलट कर मधुपुरी बसाई थी--पीछे वही मथुरा कहलाई-परन्तु इसमें इतना भेद है कि मथुरा सदा से यमुना तटपर बसती है और यह मधुपुरी कुछ मील दूर है।संदेह नहीं कि प्राचीन काल में नगर किला सब मिलकर इतने घेर में हों।

इस मधुवन में एक मधुकुंड है और एक चतुर्भुज नाम ठाकुरजी का मंदिर है-यहां पर भादों बदी ११ की सदा एक मेला होता है।

महौली से दक्षिण की ओर चलकर यात्री तालवन पहुचते हैं। यहां बलरामजी ने धेनुक असुर को मारा था,यह तालवन तारसी गाव में है,इस गाम को ताराचंद ठाकुर कछवाहे ने बसाया है।

तालवन से चलकर कुमुदवन पहुंचते हैं।यह ऊंचे गाममें है।

कुमुदवन से बहुलावन जाते हैं।यह बाटी गाम में हैं।यहां बहुला नाम गाय को सिंह ने दवाया था-बहुला ने सिंह से बिनती की कि तू मुझ को एक घड़ी भर के लिये छोड़ दे,मैं अपने बछड़े को दूध पिलाय आऊं-सिंह ने उसकी बिनती मान ली-बहुला अपने बचन के अनुसार बछड़ा समेत लौटकर आई-तो देखा कि सिंह तो अन्तर्ध्यान होगया कृष्ण महाराज मौजूद हैं, बात यह थी कि कृष्ण भगवान् ही उसकी परीक्षा के लिये पधारे थे।उसकी सचाईकी परीक्षा कर के भगवान् अंतर्ध्यान होगये।

इस स्थान में कृष्ण कुंड की पारपर बहुला गाय का एक मंदिर है।

वहांसे चलकर यात्री लोग तोस-जाखिन गाम मुखराई होते हुए राधाकुण्ड पहुंचते हैं--वहीं कृष्णकुंड और राधाकुण्ड दो तालाव हैं--यहां अरिष्ट नाम बैल रूप असुर को कृष्ण महाराज ने मारा था और कृष्ण कुंड में स्नान कर के पाप-मोचन किया था।यह बैल असुर अड़ींग में मारा गया इस लिये उसका अरिष्ठ गाम नाम हुआ और पीछे अड़ींग कहलाया--फिर राधिकाजी ने वहां राधाकुण्ड प्रकट किया।

यहां से यात्री लोग गोवर्द्धन पहुंचते हैं कि जो दो तोन मील है-यहां बहुतसी अद्भुत लीला भगवान् ने की हैं यात्री लोग उसके निकट जो पवित्र स्थान हैं उनके दर्शन करते है वहां पर एक बसई गाम है कि जहां दोनों भाई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृष्ण बलराम नंद बाबा समेत एक समय आकर बसे थे--वहां से कुछ दूर पर किलोल कुण्ड माधुरीकुण्ड मोरवन और चंद्रसरोवरि हैं कि जहां कृष्ण ने गोपियों के संग नृत्य किया और ऐसे प्रेम में मग्नभये कि छ: मास की रात कर दी--यह सरोवरि परसौली में है--यह अठपहलू ताल है--पत्थर के घाट बने हुए हैं और भरतपुर के राजा नाहरसिंह ने बन वाये हैं आगे चलकर पैठा गाम पड़ता है जहां इन्द्रकी कोपसे बचनेके लिये ब्रज वासी जाकरइकट्ठे हुए थे--वहां से गिरिराज के किनारे २ चलने से आन्योर आती है गिरिराज की पावन पहाड़ी पर चढने से आगे सुगंध सिला सिंदूरी सिला सुंदर सिला गोवर्द्धननाथजी के मन्दिर समेत मिलती हैं वहांसे गोपालपुर बिलछू और गांठौली पहुंचते हैं वहां श्रीराधारानी के साथ श्रीकृष्ण महाराज की गांठ जोड़ी गयी है।

गिरिराज की तलैटी में इसी तरह चलते २ यात्री लोग कामवन में पहुंच ते है यह जगह भरतपुर के राज में है और मथुरा से ३९ मील है यहां पर लुक लुक कन्दरा है जहां बालपन में श्रीकृष्ण आंख मिचौनी खेले है--यहीं पर अघासुरकी गुफा है कि जहां व्रजराज महाराजने अघासुरका बध किया था कनबारो गाम से चलकर ऊंचे गाम को आते है यहां एक प्राचीन मन्दिर बलदेव जी का है।

पहाड़ी पर ऊंचे चढ़कर बरसाना मिलता है कि जहां लाडलीजी के बहुत से मन्दिर हैं यहां वृषभान और कीरति ने राधिकाजी का पालन पोषण किया।

नीचे उतर कर दोहनी कुण्ड है जहां जसोधाजी दोहनी धोया करती थीं वहां पर जसोधाजी ने श्रीकृष्ण और राधिका को पहिले ही पहिले एक साथ देखा था और मन में यह मनाने लगी कि ईश्वर ऐसो करे कि वे दोउ प्रिया प्रीतम होकर यहां बिहार करें--यहां प्रेम सरोवरि है जहां प्रथम सनेहकी बात चीत हुई इसी जगह के पास सांकरी खोरि है जहां पर कृष्ण महाराज गोपियों से दाम लेते थे।

यहां से चलकर यात्री संकेत बन पहुंचते हैं यहां पर राधिकाजी की सखी चंद्रावली का रिठौर गाम है आगे नन्द यशोधा का रहने का गाम नन्द गाम है जिसमें सुन्दर पान सरोबरि है जहां कृष्ण नन्द बाबा को धेनु पानी पिलाने को लाया करते थे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आगें इस के करहला उपवन है—इसमें बड़ी सुन्दर कदम खंडी है—इसी-के पास कमईगांव है जहां राधाकी सखीको प्रिया प्रीतम दोनों ने दरसन देकर सुख दिये हैं अंजनोंखटि भी यहां है—नंद नन्दन ने यहां श्रीराधा के नयनों में अंजन लगाया था—सौहैं सुधारो थी—और लाड़िली जी ने हरी भूमि पर सुख से श्रम दूर किया था—यही पिसायो (पियासा वन) ग्राम है जहां श्रीकृष्ण जीको तृषा से व्याकुल देख लाड़िली जीने जल पान कराया था॥

यहां से उत्तर को और कुछ दूर पर खादिर वन आता है—जिसे खायरा भी कहते हैं। खायारा से आगें कुमर वन और जावक वन जाव में मिलते हैं यहां पर श्री कृष्णचन्द्र महाराज ने लाड़िली जी के चरणों पर जावक लगाया है॥

इससे परे कोकिलावन है—जहां कोकिलोंका सुन्दर शब्द सुनाईदेता है॥

कोकिलावन से चल कर चरन पहाड़ी पर पहुचते हैं—इस पहाड़ी पर नारद मुनि विश्राम करके बीना बजाया करते थे। इन्द्र भी श्रीकृष्ण की भेंट के लिये यहांही आया था—इस पहाड़ी पर भगवान के चरण के चिन्ह हैं॥

यहां से याची दधिगाम होकर बठैन जाते हैं—यहां पर कृष्णचंद्र महाराज गोपियों से किलोल करने के लिये पीछें रहगये और वलदेव जी को आगें गाय लेकर भेज दिया और कहा कि बैंठैन पर मेरो वाट देखना—इस तरह याची कोटवन पहुंच जाते हैं कि जो उत्तर की दिशा में सवसे दूर जगह है—यहां से वनयाचा लौटती है॥

लौटने में पहलें शेषशायी स्थान आता है कि जो हयाना गाम का एक नगला है। यहां पर श्री कृष्णचंद्र जी ने अपनो ईश्वरता दिखाने को चतुर्भुज रूप होकर शेषशय्या पर शयन किया—गोपियों ने विनती की कि यह अपनी माया समेटलो, खेलने खेल खेलो—फिर रास लीला में मन लगाओ, ऐसे रूप विरूप मत धरो॥

शेरगढ़ के निकट खेल वन पर जाकर फिर यमुना जी मिलती हैं और याची लोग यमुनाजी के किनारे २ विहार वन होते हुए कि जो पीरपुर में हैं सियारा गाम में चीर घाट पर पहुँचती हैं। यहां पर कृष्ण ने गोपियो के वस्त्र चुराये थे—आगें इसके नन्दघाट है—जहां से वरुण के दूत नंदजी को पकड़ लेगये थे। वरुण का यह मनोरथ था कि कृष्णचद्र महाराज अपने पिता को छुड़ाने आवेंगे, तब हम को दर्शन होजायगा—और पाताल को भी पृथ्वी के समान दरशन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गाकर प्रसन्नता होगी--इसके निकट भय गाम है जहां नन्द को डूब जाने के भय देने वाले समाचार पहुंचे ॥

इस वनसे आगे वच्छ बन आता है--जहां वत्सासुर को कृष्ण ने मारा था यहां दोवसई हैं--कि जहां गोपियां प्रेम वस हुई ॥ (१)

यहां से चलकर आटस नरी सिमरो (यहां चैत्र नवरात्र में बड़ा भारी दुर्गा का मेला होता है) छटीकरा और अक्रूर नाम के गाम पड़ते हैं--यहां पर कंस ने मल्लयुद्ध का न्योता भेजा था ॥

यहां से फिर भतरौंड़ को घूम कर आते हैं--भतरौंड़ वह स्थान है कि जहां ग्वाल वालों पर भोजन नहीं रहाथा और कृष्ण समेत सबने ब्राह्मणोंसे भात मांगा और ब्राह्मणोंने अपमान करकें नहीं दिया--परन्तु उन ब्राह्मणों की स्त्रियोंने अपने २ पति की आज्ञा के प्रतिकूल श्रीकृष्ण और ग्वाल बालों को भोजन कराये। कार्तिक पूर्णिमासीको यहां भतमेला होता है।आगें यहां से चलकर वृन्दाबन धाम आता है कि जहां के पावन घाट और पूजनीय मंदिर बहुत कुछ प्रेम उत्पन्न करते हैं ॥

वृन्दावन से यात्री यमुना पार उतरते हैं और जहांगीरपुरमें वेलबन पहुंचते हैं--इसके आगें मांट और मांट के निकट भद्रबन है--जहां श्रीकृष्णजीने दावाग्नि पानकी थी ।

भद्रवन से आगे भांडीर बन है--यहीं बलदेवजीने प्रलम्ब दैत्य को माराथा इससे उनका बलराम नाम हुआ इससे आगे डागोलो है--यहां कृष्णचन्द्रजी ने अपनी लकुट डाली थी--आगें जाकर सुन्दरस्नान सरोवरी मिलती है--जिसके आगे पिपरोलो गाम है--आगें लोहबन आता है--यहां लोहासुर को पराजय हुई ॥

कुछ चल कर गोपालपुर अहीरोंकी बस्ती है। उसके आगे रावल है जहां कभी राधिकाजी की माता कीर्ति, पिता वृषभानु रहते थे ॥

आगे चलकर बुढिया का खेड़ा है--इसमें वह बुढ़िया रहती थी जिसके बेटेको राधा की सखी मानवतीब्याही थी--मानवतो से भोग करने के लिये कृष्णचन्द्र ने बुढ़िया के बेटे का रूप धारण किया। मानवतो उनको अपना पति

---

(१) चौबे लोगों की यात्रा में यहां से वृन्दावन तक के स्थान नहीं पड़ते वर यहो से पार होते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जानकर उमग के मिली।बुढ़िया से यह कह दिया किंतु द्वार पर बैठी रह, तेरे बेटे का कोई रूप धर कर आवे तो मत आने देना ईंट मारना और भगादेना'। उस बुढ़िया का बेटा आया, ईंट मार कर भीतर न आने दिया॥

यहां से चल कर बन्दी गाम पहुंचते हैं--यशोदा की दो चेरी बन्दी आनंदी थीं, उनके नाम से बसाया गया है--आगे चल कर बलदेव जी आते हैं। यहां बड़ा भारी मंदिर बना हुआ है--बलदेवजी और रेवती जी की बड़ी बिशाल मूर्ति इस मन्दिर में हैं--अगहन और बैसाख की पूर्णिमा को बड़ा भारी मेला होता है॥

हथौरा गाम के आगे चिन्ताहरन घाट और ब्रह्मांड घाट है। यहां ग्वाल बालों ने आकर यशोदा जी को खबर दी थी कि तुम्हारे कान्ह ने मांटी खाई है। वह छड़ी लेकर दौड़ी परन्तु श्रीकृष्ण महाराज ने यह दिखाने के लिये कि ग्वाल बालों ने झूठी चुगली खायी है, मुंह फाड़ कर माता को दिखा दिया। उस छोटे से मुख में सब संसार, सात समुद्र, चौदह भुवन दृष्ट आये॥

इसके निकट महावन है। महावन में कृष्णचन्द्रजीने बहुतसी बाल लीला कीनी है। यहां पालने में झूले थे, गर्गमुनि ने नाम धरा, पूतना मारी और कंस के भेजे हुए जो और असुर आये उनका वध किया। यमुना के ठीक तटपर महावन से मील भर पर गोकुल गाम है। इसमें अनेक मन्दिर और देवालय हैं और उनमें श्रीकृष्णचन्द्रजी और और नामों के ठाकुर बिराज रहे हैं अर्थात् मदन मोहन जी, माधवराय, व्रजेश्वर, गोकुल नाथ, नवनीत प्रिया, द्वारकानाथ। जब यात्री यहांके दर्शन कर चुकते हैं, तब यमुनाजी उतर कर तीनचार मील चलने के पीछें श्री मथुराजी के उस विश्रान्त घाट पर पहुंच कर विश्राम लेते हैं कि जहांसे वनयात्रा को चले थे॥

व्रज-भक्ति-विलास एक पुस्तक में वन और उपवनों की संख्या १३३ लिखी है जिसमें ८ यमुनाजीके दाहिने तटपर और ४२ बांये किनारे पर हैं॥

१ बारह (१२) बन---१ महावन २ काम्यवन ३ कोकिलबन ४ तालवन ५ कुमुद वन ६ भांडीरबन ७ छत्रवन ८ खादिरबन ९ लोहबन १० भद्रवन ११ बहुला वन १२ बिल्व अर्थात् बेलवन॥

२ उपवन १२--१ ब्रह्मवन २ अप्सरा वन ३ बिह्वल वन ४ कदम्बवन ५ स्वर्ण वन ६ सुरभीवन ७ प्रेमवन ८ मयूर अर्थात् मोरवन ९ मनेंङ्गितीवन १० शेषशायिवन ११ नारदवन १२ परमानंद वन।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizaqtion by eGangotri

३ प्रतिवन १२ बारह--१ रंकावन २ बार्तावन ३ करह ४ काम्यवन ५ अंजन वन ६ कामवन ७ कृष्णाक्षिपनक ८ नंदप्रेक्षण ९ इन्द्रवन १० शिक्षावन ११ चंद्रावतीवन १२ लोहवन।

४ अधिवन १२ बारह-१ मथुरा २ राधाकुन्ड ३ नन्दग्राम ४ गतस्थान ५ ललित ग्राम ६ वृषभानपुर ७ गोकुल ८ बलदेव ९ गोवर्द्धन १० जावबन ११ वृन्दावन १२ संकेत।

५ सिव्यवन ५ पांच १ तपोवन २ मोक्षवन ३ कामवन ४ अर्थवन ५ धर्मवन (सिद्धिवन १२)

हर एक वन के देवता भी अलग २ हैं।

नाम वन	नाम देवता
महावन	बलदेव
कामवन	गोपीनाथ
कोकिलवन	नटवर
तालवन	दामोदर
कुमुदवन	केशव
मांडीरवन	श्रीधर
छत्रवन	हरि
खदिरवन	नारायण
भद्रवन	हयग्रीव
बहुलावन	पद्मनाभ
बेलवन	जनार्द्दन
परमानंद	आदिबद्रीश्वर
कामवन	परमेश्वर
नंदगाम	यशोदानन्दन
गोकुल	गोकुलचन्द्रमा
करहल	मुरलीधर
हास्यवन	लीला कमल लोचन
उपहारवन	लोकेश्वर
जन्हु वन	लंकाधिप कुलध्वन्सी
भुवनवन	श्रीवत्सलांछन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री मथुरा पुरी

ब्रजमंडल में मुख्य स्थान मथुरा है। यह यमुना के तीर पर बसती है= (अर्द्धचन्द्र प्रतोकाशायमुनातीरशोभिता) मथुरा सात पुरी में से एक पुरी है--इस के आस पास बहुत से तीर्थ स्थान हैं। मुसलमानों के राज्य में बहुत से देवालय और तीर्थ स्थान नष्ट होगये मथुरा के बहुत प्राचीन प्रसिद्ध केशवदेवजी के मन्दिर को तोड़कर औरंगजेब बादशाह ने मसजिद बनायी कि अब तक मौजूद है। केशवदेवजी का मन्दिर बहुत प्राचीन था। पुराणों में भी इसका वर्णन है। वाराहपुराण में लिखा है कि "नकेशवसमोदेवो नमाथुरसमोद्विज"। औरंगजेब बादशाह की चढ़ाई की खबर पाकर मेवाड़ के राना राजसिंह केशवदेवजी की मूर्ति को रथ में धर कर ले गये। उदयपुर के राज में बनास नदी के तीर पर उदयपुर से २२ कोस उत्तर पूर्व, रथ का पहिय्या रुक गया और धरती में समा गया बहुतेरा उखाड़ने से जब नहीं उखड़ा तब केशवदेवजी वहीं पधरा दिये गये। तब से उस स्थान का नाम नाथद्वारा हुआ और श्रीनाथजी का मन्दिर वहां बन गया। यह कृष्ण महाराज की मूर्तियों में सब से अधिक प्रतिष्ठित और पूजनीय है। और सात मूर्ति ठाकुरजो की और प्रसिद्ध हैं। और बहुतसी उनमें से मथुरा के ही आस पास हैं।

१	नवनीत	नाथद्वारे में
२.	मथुरानाथ	कोटे में
३	द्वारिकानाथ	कांकरावली में कन्नोज से लाई गयी
४	बाल कृष्ण	सूरत में महावन से गये
५	बिट्ठलनाथ या पांडुरंग	कोटा में बनारस से गये
६	मदनमोहन	वृन्दावन से
७	गोकुलनाथ	
८	गोकुलचन्द्रमा	गोकुल से पहले जयपुर में थे--महाराजा जयपुर की जब कृष्ण भक्ति दूर हो गयी, तब दोनों ठाकुर की मूर्ति कामवन भेज दी गयी।

कटरा के पीछे नवीन मन्दिर केशवदेवजी का बन गया है--शहर से दूर है, इस लिये लोग कम दर्शन को जाते हैं। कुछ बना भी अच्छा नहीं है--इस मन्दिर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

से परगने छाता का एक गांम उदी लगा हुआ है। उससे सालभर में १०२७ रुपे को आमदनी हो जाती है--इस मन्दिर के पास हो पोतराकुंड है--जिसमें कृष्ण चन्द्र के पोतरा धोये गये थे--देखने में यह कुंड बहुत सुन्दर नहीं मालूम होता परन्तु बड़ा भारी काम दोख पड़ता है--वृक्षोंकी लता जो सब ओरसे झुको हुईहैं वह मनोहर मालूम होती हैं--इस कुंड में जल कम ठहरता है, धरतो सोख जाती है--सन् १८५० में ग्वालियर राज के एक कामदार ने इस कुंड की मरम्मत कराई थी--अब तो नहर का जल भो कोई लावे तो आसक्ता है--इस कुंड के ऊपर कारागृह हैं--जिसको जन्म भूमि भी कहते हैं--बसुदेव और देवको यहां वंदिग्रह में रक्खे गये थे--और इसी कारागृह में कृष्णचन्द्रजी ने जन्म लिया था--

इस कुंडके निकट हो मल्लपुरा है जहां कंसके मल्ल चाणूर और मुष्टिक रहते थे।

कंकाली टीले से आगे वलभद्र कुंड पर भूतेश्वर महादेव का मंदिर हैं--यह मन्दिर मरहटों ने वनवाया था। प्राचीन काल में भूतेश्वर महादेव की हो मान्ता थी--व्रज में महादेवजी के तीन मन्दिर और वड़े हैं--कामा में कामेश्वर, गोवर्द्धन में चक्रेश्वर, वृन्दावन में गोपेश्वर--सलूने के दिन भूतेश्वर पर बड़ा भारी मेला होता है॥

वलभद्र कुंड के पास छोटे २ मन्दिर और हैं--१ दाऊजो का २ गनेशजोका ३ नृसिंह जी का॥

यहांसे आगे देहली को सड़क पर कुब्जा कूप है--कि जहां कृष्ण ने कुवरी का कूवर दूर किया था॥

वहां से दाहिनी ओर मुड़कर वृन्दावन--दरवाजे से शहर में आते हैं--यहां अम्वरीष का टीला है॥

यहीं पर थोड़ा चलकर सरस्वती संगम का पुल है कि जो सेठ लक्ष्मीचन्द ने सन् १८४९ में वनवाया था॥

दाहिनी ओर एक महादेव का मन्दिर है जो लखनऊ निवासी अजुध्या प्रसाद ने सन् १८५० में वनवाया था॥

इसके पासही एक वाग है और उसमें भी एक महादेव जी का मन्दिर है और पत्थर का घाट वना हुआ है--बाग को चार दीवारी के भीतर यात्रियों के ठहरने को मकान वने हुए हैं--यहां भिखारियों को अन्न भी बांटा जाता है--

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इससे मिला हुआ एक टीला है जो कैलास कहलाता है--इस पर गोकर्णेश्वर का मन्दिर है--जिसमें एक बड़ी विसाल मूर्ति है--बड़ी भारी आखें है--लंबे २ बाल और डाढ़ी मूंछ है--एक हाथ में प्याला और दूसरे में फूलों का गुच्छा है--अब यह मूर्त्ति वहुत पुरानी होगयी है--दीवार के ताखों में १॥ फुट की दो मूर्त्ति और रक्खी हुई हैं:जिनका नाम सती और पार्वती हैं एक का सीधा हाथ गिर गया है। यहां के ही मकानों में गोतम की समाधि है। ठीक पुल के नीचें गार्गी सार्गी का मन्दिर है--और ये छोटी वड़ी पथवारी कहलाती हैं सुनते हैं कि ये दोनों गोकरन की स्त्रियां थी--गोकर्ण स्वर्ग में जाकर महादेव जी के तुल्य होगये ॥

यहां और वहुत से देवता हैं--भैरव--सीतला देवी, मसानी सिव इसी जगह हैं। कोई मन्दिर और कोई मैदान में पुज रहे हैं। यहां पर एक माया देवी की भी मूर्त्ति है ॥

कैलास गिरि के आगे सड़क से दूसरी ओर एक मैदान है, जिस में रास-लीला होती है ॥

इस मैदान के निकट सरस्वती कुंड है कि जो १२५ फुट वर्गात्मक है। मथुरावासी वलदेव गुसांई चेला स्वामी नारायण के ने इस कुंड का जीर्णोद्धार सम्वत् १९०३ में २७३५) रुपे लगाकर कराया था। गुरु चेला बड़े नामी पंडित थे ॥

थोड़ी दूर चलकर महाबिद्या देवी का मन्दिर आता है। कहते हैं कि इस देवी की मूर्त्ति की प्रतिष्टा पांडवों ने की थी। अब जो मन्दिर है, वह एक शिखर पर है। और पेशवाओं ने इसे अठारहवीं शताब्दी के अन्त में वनाया था। ३० या ४० सीढ़ियों पर चढ़ कर मन्दिर में पहुंचते हैं ॥

इस पहाड़ी की जड़ में एक सूखा ताल है जो वेर, पीलू और हींस के सघन वन में छिपा हुआ है। इसके चौक में एक पुराना खंडी करील का वृक्ष है जिस के नीचें माया देवी और बुद्ध की मूर्त्ति खोदने से मिली थी ॥

यहां दो मेले होते हैं एक चैत सुदी ८ को दूसरा क्वार सुदी ८ को ॥

यहां से आगे सरस्वती संगम के सन्मुख जयसिंहपुर खेड़ा है। इसमें से बहुतसी बौद्धिमत के समय की मूर्त्तियां निकली हैं और वे सब खेड़े के नीचें चामुंडा देवी के पास रक्खी हैं। सड़क के पार जयसिंहपुरा के साम्ने सेनापति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

का घाट है जिसको ग्वालियर के किसी सेनापति ने बनवाया है ॥

कंकाली टीले से कुछ दूर पर शिवताल है। यह चौकोर है, गहरा बहुत है—इसमें सदा जल रहता है—इस पर घाट और मकान बने हुए हैं। दरवाजा बना हुआ है--एक ओर गौघाट है--यह ताल राजा पटनीमल की आज्ञा से सन् १८०७ में बनाया गया था और जेठ सुदी १० शुक्रवार सम्बत् १८६४ को समाप्त हुआ था, भादोंबदी ११ को यहां एक मेला जुड़ता हैं। न्हाने वाले नित न्हाते हैं, इस ताल के पर कोटे के बाहर एक सुन्दर महादेव जी का मन्दिर है। महादेवजी अचलेश्वर कहाते हैं ॥

शहर के मनोहरपुर नामक महल्ले में राजा पटनीमलका बनाया हुआ दूसरा मन्दिर दीर्घविष्णु का है, यह उस लीला को दिखाने वाली मूर्त्ति है, जब कृष्ण बालपन में बहुत बड़ा रूप धर कर कंसके चाणूर और मुष्टिक मल्ल से लड़े थे, नक्कारचीटीला पर राजा का घर भी अभी बना हुआ है--होली दरवाजे पर वीरभद्र का मन्दिर उसी राजा का बनाया हुआ है ॥

कटरे से चल कर संगतराशों के महल्ले में बनखंडी महादेव का मन्दिर है इसके पास सड़क की दोनों ओर बड़े २ टीले हैं जिन पर बिहारी जी का टूटा-फूटा मन्दिर है ॥

यहां से शहर की ओर चलकर महाराजा भरतपुर और गोस्वामी पुरुषोत्तमलालजी के बनाये हुए पत्थर के खुदाय के मकान हैं--वहां से आगे लोहे की पीपों का पुल है जो सन् १८७० में तयार हुआ है, अब उस पुल की जगह रेल का पक्का पुल बन गया है--अब पीपों का पुल तोड़कर कालपी को भेजा गया।

मथुराजी यमुना तट पर बसती हैं और १॥ मील लम्बी हैं उस पार से बहुत सुन्दर दिखाई देती है यमुनाजी के तटपर कुछ हटकर कंस का टीला है। यह कंस का किला था—पीछे जयपुर के राजा मानसिंह ने इसको बनवाया था। इसमें राजा मानसिंह के पीछे सवाई जयसिंह ठहरा करते थे।

शहर की ओर यमुना तट के बीच परम पावन विश्रान्तिघाट है जहां कंसासुर को मारकर श्रीकृष्ण महाराज ने विश्राम किया है, यहां बहुत से पत्थर के दर बने हुए हैं—इस घाट पर कछुए बहुत हैं—यात्री लोग चने डाला करते हैं।

कुछ आगे कंसखार है जिसमें होकर कंसको दाह करने के लिये श्रीकृष्ण खींच लाये थे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक मुसलमानी राज में वियान्त घाट पर मुसलमान मुसलमानी करने का यंत्र लिये खड़े रहते थे।जो कोई न्हाने जाता था,उस को मुसलमानी कर लेते थे।केशव भट्ट ने मुसलमानों को मार पीट कर लोगों का यह दुख दूर किया ॥

यमुना जी के तीर पर और भी छोटे २ घाट हैं।विश्रांति घाट से और नीचे की ओर फैले हुए हैं।उत्तर की ओरके उत्तर कोट कहलाते हैं और दच्छिण के दच्छण कोट के नाम से प्रसिद्ध हैं ॥

उत्तर के घाटों के नाम यह हैं १ गनेशघाट २ मानस घाट ३ दशाश्वमेध-घाट (अम्बरीष के टीले के नीचे) ४ चक्रतीर्थघाट (यहां कलिंजरेश्वर महादेव का मन्दिर है) ५ सोमतीर्थ घाट या वासुदेव घाट या शेष घाट ६ ब्रह्मलोकघाट ७ घंटाभरन घाट ८ धारापतन घाट ९ संगम तीर्थघाट या वैकुंठ घाट १० नव-तीर्थ घाट ११ असकुंडा घाट १२ कृष्णगंगा घाट—

दच्छिण दिशाके घाटों के नाम १ अवि मुक्त घाट २ वियांत घाट ३ प्रयाग घाट ४ कनखल घाट ५ तिन्दुकघाट ६ सूर्य्य घाट ७ चिन्तामणि घाट ८ध्रुवघाट ९ ऋषि घाट १० मोच्छ घाट ११ कोटि घाट १२ बुद्धघाट।

इन २४ घाटों में से विश्रांति घाट अलग करने के लिये लोग वलभद्रघाट और जोग घाट और गिनाते हैं ॥

वलभद्र घाट के पास सतघरा है जहां गतश्रम का मन्दिर है—जोग घाट वह है जहां नंद और यशोदा की पुत्री जोग निद्रा जो कंसने पत्थर पर दे पटकी थी—और वह दुर्गा की समान स्वर्ग को उड़गयी थी ॥

प्रयाग घाट (जहां वेनी माधव का मन्दिर है) और जोग घाट के बीच में शृंगार घाट है।यह नवीन घाट है।इस पर पीपलेश्वर और वटक नाथ महादेव के मन्दिर हैं—प्रयाग घाट के पास ही रामेश्वर महादेव का मंदिर है ॥

दो घाट और भी बड़े २ हैं,परन्तु पिछली चौबीसों में नहीं हैं।एक का नाम स्वामी घाट है जहां वरसाने के रूपराम कटारे का बनाया हुआ पत्थर का महल है।दूसरा बंगाली घाट है।इस पर भालरा पाटन के राजा का बड़ा भारी मकान है परन्तु वह अधबना है—यह घाट गोविंददेवजी के मन्दिर के गुशांई का बनवाया हुआ है।

चक्रतीर्थ में अम्बरीषका टीला है और वह ६० या ७० फुट ऊंचा है—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

यहां पर भगवान ने चक्र चलाकर दुर्वासा मुनिके कोप से अपने भक्त अम्बरीष को रक्षा की थी—इस टोले में लोग कहते हैं कि बहुत धन गड़ा हुआ है॥

कृष्ण गंगा घाट पर महादेवजी का मन्दिर बहुत सुन्दर बना हुआ है—इस घाट पर पत्थर का कटाव दर्शनीय है--यह बलदेव व्यास का बनाया हुआ घाट है।

ध्रुवघाट के पीछे ध्रुवटीला है--इस टीले पर १ छोटासा मन्दिर है यह मन्दिर सम्वत १८९४ में बनाया गया था। इस मन्दिर में निम्बारकसंप्रदाय के पुजारी होते रहे हैं।

यह ध्रुव टीला वह है कि जहां उत्तान पाद के पुत्र ध्रुवने सात वर्ष की आयुमें मथुरा आकर तप किया था।

इस टीले से आगें सतीबुर्ज है। यह चौकोर लाल पत्थर की बुर्जीसी राजा बिहारमल जयपुर वाले की स्त्री की छतरी है। उनके पुत्र राजा भगवानदास नें सन् १५७० में बन वायो थी।

सब से अन्त का जो घाट है उसकी पास और सदरबाजार के सामने दो बाग हैं। एक तो यमुना बाग जो सेठजी का है। इस बाग की बड़ी सुन्दर रचना है और इसकी शोभा दिन २ बढ़ती जाती है। यमुना बाग में दो छतरी बनी हुई हैं, एक पारिषजी की जो इस कुल के जन्म देने वाले थे, दूसरी सेठ मनीराम की जो चौरानवा के अकाल में बनी है--इसमें पत्थर का कटाव मथुरा के सब स्थानों से अच्छा है। यह पहिली छतरी से नीची बनायी गयी है क्योंकि पहिली छतरी सेठ पारषजी की है कि जिनकें सेठ मनीराम गुमाश्ते थे। इस बाग में सुनते हैं कि एक गुफा भी है। सुनते हैं वह बड़े आनन्द की जगह हैं।

दूसरा बाग जो इसके पास है वह बड़ा तो है परन्तु बने हुऐ मकान उस में थोड़े हैं। और दो एक अगरेजों की समाधि बनी हुई हैं।

मथुरा के बीच में एक बड़ी ऊंची मसजिद मुसलमानों की है वहां से चारों ओर सड़कें वृन्दावन, दीघ, भरतपुर और सदर को जाती हैं--इन सड़कों के बनाने में लाख डेढ़ लाख रुपया लगा है, पत्थर की बनाई गई हैं परन्तु यात्री लोग फिर भी दुख पाते हैं जाड़े में बहुत ठंडी रहती हैं और गरमी में तपने लगती हैं। मथुरा के बहुत पुराने मकानों में एक चौबेजी का बुर्जशिप है जो लाल पत्थरका बनाहुआ है। दूसरा सतीबुर्जके निकट एक मन्दिरहै, इसमें कटाव के हाथी बने हुए हैं उन पर मन्दिर की नीव है॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मथुरा में एक बहुत बड़ा मन्दिर द्वारिका धीशजी का है-इस को ग्वालियर राज के खुज़ानची सेठ पारिखजीने बनवाया था--यह बहुत बड़ा दर्शनीय मन्दिर है। इसमें पत्थर का काम बहुत विचित्र हुआ है--यह मन्दिर सदा से वल्लभाचार्य्य गुसांईयों के हाथ में रहा है। अबतक सेठजी की कोठी से मन्दिर का खर्च उठता था और अब सेठजीने २५०००) रुपै साल की जायदाद लगादी है।

इस द्वारिका धीशजी के मंदिर के सन्मुख सड़क की दूसरी ओर भरतपुर के राजकुमारों का महल है। इस महल का दरवाजा बहुत लम्बा चौड़ा और ऊंचा है। महाराजा बलवन्तसिंह ने इसे बनाया था और वर्तमान महाराजा ने पीतल का फाटक इस में चढ़वाया है॥

इससे मिली हुई सेठजी की हवेली है। यह हवेली लक्ष्मीचन्द सेठ ने १ लाख रुपे लगा कर बनाई थी॥

सन् १८७१ का बना हुआ एक मंदिर छत्ता बाजार में है। यह मंदिर बहुत सुंदर है--इसमें ऐसा उत्तम दर्शनीय काम बना है—एक देवचंद बोहरे ने यह मंदिर बनाया है॥

मथुरा नगर के चार दरवाजे हैं परन्तु परकोटा अब नहीं है वृन्दावनदरवाजा—दीघ-दरवाजा—भरतपुर-दरवाजा—होली दरवाजा—यह होलीदरवाजा हाल में पत्थर का बहुत उत्तम तैयार कराया गया है—पत्थर का काम इसमें बहुत दर्शनीय है और देखने में बहुत ऊंचा और बड़ा भारी दरवाजा मालूम पड़ता है। हारडिंगसाहब मथुरा के कलक्टर थे, उन के समय में यह होली-दरवाजा बना था, इस लिये इसका दूसरा नाम "हारडिंग गेट" भी है-इस दरवाजे पर घंटा घर भी तीन या साढ़े तीन हजार रुपे लगाकर बनाया गया है-कुल लागत इस दरवाजे की १३७३१) रुपे हैं॥

मथुरा में हाईस्कूल का मकान १२०००) रुपे की लागत का बना हुआ है। उसके आगे कंस टीले के पास सरकारी शफाखाना है, वहां ही मुंसिफी की कचहरी है।

शहर और सदर के बीच में यमुना किनारे की ऊंची नीची जमीन पर छावनी है। जहां सरकारी फौज रहती है।

एक अंगरेजों का गिरजा घर भी है। वह १८५८ ई०में बनाया गया था बहुत बड़ी अंगरेजी ढंग की इमारत है। भीतर इसमें संगमरमर का तखत है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोने की छड़ों पर रेशमी शमियाना लगा हुआ है—फारिस के कालीनों का बिछौना है—बड़े २ झाड़ फानूस लगे हुए हैं—बहुत अच्छी तरह यह गिरजा सजा हुआ है। सन् १८७६ तक यह गिरजा घर बनता रहा है।

सदर में एक बिचित्रालय अर्थात् अजायब घर भी है। पहले हिन्दुस्तानी रईसों के ठहरने के लिये बनाया गया था; पीछें अजायब घर होगया। इसके बनाने में ४४०००) रुपे खर्च हुए हैं। इसी के पास कम्पनीबाग है।

मथुरा में १११ महल्ले और स्थान हैं।

१ मंडवीरानी
२ बैरागपुरा
३ खिरकी बिसाती
४ नयाबास
५ अर्जुनपुरा
६ टेकनारनोल
७ गलीसेढूकसेरा
८ गलीरावलिया
९ गलीराम पाल
१० टेकरानाखाती
११ गली मथुरा मेव
१२ बाजार चौक
१३ गली भैरों
१४ ठठेरा गली
१५ लाल दरवाजा
१६ गली लोहिया
१७ नन्द गली
१८ तेली पाड़ा
१९ टीला चौबे
२० वृन्दावन दरवाजा
२१ बेर गोविंदी
२२ गली गोपशाह
२३ शाह गंज दरवाजा
२४ हालनगंज
२५ चक्रतीर्थ
२६ कृष्ण गंगा
२७ गौघाट
२८ कंसका टीला
२९ हनूमान टीला
३० जैर मसजिद
३१ कुशक
३२ सामीघाट
३३ मखदूमशाह
३४ असिकुंडाघाट
३५ विश्रान्तिघाट
३६ कंसखार
३७ गली दशावतार
३८ गोरपाड़ा
३९ गुसाईंघाट
४० कीलमठ
४१ श्यामघाट
४२ रामघाट
४३ रामजीद्वारा
४४ बिहारीपुरा
४५ बल्लभघाट
४६ मारूगली
४७ बंगालीघाट
४८ कालामहल
४९ चूनाकंकर
५० चमरहाना
५१ गोपालपुर
५२ सरायराजाभदौरिया
५३ सेगलपुरा
५४ छोकरपाड़ा
५५ मीरगंज
५६ होलीदरवाजा
५७ शीतलागली
५८ कम्पूघाट
५९ धर्मशाला राजा अवा पीतम्बरसिंह राजा की बनाई हुई
६० ध्रुवघाट
६१ ध्रुवटीला
६२ बालटीला
६३ बाड़ा जयरामदास
६४ जनरलगंज

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६५	अन्तापाड़ा ۲/-	८१	चोवच्चा	९६	शीतलाघाटी
६६	गोविंदगंज	८२	सतघड़ा ۵/- ۲۱/-	९७	नक्कारची टीला
६७	छगनपुरा	८३	छत्ताबाजार	९८	गूजरघाटी
६८	संतोषपुरा	८४	गली पाठकान	९९	गली कलाल
६९	छाहकठोटी	८५	मंदिर पारिषजी	१००	कसेरट
७०	कोतवाली	८६	काजोपाड़ा	१०१	गली दुरगाचंद
७१	भरतपुर दरवाजा	८७	नयाबाजार	१०२	बजाजा
७२	लालागंज	८८	घाटी चिकने पत्थरों को	१०३	घीआमंडी
७३	शीतलापायसा			१०४	गलीदूसरों की
७४	महोलीपोल	८९	गली गीटावाला	१०५	मनोहरपुरा
७५	नगरपायसा ۲/-	९०	गतश्रम	१०६	कसाई पाड़ा
७६	गूजरहान	९१	रलकुंड	१०७	केशीपुरा
७७	रौशनगंज	९२	छोंकापाड़ा	१०८	रामदास की मंडी
७८	भारकोगली	९३	मानिकचौक	१०९	मटिया दरवाजा
७९	खिरकोदलपतराय	९४	गजगायसा	११०	ढोंघ दरवाजा
८०	ताजपुर	९५	घाटी बिट्ठलराय	१११	महल्ला खाकरोबान

मथुराजी में नीचें लिखे हुए मन्दिर और मकान दर्शनीय हैं

१ होली दरवाजा — आगेरे की सड़क पर चुंगीसे बना है-१३७३१ रुपे लगे हैं

२ मन्दिर राधाकृष्ण---देवचन्द बोहरे का बनाया हुआ है, यह बोहरा तेद-खेड़ा जिला जवलपुर का रहने वाला था। सन् १८७१ ईसवी में ४०००० रुपे लगाकर छत्ता बजार में यह मन्दिर उसने बनाया था ॥

३ मन्दिरबिजय गोविंद महल्ला सतघरा में दतिया वाले बिजयराम बोहरे ने ६५००० रुपे लगाकर सन् १८३७ ईसवी में बनवाया था ॥

४ मंदिर बलदेव जी यह कंस खार बाजार में है और शेर गढ़ के खुशाली राम बोहरे नें सन् १८६५ में २५००० रुपेलगाकर बनवाया है ॥

५ भैरव नाथ का मन्दिर--यह लुहारों के महल्ले में विष्णुलाल खत्री का बनवाया हुआ है इसमें१००००रुपे लगे हैं इस मन्दिरको सरवर सुलतान भी कहते हैं ॥

६ गतश्रम--यह मन्दिर बिश्रान्त घाट परहै प्राण नाथ शास्त्रीका बनवाया हुआ है सन् १८०० ईसवी में २५००० रुपे की लागत से बना है ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७ द्वारिकाधीश---यह मंदिर असिकुंडा बाजार में है और सेठ का मंदिर कहलाता है सन् १८१५ में पारिख जो ने २०००० रुपे लगाकर बनवाया था ॥

८ भरतपुर के महाराजका महल -पारखजो के मन्दिर के पास जिसका दरवाजा दर्शनीय है और महाराजा वलवन्त सिंह का वनाया हुआ है ॥

९ सेठ लक्ष्मीचन्द की हवेली सन् १८४५ मे बनी हैं, इस में एक लाख रुपे लगी हैं ॥

१० मदनमोहनजी--यह मंदिर स्वामीघाट के पास है। सेठ अन्तराम--रामगढ़ निवासी का वनाया हुआ है--सन्१८५८में वना है और२००००रुपे लगेहैं

११ गोवर्द्धननाथ का मंदिर खुशाली बोहरे का वनवाया हुआ है। खुशाली बोहरे को लोग सेठ बाबू भी कहते हैं।वह वरोदरा राजा का कामदार था, यह मन्दिर सन् १८३० में वना है ॥

१२ विहारी जो का मंदिर---सन् १८५० ईसवी में नीमच के पास मही के रहनेवाले छक्कीलाल कन्हैयालाल साहूकार ने २५००० रुपे लगाकर वनवाया है। यह स्वामीघाट के पास है, इसका चौक और दरवाजा उत्तम वना हुआ है ॥

१३ मंदिर गोविंददेव--नक्कारची टीले के पास सेठ गुरसहायमल घनश्यामदास चूडूवाले का बनवाया हुआ है--सन् १८४८ में वना हैं इसी के निकट उन्हीं दिनों में उक्त सेठों ने अपनी हवेली बनवायी थी ।

१४ गोपीनाथजी का मन्दिर स्वामीघाट पर है--और सेठ गुलराज जगन्नाथ चूडूवाल ने ३०००० रुपे लगाकर सन् १८६६ ई० में बनवाया था ।

१५ बलदेवजी का मन्दिर--होलीदरवाजेके पास यह मन्दिर है सेठ लक्ष्मीचंद के नौकर बल्ला अहीर का वनवाया हुआ है--सन् १८२० में उसने अपने रहने के लिये ५०००० रुपे लगा करयह घर बनाया था पीछे एक बनैनी रायवाईके हाथ बेंच दिया--उसने घर का देव मंदिर कर दिया ।

१६ मोहनजी का मंदिर--यह सतघिरा महल्ले में है--सत्तर ७० वर्ष हुए जब रूपाराम बोहरेने बनवाया था यह मन्दिर धोकल कुंजके नाम से प्रसिद्ध है। इस मन्दिर के बनाने वाले का पुरोहित धोकल चौवे था उसी नाम से अब भी प्रसिद्ध है ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१७ मदनमोहनजी का मन्दिर--यह महल्ला असिकुंडा में है--और अलीगढ़ के धनराज बोहरे का बनाया हुआ है ।

१८ गोवर्द्धननाथजी का मन्दिर--कंसखार पर--देवीदास बोहरे ओरईया वाले का बनाया हुआ है ।

१९ दीर्घ विष्णु का मन्दिर--उस सड़क पर जो भरतपुर दरवाजे को जाती है बनारस के राजा पटनीमल का बनाया हुआ है ।

२० सतीबुर्ज--राजा भगवानदास का बनाया हुआ--यह सन् १५७० ई० में बना है ।

२१ अबदुलनवीखां की मसजिद सन् १६६२ ई० सर्वो की बनी हुई चौक के बीच में है।

२२ औरंगजेब की मसजिद--सन् १६६९ को बनी हुई--जहां पर यह मसजिद बनी है। वहां पहले केशवदेवजी का मन्दिर था ।

मथुराजी के त्यौहार और मेले

चैत्रसुदी में

१ चेतसुदी ८--दुर्गाष्टमी--महाविद्या देवी के मन्दिर पर मेला होता है ।

२ चैतसुदी ९--रामनवमी--रामजी द्वारे पर मेला होता है ।

वैशाख

३ वैशाख सुदी १४--नरसिंह-लीला गोर पोड़ा, मानिकचौक और द्वारिकाधीश के मंदिर में होती है ॥

४ वैशाख सुदी १५--मथुरा की परिक्रमा जो वनविहार के नाम से प्रसिद्ध है। विश्रान्त घाट से लोग चलते हैं, यही एक परिक्रमा रात में होती है ॥

जेठ

५ जेठ सुदी १०--दशहराजेठ, दुपहर को दशाश्वमेध घाट पर यमुनाजीका स्नान होता है और सांझ को पतंगों का मेला होता है गोकर्णेश्वर के टीले से पतंग उड़ाई जाती हैं ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६ जेठ सुदी १५ जल-यात्रा नगर के प्रधान लोग ठाकुर जी के स्नान के लिये चांदी के बरतनों में जल भरके लाते हैं॥

आषाढ़

७ अषाढ सुदी २--रथयात्रा।

८ अषाढ सुदी ११--मथुरा वृन्दाबन की परिक्रमा जिसको युगल जोड़ी की परिक्रमा कहते हैं--लोग प्रातः काल बिश्रान्त घाट से या और किसी घाट से चलते हैं--और सरस्वती कुंड के पास होकर दिल्ली की सड़क पर एक मील चलेजाते हैं।बहुत से तो वहां से सीधे वृन्दाबन को निकल जाते हैं--और शेष सब छटीकरा में गरुड़ गोबिन्द के मंदिर पर पहुंचते हैं यह परिक्रमा बीस कोस की है और सब परिक्रमाओं से बड़ी है। उसी दिन सब मथुरा को लौट आते हैं--और जो परिक्रमा पूरी नहीं कर सके उनका फल मारा जाता है॥

९ अषाढ़ सुदी १५ व्यासपूनों--प्रातःकाल गुरुकी पूजा होती है सांझको मल्लयुद्ध अर्थात् कुश्ती होती हैं और पंडित लोग टीलों पर या घरकी छत्तों पर पवन परीक्षा के लियें चढ़ जाते हैं जिस से उनको वर्षा और सम्वत् का हाल मालूम होजाता है।

श्रावण

श्रावण शुक्ला में १५ दिन पर्यंत हिंडोल उत्सव अति रमणीय होता है।

१० श्रावण सुदी ३--तीजका मेला--भूतेश्वर महादेव के पास मल्ल लड़ते हैं और यह बड़ा भारी रंगीला मेला होता है॥

११ श्रावण सुदी ५--पांच तीर्थ का मेला प्रारंभ होता है--यात्री लोग विश्रान्त घाट से मधुवन को जाते हैं--दूसरे दिन सतोहे में सान्तन कुंड पर पहुंचते हैं और ज्ञान वावली जो कटरा के निकट है वहां जाते हैं--तीसरे दिन गोकर्णेश्वर पर पहुंचते हैं चौथे दिन छटीकरा में गरुड़ गोविंद के मन्दिर के दर्शन करते हैं और पाचवें दिन वृन्दावन के ब्रह्म कुंड पर पहुंचते हैं।

१२ श्रावणसुदी ११ मथुरा की परिक्रमा और पवित्रा धारण--अर्थात् ठाकुरजी को माला यज्ञोपवीत पहनाना।

१३ श्रावणसुदी १५ सलूनो या रक्षा बन्धन--भूतेश्वर के निकट जो बगीचे हैं उनमें मल्लों की कुश्ती होती हैं। हिंडोलों के दर्शन होते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भादों

१४ भादोंवदी ८ – जन्माष्टमी--कृष्णचंद्र का जन्म दिवस इस दिन आधीरात तक व्रत होता है।

१५ भादोंसुदी ११ – मधुवन, तालवन, कुमुदवन की विशेष यात्रा। साधारण वनयात्रा का भी इसी दिन प्रारंभ होता है - वह पन्द्रह दिन तक रहती है।

१६ भादों सुदी १४ – अनन्त चौदस इस दिन अनन्त भगवान् का व्रत होता है।

श्रावण भादो में हर वृहस्पति बार को पैराकी का मेला होता है – परन्तु सब से उत्तम उस वृहस्पति को होता है जो ठीक अनन्त-चौदस से पहिले ही पड़ती है। इस दिन घाटों पर बड़ी भारी भीड़ होती है और पैरने वाले भांति २ की विचित्र चीजों का सहारा लेकर तैरते हैं। कोई बने हुए मोर या घोड़े पर सवार दीख पड़ता है। कोई अद्भुत प्रकार की सवारी या गाड़ी बनाकर जल में अद्भुत खेल करता है कुछ आतिसबाजी भी सांझ को चलती है। इसके पीछे मेला शहर में निकलता है। सड़कों पर नाच और गाना होता जाता है।

कुआर

१७ कुवारबदी ८ – मथुरा की परिक्रमा होती है और पांच दिन तक सांझियों का मेला होता है। सांझियों में कृष्णराधा और गोपियों के चित्र बनाये जाते हैं रातभर रास होते हैं।

१८ कुवारसुदी ८ – मेघनादलीला रामलीला के मुख्य तीन दिनों में यह पहिला दिन होता है रावण का सुत मेघनाथ इस दिन माराजाता है यह रामलीला उस मैदान में होती है जो महाविद्या देवी के मन्दिर के पास है।

१९ कुवारसुदी ९ – कुंभकरण बधलीला।

२० कुवारसुदी १० – दशहरा रावणबध और रामजय, आदिमी तो बहुत इकट्ठे होते हैं।

२१ कुवारसुदी ११--भरतमिलाप जुम्मामसिजिद के नीचे सड़क पर होता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है। होलीदरवाजे से लेकर चौक तक सब बाजार भली भांति सजाया जाता है। सब सड़क और छत्तें आदमियों के मारे भर जाती हैं।

२२ क्वारसुदी १५--शरद पूर्नों—रातभर मन्दिरों में दर्शन होते हैं और मेला रहता है।

कार्तिक

२३ कार्तिकवदी ३० दिवाली दीपदान।

२४ कार्तिक १ अन्नकूट।

२५ कार्तिकसुदी २ यमद्वितीया का स्नान गोवर्द्धनमें दीपमालिका के मेला से लौटकर यात्री स्नान यमुनाजी का करते हैं--यह स्नान विश्रांतघाटपर ठीक दुपहर को होता है नगर के नर और नारी सब स्नान को आते हैं

२६ कार्तिकसुदी ७ धोवी मारन लीला यह मेला वृन्दावन दरवाजे के पास होता है कृष्णचंद महाराज ने कंस के धोवी को मारा था वही लीला यहां पर दिखाई जाती है।

२७ कार्तिकसुदी ८ गोचारन मेला सांझ के समय आगरे की सड़क पर गुपाल बाग में होता है।

२८ कार्तिकसुदी ९ अक्षय नवमी—इस दिन युगल जोड़ी की परिक्रमा होती है। स्त्री पुरुष आधीरात से उठकर परिक्रमा को जाते हैं और भोजन बनाकर साथ लेजाते हैं या किसी बाग में मंगा जाते हैं। इस परिक्रमा में बड़ा आनन्द उठता है। यह दूसरी बड़ी भारी परिक्रमा है—इसका फल बड़ा है।

१८ कार्तिक सुदी १० कंसवध का मेला रंगेश्वर महादेव पर होता है। सांझ के समय बांस और कागज का बड़ा ऊंचा कंस बना कर सड़क पर लावे हैं। कृष्ण और बलदेव घोड़े या हाथियों पर चढ़कर और फूलों की छड़ी हाथ में लेकर दर्शन देवे हैं। उनके इशारा (सूचना) करते ही चौबे दौड़ पड़ते हैं और कंस के टुकड़े २ कर डालते हैं। यह मेला फिर शहर में होकर विश्रान्त घाट पर पहुंचता है।

२९ कार्तिकसुदी ११ देवउठान इस दिन भगवान चार मास सोकर जागते हैं। इस दिवसमें भी उसी प्रकार की परिक्रमा होती है जैसी देवसोनी एकादशी को आषाढ़ में होती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माघ

३० माघसुदी ५ बसंत पंचमी।

फालगुन

३१ फालगुन सुदी १५ होली।

चैत्र

३२ चैत्र वदी १ केशवदेवजी के मन्दिर पर मेला होता है।
३३ चैत्र वदी ५ फूलडोल का मेला।

वृन्दावन

पहलें वृन्दावन में वृन्दा देवी का मंदिर था, अब उसका चिन्ह भी देखने को नहीं है। यह मंदिर सेवाकुंज में था—यह कुंज रासमंडल के निकट है—इसमें नाना प्रकार के वृक्ष हैं, चारों ओर पक्की दीवार बनीहुई है—एक कुंड भी इसमें है। यह सब स्थान गुसाईयों के बनाये हुए हैं। सन् १५७० में अकबर बादशाह ने गुसाँई महात्माओं की प्रशंसा सुन कर दर्शन का बिचार किया। निधुवन में लोग बादशाह की आंख बंद करा कर लेगये। वहां जाकर ऐसी बिचित्र माया देखी कि वह चकित रहगये और बरबस उनको यह मानना पड़ा कि यह बड़ी पावन भूमि है। जो राजा उनके साथ थे, उन्होंने उस समय बहुत से मंदिर बनाने की आज्ञा बादशाह से लेली और प्रथम ही प्रथम चार मंदिर बनाये गये कि जो अब बहुत पुराने और जीर्ण होगये हैं। उन चार मंदिरों के ये नाम हैं—१ गोविंद देव २ गोपीनाथ ३ युगल किशोर ४ मदनमोहन ॥

गोबिंद देवजी का मंदिर इनमें सब से बड़ा है—और बहुत बड़े उत्तम देव मंदिरों की गणना में है। यह मंदिर १०० फुट लंबा और उतना ही चौड़ा है—इस मंदिर की बनावट प्राचीन रीति की अति उत्तम और बिचित्र है। इस में गिरधारी जी की मूर्त्ति है और उसके पास चैतन्य प्रभु और नित्यानंद की मूर्त्तियाँ हैं। सम्बत् १६४७ में अर्थात् १५९० ईसवी में रूप और सनातन गुरु ने अपने प्रबंध से बनाया था। इस मंदिर में एक पत्थर लगा हुआ है, उस पर सन् सम्बत् और बनाने वाले का नाम आदि खुदा हुआ है। यह मंदिर श्रीमहाराजा भगवान्दास के पुत्र श्रीमहाराजा मानसिंह का बनाया हुआ है। महाराजा मान सिंह जयपुर के राजा थे और राव पृथ्वीसिंह के पोते थे। औरंगजेब

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बादशाह की चढ़ाई के भय से इस मंदिर में जो ठाकुरजी की मूर्त्ति थी वह जयपुर पहुंचादी गयी थी और गुसाईयों को बंधान और जागीर देदी थी उन गुसाईयों के घराने के लोग अब विद्यमान हैं॥

इस मंदिर की ऐसी दुर्दशा होगयी थी कि जहांतहां से टूट फूट कर गिरता जाता था। वृक्ष उगते आते थे, निदान गिर कर नष्ट होनेको ही था कि वास्तुविद्या के परम प्रेमी श्रीयुत मिस्तर ग्रूस साहब मथुरा में इस मंदिर के भाग्य से कलक्टर होकर गये। उन्होंने सर विलिम स्योर लफ्टनंट गवर्नर से निवेदन कर के इसके जीर्णोद्धार का प्रबन्ध किया जयपुर के महाराजा को लिखा गया। उन्होंने अपना कुल-मंदिर मान ५०००) रुपे मरम्मत के लिये दिये। सन् १८७३ ईसवीं। इसकी मरम्मत होने लगी और कुछ काल में भलीभांति जीर्णोद्धार होगया। दक्षिण की ओर इसके चौक के निकट रानी रंभावती की छतरी है। (रंभावती) राना अमर सिंह के पुत्र राजा भीम की रानी थी। यह छतरी सम्बत् १६८३ में मंदिर के बनने से ४० वर्ष पीछें बनी थी। जब इस मंदिर की मरम्मत हुई तब यह छतरी फिर तोड़ कर बनायी गयी। इस मन्दिर के जीर्णोद्धार में ३८३६५ रुपे खर्च हुए॥

गोबिंद देव जी के मन्दिर में १७५०० रुपे सालाना आमदनी है--१३००० रुपे के अनुमान चढ़ावे में आता है। एक गांव अलवर के राज में है--दूसरा जयपुर के राज में है, वृन्दावन के शहर में मकानों की आमदनी है--और राधा-बाग है। इस मन्दिर की ज़मीन का रकवा बहुत वड़े फेर में था, परन्तु बराबर जमीन दबती गयी और घेरा कम होता गया, यहां तक कि अभी चरखारी के राजा जयसिंह देवने १५००० रुपे लगाकर एक मन्दिर बनबिहारी जी का बनवा दिया है--सेठ का मंदिर भी इसी गोबिंद देवजी के मंदिर की भूमि पर बना है। उसके १०२ रुपे साल अभी मन्दिर के भन्डार को सेठजी से मिलते ते हैं।

२ दूसरा मन्दिर मदन मोहन जी का है। यह मन्दिर कालीमर्दन अर्थात् कालीदह घाट पर है, जहां श्रीकृष्णचन्द्र जी ने काली नाग को नाथा था--इस मन्दिर के बनने की यह कथा भक्त माल और भक्त सिंधु में लिखी है कि गोविन्द जी की मूर्त्ति रूप और सनातन को नंद गांव में पाई थी-- गऊओं के लिये खरिक बनवा रहे थे, खोदते में यह मूर्त्ति मिल गयी--(गोखिरक में से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निकरि आये तातें गोबिन्द नाम धराये) उन्होंने वृन्दावन में लाकर इस स्थान पर पधरा दिये कि जहाँ अब मन्दिर है-- उन दिनों वृन्दावन नगर नहीं बना था, बन था--रूप और सनातन पास के गावों में भिक्षा मांगने जाया करते थे। एक दिन एक चौबेने मथुरा में मदनमोहनजी की मूर्त्ति उनको देदी। उन्होंने कालीदह घाट के निकट दूसासन टीले पर लाकर पधरा दी, उस के पास एक अपनी मढ़ी बनाली और रहने लगे--घाट का नाम प्रस्कंदन घाट रख लिया--एक दिन एक मुलतान का रामदास नामी सौदागर आया। उसका प्रसिद्ध नाम कपूर था। नाव में माल भरे हुए आगरे को जा रहा था--उसकी नाव आकर कालीदहघाट पर रेती में अटक गई--और तीन दिन तक परिश्रम करने से भी नहीं निकली--तब उसने यह बिचार किया कि इस स्थान का जो देवता हो उससे सहायता लेनी चाहिये--वह नाव पर से उतर कर टीले पर गये और सनातनजी के दर्शन किये--सनातनजी ने कहा कि मदनमोहनजी की बिनती करो। बिनती करते ही नाव पानी पर तैर आई--उसने आगरे जाकर माल वेचा और बिक्री का रुपिया लाकर सनातनजी के आगे धर दिया--सनातनजी ने कहा कि इस धन से मन्दिर बना दो। उसने मन्दिर और घाट लाल पत्थरसे बनाकर ठीक कर दिया। यह मन्दिर ९७ फुट लम्बा हैं जिसमें से २० फुट में देव मन्दिर उसके आगें २० फुट जगमोहन और ५७ फुट जगमोहनके आगे मकान है। इसमें एक पत्थर लगा हुआ है जिस पर नागरी और बंगला अक्षरों में यह संस्कृत श्लोक लिखा हुआ है।

> हरइवगुरुवंशोयत्पितारामचन्द्रो । गुणमणिरिवपुत्रोयस्यराधातसंत:
>
> सकृतसुकृतराशि:श्रोगुणानंदनामा । व्यधितबिधिवदेतन्मन्दिरंनन्दसूनो:

अर्थात् इसका यह अर्थ है कि हरके समान गुरुवंशमें रामचन्द्र उत्पन्न हुए। रामचन्द्र के पुत्र राधाबसत ने यह नन्दनन्दन श्रीकृष्ण का मन्दिर बनवाया।

इस मन्दिर की आमदनी १०१०० रुपे हैं, ८०००) रुपे साल चढ़ावे के आते हैं। २१००) रुपे (देवत्तर धन) अर्थात् जागीर की आमदनी है। वृन्दावन से जैत को जो सड़क जाती है, उस पर सुनरख गाम है। इस गांव में एक बाग और रामताल इस मदनमोहनजी के मन्दिर की जायदाद है--इस मन्दिर की एक शाखा राधाकुण्ड पर है, उसका खर्च भी यहीं से उठता है। मिस्टर ग्रूस साहब कलक्टर ने इस मन्दिर की भी मरम्मत कराई थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मदनमोहनजी की प्रथम मूर्त्ति आज कल करौली में है। राजा गोपालसिंह ने कि जिनका राज सन् १७२५ ई०से १७५७ तक था,एक मंदिर भी वहां मदनमोहनजी का बनवा दिया है। उनको यह मूर्त्ति जयपुर के राजा से मिली थी। मंदिर के पुजारी बंगाली शहर मुर्शिदाबाद के रहने वाले एक राम किशोर नाम के थे। आज कल के अधिष्टाता का नाम मोहन किशोर है। उन के पास २७००० रुपे साल की जागीर है।

मदनमोहनजी के मंदिर में ठाकुरजी के सात भोग लगते हैं–इनमें दुपहर का राज भोग और रात का शयन भोग मुख्य हैं। बीच के पांच थोड़े से नैवद्य (मिष्टान्न)से लगाये जाते हैं, और उनके ये नाम हैं १)मंगल आरती—सूर्योदय से पहिले २)धूप–८ बजे प्रातःकाल ३)शृंगार ११ बजे दिन के ४)धूप ३ बजे सांझ को ५)संध्या-आरती दिन छिपे।

इस मदनमोहनजी के मंदिर के सम्बन्ध में यह कथा भक्त माल में लिखी है कि सूरदास एक बैष्णव थे और अकबर बादशाह के राज में संडोला के सूबा थे। उन्होंने भक्त जनों के भोजन कराने में सब सरकारी रुपिया तहसील करके खर्च कर दिया और खजाने की सिंदूकों में पत्थर भर कर भेज दिये। यद्यपि टोडरमल बादशाह के मंत्री हिन्दू थे,परन्तु सूरदास की यह करतूति उन पर न सही गयी और क्रुद्ध होकर सूरदास को बंदीगृह में डाल दिया सूरदासजी मदनमोहनजी के भक्त थे, उन्होंने बादशाह को परचा दिखा कर सूरदासजी को बंदीगृह से छुड़ा लिया।

२ गोपीनाथजी का मन्दिर।

यह प्राचीन मन्दिरों में से एक है। सुनते हैं कि रायसीलजी ने बनाया था। रायसीलजी कछवाये के ठाकुर थे और शेखा-वाट नामी शाख में थे—और कुल के जन्म दाता पुरसे के नाती थे। अकबर बादशाह के राज में इन्हीं ने अफगानिस्तान की लड़ाई लड़ी थी,काबुल में युद्ध करने गये थे। बादशाह ने प्रसन्न होकर दरबारी का खिताब और १२५० सवार रखने का अधिकार दिया था।इनका बनाया हुआ गोपीनाथजी का यह मंदिर उसी ढंगका बना हुआ है जैसा मदनमोहनजी का है।यह मंदिर बहुत ही जीर्ण होगया है, कंगूरे मीनार,छत सब गिरते जाते हैं–जो कुछ गिरने से बाकी था वह चोट में पड़ता जाता था। परन्तु मिस्टर ग्रूस साहब कलक्टर ने इसको भी कुछ सुधरवा दि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दिया। इस प्राचीन मंदिर के उत्तर में नवीन मंदिर गोपीनाथजी का बन गया है। इस नवीन मन्दिर को सन् १८२१ में बाबू नंदकुमार बोस एक बंगाली कायस्थ ने बनवाया था और नवीन मन्दिर मदनमोहनजी का, नवीन मन्दिर गोविन्ददेवजी का भी इन्हीं नंदकुमार बाबू का बनवाया हुआ है। इस मंदिर में ३०००) रुपे साल का चढ़ावा आजाता है १२०० रुपे साल की जागीर और है। सेठजी का बाग जहां पर ब्रह्मोत्सव का पट-मन्दिर बनाया जाता है, गोपीनाथजी के मंदिर का है। सेठजी ने उसको मोल ले लिया है, परन्तु १८) रुपे साल लगान के अब भी देने पड़ते हैं।

३ मंदिर युगल किशोर।

यह मंदिर वृन्दावन नगर के नीचे भाग में केशीघाट पर है। जहांगीर बादशाह की अमलदारी में सम्वत् १६८४ अर्थात् १६२७ ईस्वी में बनाया गया था। ननकरन एक चौहान ठाकुर था जिसने इसको बनवाया था। इस मंदिर का जगमोहन २५ फुट वर्गात्मक है। मुख दरवाजा पूर्वी दिशा को है परन्तु छोटी २ खिड़की उत्तर दक्षिण में भी हैं। यह मंदिर अच्छी हालत में नहीं है, परन्तु युगलकिशोरजी की मूर्ति जो इसमें है वह दर्शनीय है। ऐसी सुंदर मनोहर बाल-मूर्ति व्रज भर में और कहीं नहीं है।

५ राधावल्लभ का मन्दिर॥

यह मंदिर भी कुछ २ पुराने समय का है—परन्तु बहुत सुन्दर बना हुआ है। भीतर का गुम्मज ६३ फुट लंबा और २० फुट चौड़ा है—इस मन्दिर में जो ठाकुरजो का स्थान था उसको औरंगजेब बादशाह ने तोड़ कर गिरादिया था। उस पर अब एक मकान बनाया गया है जिस में ठाकुर जी की रसोई होती है। दक्षिण की ओर अब वहां पर एक नवीन मन्दिर बन गया है॥

यही पांच मन्दिर हैं कि जो वृन्दावन में प्राचीन गिने जाते हैं। छोटे २ मन्दिर और भी पुराने हैं परन्तु उन में कुछ बनावट की उत्तमता नहीं है, इसलिये प्रसिद्ध कम हैं॥

६ मदन मोहन के निकट एक मन्दिर शृंगारवट के नाम से है—इसकी सालाना आमदनी १२५०० रुपे हैं तीन पुजारी चार २ महीने सेवा करते हैं और आमदनी भोग लगाते हैं। यमुना के उस पार जहांगीरपुर गाम बेलबन समेत इसी मन्दिर का है॥

७ राधा-दामोदर—यह इस कारण प्रसिद्ध है कि इस मन्दिर के बनाने वाले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

श्री "जीव" की श्रीजीव के दोनों चचा रूप और सनातन की इसमें समाधि हैं। इनकी सालग्रह का एक मेला श्रावण में होता है-कि जिस में समूह के समूह बंगाली दर्शन, यात्रा को आते हैं और कुछ भेंट चढ़ाते हैं। राधा दामोदर के महंत से गोविन्ददेव के पुजारी से सन् १८७५ में इस चढ़ावे के बांट पर बड़ा झगड़ा बखेड़ा हुआ था ॥

ये सात मंदिर तो प्राचीन हैं और सब नवीन हैं जिनका आगे वर्णन होगा। नये मंदिरों में पांच बहुत प्रसिद्ध और दर्शनीय हैं ॥

१ कृष्ण-चन्द्रमा अर्थात् लाला बाबू का मंदिर। नवीन पांच मन्दिरों में सब से पहले यह मन्दिर बना है। इस मंदिर को एक बंगाली कायथ कृष्णचन्द्र सिंह ने सन् १८१० ईसवी में २५ लाख रुपे लगाकर बनाया था। कृष्णचन्द्र सिंह लाला बाबू के नाम से प्रसिद्ध थे। यह मंदिर एक बड़े बाग के भीतर बना हुआ है। बागकी पक्की दीवारें ऊंची २ बनी हुई हैं। दोनों तरफ दो दरवाजे बड़े २ हैं। कोई सुंदरताई दीवारों में नहीं है परन्तु, मजबूत पक्की चिनाई अच्छी हैं। यह मंदिर चौकोर है और लम्बाई में १६० फुट है। पत्थर बहुत उत्तम लगा है, काम भी अति उत्तम बना है। दो शिखर ऊपर लगे हुए हैं और ऐसे सुंदर, चिकने हैं कि मेह और आंधी से बिलकुल नहीं बिगड़ते हैं ॥

लाला बाबू मुरलीमोहन सिंह के कुल में हैं। मुरली मोहन सिंह के पिता हरकृष्ण सिंह कांदी जिला मुर्शिदा बाद के रहने वाले थे और बहुत धन बान थे। उनके पुत्र बिहारीलाल सिंह हुए कि जिनके राधागोविंद, गंगागोविंद, और राधाचरन तीन पुत्र थे। इनमें से राधाचरन अपना हिस्सा लेकर कुटुम्ब से अलग होगये। राधागोबिंद मुर्शिदा बाद के नवाब अलीवर्दीखां और सिराजुद्दौला के यहां नौकर होगये और बड़ी पदवी पर पहुंचे--उन्होंने धर्मशाला बनाई और राधावल्लभ का मंदिर बनाया कि जो अबतक विद्यमान है। उनके सन्तान नहीं हुई। गंगा गोबिंद उनके माल के मालिक हुए। गंगा गोविंद ने भी बहुत सी धर्म-शाला और चार मंदिर नदिया के जिले में बनाये। मंदिर तो नदी में बह कर नष्ट होगये परन्तु देवताओं की मूर्ति कांदी में पधरा दीगयीं। ये बहुतसे संस्कृत स्कूलों को नदिया शान्ति पुर में चलाते रहे और लाखों रुपे लगाकर हर साल अपने पिता का श्राद्ध करते रहे। गंगागोविंद के बेटे प्राणकृष्ण सिंह ने अपने पुरखों के विभव को और बढ़ाया और बहुत धन संचय किया। प्राण कृष्ण सिंह के कृष्ण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चन्द्र सिंह हुये। ये पहले वर्द्धमान में रहे, फिर उड़ीसा गये और ३० बर्ष की उमर में व्रजभूमि में आबसे—व्रजमें आकर उन्हों ने यह कृष्ण-चन्द्रमाजी का मन्दिर वनाया और मन्दिर के साथ एक धर्मशाला बनाई कि जिस में अतिथि और यात्रियों को भोजन मिलता है। और मन्दिर और धर्मशाला के चैन का २२००० साल का खर्च है। उन्होंने राधा कुंड पर एक लाख रुपे लगा कर पत्थर के घाट बनाये-चालीस बर्ष की उमर में वह दुनिया के धंधे छोड़कर बैरागी होगये और दो बर्ष तक व्रजके वन और उपवनों में घूमते रहे और भिक्षा मांग कर उदर भरते रहे। व्रज वासियों के घर के टुकड़े मांग कर लाते थे और जमुना जी में धो २ कर खाते थे। एक दिन अकस्मात् गोवर्द्धन में घोड़े ने उनके लात मारी। उससे वह मरगये। इनके संग २ सेठ लक्ष्मीचन्द के पिता सेठ मनीराम ने भी वैराग धारण कर के बहुत भ्रमण किया॥

लालाबाबू संसारी वनकर दशबर्ष व्रज मंडल में रहे, परन्तु इतने ही समय में उन्होंने वह सब गाम और स्थान मोल ले लिये कि जिन में प्रसिद्ध तीर्थयात्रा के स्थान थे—जिससे मालूम होता है कि वह संसारी कामों में बहुत चतुर थे पन्द्रह गाम जिले मथुरा में उन्होंने मोल लिये कि जिनमे नंदगाम वरसाना संकेत और करहला भी हैं—और ७२ गाम अलीगढ़ और बुलंदशहर में राजा बीरसिंह चौहान से लिये, परन्तु उनके मरने के बाद १२ नीलाम होगये—अब इस कुल में बाबू इन्द्रचन्द्र हैं जो कुल के बिभव को वंगाल में भोग रहे हैं—३८०८९२ रुपे की जायदाद तो अकेले मथुरा के जिले में है॥

२ श्री रंगजी का मंदिर॥

यह मंदिर सेठ लक्ष्मीचन्द के भाई—सेठ गोविन्ददास राधाकृष्ण का बनाया हुआ है--और ठाकुर रंगजी इसमें बिराजमान हैं—श्रीसम्प्रदाय के मूलपुरुष श्री रामानुज का रक्खा हुआ नाम यह विष्णु भगवान् का है। यह मन्दिर दखिनी की रीति का बना हुआ है और सेठ के गुरु स्वामी रंगाचार्य्य के बनाये हुये नकशे के अनुसार तैयार हुआ है॥

इस मन्दिर के बनने का प्रारंभ सन् १८४५ में हुआ और सन् १८५१ में सम्पूर्ण बन कर ठीक होगया। इसकी लागात ४५ लाख रुपे की है—बाहर की दीवार लम्बाई में ७७३ फुट और चौड़ाई में ४४० फुट है। भीतर मन्दिर बना हुआ है और एक बाग और ताल भी है। मन्दिर के दरवाजे पर बड़े

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

ऊंचे बुरज अर्थात् गोपुर हैं, और उन पर अनेक देवताओं की मूर्ति बनी हुई हैं। आगे मन्दिर के ध्वजस्तंभ है जिसको लोग जैतखंभ कहते हैं। यह तांबे का है और उस पर सोने का पानी फिरा हुआ है। यह खंभ धरती से ऊपर ६० फुट ऊंचा है और २० फुट नीचें गड़ा हुआ है इस खंभे की लागत १०००० रुपे हैं। पश्चिम की ओर जो मन्दिर का सदर दरवाजा है उसपर एक बुर्ज ९३ फुट ऊंचा बना हुआ है। दरवाजे के बाहर एक मकान में नारायण का रथ रक्खा रहता है। यह रथ लकड़ी का बना हुआ है और एक मन्दिर के समान बहुत ऊंचा है। वर्ष भर में एक बार चैत्र में ब्रह्मोत्सव अर्थात् रथ यात्रा पर निकलता है। यह रथ यात्रा का मेला दस दिन तक होता है और ठाकुरजी नित नयी सवारी में सेठजी के बाग तक जाते हैं। जो मंदिर से ६९० गज दूर है--और ठाकुरजी की सवारी के साथ--मसाल होती है--गाना होता जाता है--धूप होती जाती है। और राजा भरतपुर की पलटन और बाजा भी संग रहता है। जिस दिन रथ की सवारी होती है, उस दिन अष्टधातु के ठाकुर रथ में विराजमान होते हैं। और ब्राह्मण चौर करते जाते हैं और सेठजी और उनका परिकर रथ के रस्सों से हाथ लगाते जाते हैं और यात्री लोग रथ खींचते जाते हैं। पांच छै घंटे में फिर ठाकुरजी बाग में होकर मंदिर को लौट आते हैं, दूसरे दिन सांझ को सवारी निकलती है और बड़ी बढ़िया आतिस बाजी चलती है और भीड़ भारी होती है। और दिन रथ नहीं जाता, ठाकुर जी की सवारी पुन्य कोठी-सिंहासन-कदम-कल्पवृक्ष-सूर्य-चन्द्रमा-गरुड़-हनुमान-शेष-हाथी-घोड़ा-सिंह-हंस-या-सरभ पर होती है। इस मेले में अनुमान से ५०००) रुपे खर्च होते हैं कुल खर्च मन्दिर का ५७००० रुपे साल है जिस में से तीस हजार रुपे भोग में उठते हैं। पांच सौ ५०० श्री वैष्णव नित उत्तम२ भोग लगाते हैं और दस बजे तक जो कोई अतिथि आता है, उसको थोड़ा आटा मिल जाता है। इस रंगजी के मन्दिर से ३३ गाम लगे हुए हैं कि जिनकी सालाना आमदनी ११७००० की है ६४००० रुपे मालगुजारी में जाते हैं। तेरह गांम जिले मथुरा में हैं, चौथाई वृन्दावन है, २० गांम जिले आगरे में हैं--दो हजार रुपे साल का चढ़ावा आजाता है, ११८०० रुपे सूद की आमदनी है। इस मन्दिर के अधिष्टाता स्वामी रङ्गाचार्य्य सेठजी के गुरू थे, उन्होंने १८६८ ईसवी में अपने पुत्र श्रीनिवासाचार्य्य के कुचलनों से अप्रसन्न होकर मंदिर का सब धन एक कमेटी के सुपुर्द

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

करा दिया। इस कमेटी में छः मेम्बर हैं, परन्तु सब प्रबन्ध के करने वाले परम उद्योगी सेठ नारायण दास थे। मंदिर की २० लाख रुपे की जायदाद है, उसमें इनका ही नाम पड़ा था। इनके प्रबन्ध में मंदिर का कोई बन्धान बंद नहीं हुआ और खर्च थोड़ा कम कर दिया गया था, आमदनी बढ़ती जाती थी और जायदाद मंदिर की सुधरती जाती थी, सेठ नारायण दास जी हमारी इस ब्रज भूमि के रत्न थे॥

सेठ नारायणदासजी मि० आश्विन शुदी ९ सम्वत् १९४३ में परलोकवासी हुए। उनके पीछे इस मंदिर का प्रबन्ध उनके छोटे भाई सेठ श्री निवासदासजी करते रहे, परन्तु खेद का बिषय है कि सेठ श्री निवासदासजी भी थोड़े काल प्रबन्ध करके स्वर्गवासी हुए जो गुणों में उन्हीं के समान और विद्वान् थे।

राजा मानसिंह जयपुर वाले ने तीन गाम महावन के और दो जलेसर के इस मंदिर की भेंट किये थे।

३ छोटे राधारमन का मंदिर—अर्थात् साहजी का मंदिर--सेठजी के मंदिर से बहुत पीछे यह मंदिर बना है। इसको लखनऊ के साह कुन्दनलाल ने बनवाया है और लखनऊ के मकानों की धज उसमें रक्खी है। सदर दरवाजा तो बहुत बड़ा और सुंदर है, परन्तु भीतर मंदिर में स्त्री पुरुषों की मूर्त्ति ऐसी बनाई हैं कि जिनको देखकर देव-मंदिर में जाने के समय जो ध्यान जमता है वह शिथिल हो जाता है। यह मंदिर बहुत उत्तम बना हुआ है, सब वस्तु बहुमूल्य की इसमें लगाई गयी हैं--संगमरमर के इकेहरे खम्भे बहुत सुंदर मालूम होते हैं, एक २ खंभा पूरा एक पत्थर का बना हुआ है। इस मंदिर के बनाने में दस लाख रुपे खर्च हुए हैं। संगमरमर का ही फर्श है। बरामदे में फर्श पर साह कुंदनलाल और उनके कुटुम्ब के लोगों की तसबीर काढी हुई हैं, और वह चित्र इस हेतु फर्श में बनाये गये हैं कि जो यात्री दर्शन को आवेंगे, उनके चरणों की रज शरीर को पवित्र करती रहेगी। शाहजी बड़े भगवत् भक्त थे। उनके कुल में अब तक परम भक्ति चली जाती है। उनके इस मंदिर में पहिले बड़े रासोत्सव होते थे। अब रास की रुचि जाती रही है, परन्तु शाहजी बड़े प्रेमी थे। उन्होंने बड़ी सरस कविता कही है--जिसके पद पद में प्रेम रस झलकता है।

४ राधाइन्द्र किशोर का मंदिर—यह टिकारी वारी का मंदिर प्रसिद्ध है। गया के निकट टिकारी बस्ती है, वहां के रईस हितराम ब्राह्मण की बिधवा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

रानी इन्द्रजीत कुमारि का बनाया हुआ है। यह सन् १८७१ में बनकर तैयार हुआ है। यह मंदिर ७० फुट वर्गात्मक चोकोर है, इसके शिखर पर सुनहरी काम का एक कलसा चढ़ा हुआ है जिसकी लागत ५००० रुपे हैं। इस मंदिर की कुरसी ऊंची है और देखने में भी सुंदर है। तीन लाख रुपे लगा कर रानी ने इसको बनवाया है।

५ राधा-गुपाल का मंदिर—इस मंदिर को महाराजा सिंधिया (जोयाजी महाराज)ने अपने गुरु गिरधारीदासजी प्रसिद्ध ब्रह्मचारीजी के उपदेशसे बनवाया था। यह बड़ा मनोहर मंदिर है-लागत इसकी ४ लाख रुपे है।सन्१८६० में इसकी प्रतिष्ठा हुई थी।उक्त ब्रह्मचारीजी के अधिकार में यह मंदिर है।ब्राह्मणों का बंधान भी इसमें नियत है--इस मन्दिर के भीतर एक और ब्रह्मचारीजी महाराज का सजा हुआ कामरा ऐसा शोभायमान दीख पड़ता है कि राज भवन भी उस के आगे फीका है। सुनते तो यह हैं कि महाराजा ग्वालियर ने अपने निवास के लिये यह मकान सजा रक्खा था। परन्तु अब तो सदा ब्रह्मचारीजी महाराज के काम में आता रहा है। इसकी आमदनी महाराज सिंधिया की दी हुई १२००० साल माफी है।

इस मन्दिरसे आगे गोपेश्वर महादेवजी का मन्दिर है, वह नवीन बना हुआ है। यहां व्रज की रूपवती मालिनें फूलों के हार बनाये बैठी रहती हैं, और यात्रियों को लुभा २ कर उनके हाथ वेचती जाती हैं। ये गोपेश्वर महादेव व्रज के मुख्य महादेवों में से हैं। और सब प्रकार दर्शनीय हैं।

इनके सिवाय वृन्दावन में और भी बहुत से छोटे२मंदिर हैं- जिनकीसंख्या पाँच हजार सुनी जाती है।

वृन्दावन में रहने के मकानों में कोई प्राचीन और दर्शनीय नहीं है—एक सवाई जयसिंह का घेरा अवश्य है। इसके सिवाय डेढ मील तक युमना के घाट बहुत सुंदर बने हुए हैं, परन्तु वैरागियों ने रोटी कर२के जहां तहां से बिगाड़ दिये हैं।सब से बड़ा घाट कालीमर्दन है। जिस पर एक बहुत बड़ा कदम्ब का वृक्ष है। कृष्ण महाराज काली नाग नाथने के लिये यहां यमुना में कूदे थे। सब से नीचा दूसरी तरफ केशीघाट है। जिस पर कृष्णने केशी दैत्य को मारा था। इसके पास रानी किशोरी और रानी लक्ष्मी की कुंजे हैं। ये दोनों भरतपुर के राजा रनजीतसिंह और रनधीरसिंह की रानी थीं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीसरी कुंज धीरसमीरके मंदिरके पास ठाकुर बदनसिंह के पिता सूरजमल महाराजा भरतपुर ने बनवाई थी। सब से सुंदर गंगा--मोहन--कुंज है। यह सूरजमल की रानी गंगा की बनवाई हुई है।

वृन्दावन के उत्सव मेले और त्योहार

चैत्र सुदी

१ चैत सुदी ८ गनगौरका मेला – गनपति और गौरी की पूजा॥

२ चैतसुदी ९---राम नौमी---रामजन्म का उत्सव॥

३ चैतसुदी ११---फूलडोल का मेला॥

वैशाख

४ वैशाखसुदी ३---अक्षय तीज इस दिन बिहारी जी के मन्दिर में लोग जाते हैं। बिहारी जी के चरणों के दर्शन इस दिवस होते हैं--और मन्दिरों में ठाकुरजी की मूर्तियों को वस्त्र नहीं पहराये जाते, चन्दन का लेप होता है। इस दिन केवल ककरी का और सत्तू का भोग लगता है॥

५ वैशाख सुदी ९--जानकी-नवमी सीता जी का जन्मोत्सव अक्रूर घाट पर होता है॥

६ वैशाख सुदी १०—रासमंडल पर हितजी का उत्सव, गुसांई हरिवंश की सालग्रह का मेला होता है॥

७ बैशाख सुदी १४ नरसिंह अवतार॥

जेठ

८ जेठ वदी २--वनविहार की परिक्रमा यह परिक्रमा पांच छः मील की होती है--जिसको जहां सुभीता होता है वहांसे चल देता है॥

९ जेठ वदी ५---बनविहार परिक्रमा--यह रातको होती है॥

१० जेठ बदी ११-रासमंडल॥

११ जेठ सुदी ५---जल यात्रा॥

१२ जेठ सुदी १५--गजग्राह का मेला--सेठजी के मन्दिर के पीछे जो तालाव है, उस में गजग्राह की लड़ाई दिखाई जाती है॥

आषाढ

१३ आषाढ सुदी २-रथयात्रा--इसदिन ठाकुरजी का भोग आम, जामन और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

चना का बनता है--ज्ञान-गुदरी में ठाकुरों के रथ इकट्ठे होते हैं।

१४ अषाढ सुदी १५---मदन मोहन के मन्दिर के पास जो मैदान है उसमें धौ ओ धौओ का मेला होता है और पवन परीक्षा होती है ॥

श्रावण

१५ श्रावण बदी ५ --राधा रमण जी की धौओ २ का मेला--गुसांई गुपालभट्ट जी इस मन्दिर के बनाने वाले थे उनका शोक प्रकट किया जाता है ॥

१६ श्रावण बदी ८ लोकनाथ गुसांई गोकुलानन्द के शोक का मेला होता है॥

१७ श्रावण सुदी ३--हिंडोला या झूलन यात्रा ॥

१८ श्रावण सुदी ९ ब्रह्मकुंड का मेला ॥

१९ श्रावण सुदी ११ पवित्रा-धारण ॥

२० श्रावण सुदी १५ ज्ञान गुदरी का मेला ॥

भादों

२१ भादों बदी ८ जन्माष्टमी ॥

२२ भादों बदी ९--चिकने बांसपर चढ़ने का मेला। यह बांस रंगजी के मन्दिर के बाहर गाड़ा जाता है और इस पर एक धोती, एक लोटा, पांच सेर मिठाई और २५) रुपे रखदिये जाते हैं। जो कोई चढ़ जाता है, वह ये सब चीजें पाता है। दुपहर पीछे यह मेला होता है। सांझ को शृंगारवट पर मन्दोत्सव होता है और रातभर नांच और गाना होता रहता है।

२३ भादों सुदी ८--राधाष्टमी राधा जी की सालग्रह का मेला, और इसीदिन मौनी दास की टट्टी में एक बड़ा भारी मेला होता है।

२४ भादों सुदी ११, जलझोलानी मेला या करवटनी – विष्णु भगवान् को चार महीने की निद्रा में करवट लिवाया जाता है लोग यमुनाजीमें तैरते हैं ॥

कुआर

२५ कुवार बदी ११ सांझी का मेला जो पांच दिन तक रहता है, और ब्रह्मकुंड पर भी एक मेला होता है ॥

२६ कुवार सुदी १ ज्ञानगुदरी में दान लीला का मेला होता है और कल्पवृक्ष का मेला भी इसी दिन होता है ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२७ कुवार सुदी १० दशहरा—लंका बिजय का मेला।

२८ कुवार सुदी ११ परिक्रमा का मेला।

कार्तिक

२९ कार्तिक वदी ३० दीपोत्सव।

३० कार्तिक सुदी १ अन्नकूट।

३१ कार्तिक सुदी ८ परिक्रमा और गोचारन।

३२ कार्तिक सुदी १२ दावानल का मेला।

३३ कार्तिक सुदी १३ केशीदानव के बध की लीला।

३४ कार्तिक सुदी १४ कालीमर्दन घाट पर, नागलीला और नाथू का मेला

३५ कार्तिक सुदी १५ भतरोंड का मेला

अगहन

३६ अगहन वदी १ व्याहले का मेला रास मंडल और चैन घाट पर व्याह की लीला।

३७ अगहन वदी ३ रामलीला।

३८ अगहन सुदी ५ बिहारी जन्मोत्सव और भरत-मिलाप।

३९ अगहन सुदी ११ दाऊजी का मेला।

पूस

४० पूस सुदी ११ से माघवदी ५ तक धनुर्मासोत्सव। यह सेठके मंदिर में होता है—वैकुंठ दरवाजे होकर ठाकुर जी की सवारी जाती है। इस धन की संक्रान्त में महीने भर राधा विल्लभ के मंदिर में खिचड़ी बंटती है।

माघ

४१ माघ सुदी ५ वसन्तोत्सव।

फाल्गुन

४२ फागुन वदी ११ मान सरोवर का मेला।

४३ फागुन सुदी ११ फूल-डोल।

४४ फागुन सुदी १५ होली।

चैत्रवदी

४५ चैत वदी १ धुलेंडी और डोल यात्रा।

४६ चैत वदी ५ काली दहन और फूल डोल।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

४२ ब्रह्मोत्सव सेठ जी के मंदिर में चैत वदी २ से दसदिन तक।

वृन्दावन में यमुना घाट

नाम घाट	नाम बनाने वालेका
१ मदन टेर घाट	मोती लाल
२ राम गोल घाट	बिहारी जी के गुसांई
३ कालीदह घाट	हुल्कार राव
४ गोपाल घाट	करौली के मदन पाल राजा।
५ नाभा वाला घाट	हीरा सिंह राजा नाभा।
६ प्रस्कंदन घाट	मदन मोहन जी के गुसांई।
७ सूरज घाट	
८ कोरिया घाट	कोल के गुसांई लोगोंके नाम से प्रसिद्ध।
९ युगल घाट	ठाकुर हरी दास गोविंद दास।
१० धूनर घाट	
११ नया घाट	गुसांई भजन लाल
१२ श्रीजी घाट	राजा जयपुर
१३ बिहारी घाट	मायाराम दखिनी
१४ धूरावार घाट	राजा रंधीर सिंह धूरा
१५ नागरी दास घाट	
१६ भीम घाट	राजा कोटा
१७ अंबेर घाट	राजा मान जयपुर
१८ टिहरीवाला घाट	राजा टिहरी
१९ इमला घाट	
२० वर्द्धवान घाट	राजा वर्द्धवान
२१ वर वार घाट	
२२ रानावत घाट	राना उदयपुर
२३ शृंगार घाट	गुसांई शृंगार वट
२४ गंगा मोहन घाट	गंगा रानी सूरजमल भरतपुर वाले की
२५ गोविंद घाट	जयपुर के राजा मान
२६ हिम्मत बहादुर घाट	हिम्मत बहादुर गुसांई

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२७	चोर घाट	याचेंन घाट मल्हाराव हुल्कर
२८	हनुमान घाट	जयपुर के सवाई जयसिंह
२९	भौंरा घाट	
३०	किशोरीरानी घाट	भरतपुर के राजा सूरजमल की रानी
३१	पंडावाला घाट	लखनऊ के चौधरी जगन्नाथ
३२	केशी घाट	रानी लक्ष्मी भरतपुर वाली

वृन्दावन के महल्ले और मुख्य स्थान

१ ज्ञान गुदरी
२ गोपेश्वर महादेव
३ बंसी बट
४ बाग गोपीनाथ
५ बाजार गोपीनाथ
६ ब्रह्म कुंड
७ राधा निवास
८ केशी घाट
९ राधा रमन
१० निधि बन
११ पथर पुरा
१२ नगर गोपीनाथ
१३ छेरा गोपीनाथ
१४ नगर गोपाल
१५ चीर-घाट
१६ मंडी दरवाजा
१७ गोविंद जी का घेरा
१८ नगर गोविंद जी
१९ गली टकसार
२० रामजी द्वारा
२१ बाजार कंठीबारा
२२ सेवा कुंज
२३ कुंज गली
२४ व्यास का घेरा
२५ शृंगार-बट
२६ रास मंडल
२७ किशोरी पुरा
२८ धोबी बारी गली
२९ रंगीलाल की गली
३० सूखन माता गली
३१ पुराना शहर
३२ लरिया वारी गली
३३ गवदुआ की गली
३४ गोबर्द्धन दरबाजा
३५ अहीर पाड़ा
३६ दुसायन
३७ महल्ला बड़ बाला
३८ घेरा मदन मोहन
३९ बिहारी पुरा
४० पुरोहित वारा
४१ मनी पाड़ा
४२ गौतम पाड़ा
४३ अठ खंभा
४४ गोबिन्द बाग
४५ लोई बाजार
४६ रेतिया बाजार
४७ वनखंडी महादेव
४८ छीपो की गली
४९ राय बारी गली
५० बुंदेले का बाग
५१ मथुरा दरवाजा
५२ घेरा सवाई जयसिंह
५३ धीर समीर
५४ मौनी दास की टट्टी
५५ गहवर बन
५६ गोबिन्द कुंड
५७ राधा बाग

महाबन

महावन मथुरा से पांच छः मील है -- यमुना की पार बसती है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

और गोकुल से एक मील आगे है। पुराणों में जो गोकुल के नामसे कथा लिखी हैं, वे सब उसस्थान की हैं जहां महावन है।गोकुल गामतो वल्लभकुलने प्रकट किया है। महाबन के मंदिर सब पुराने बने हुए हैं।देखनेमें सुन्दरनहीं हैं। सबसे उत्तम मथुरा नाथजीका मंदिर है।उसपर शिखरभीहै परन्तुदेखनेमें मनोहर नहीं है।खाली ईंट और चूना का बना हुआहै। पहिले जो पुजारी रहताथा, उसका सिंधिया के यहांसे २) रोजका बंधान था। परन्तु अब बंद होगया।यहां दो मंदिर और देखने योग्य हैं। एक में तृणा वर्त्त असुर बाल कृष्ण को अपने पच्छ से ढके हुए हैं। दूसरा मंदिर महा मल्लराय का है। यह नाम कृष्णचन्द्र का है। असुरों को मारने के बाद महामल्ल राय कहलाये। महावन में टीले बहुत हैं। एक पुराना किलाभी है। मेवाड के राना कटीराने बनवायाथा। सुनते हैं कि मुसलमानों के भय से वह महाबन के राजा दिगपाल के यहां आरहाथा। कान्ह कुमर उसके बेटे को राजा दिगपाल की पुत्री से ब्याह हुआ और इस तरह वह फाटक अहीरों का पुरषा (मूल पुरुष) होगया। और अपने सुसर दिगपाल के मरने के पीछें राज का मालिक हुआ और परासर गोतके सनाढ्य ब्राह्मणों को महावन का बहुत सा हिस्सा देदिया। अलाउद्दीन बादशाह की अमलदारी में सूफिय हिनाने यह किला महाबन का छीन लिया और इस चालाकी से सेना लेकर भीतर घुस गया कि पालकियों में सिपाही सवार करा लिये और यह कहा कि हिन्दू स्त्रियां हैं—श्यामलला और रोहिनी के दर्शन भीतर जाकर करेंगी। इस छल से किला जीत लिया और राना को मारडाला।

श्यामलला का मंदिर किले के उस डंडा परहै जो यमुना की ओर है।यह एक महा बुरा छोटासा मन्दिर है। यहां पर यशोदा के माया अर्थात् योग निद्रा उत्पन्न हुई थी और बसुदेवजी कृष्णको वहां छोड़ आये और योग माया को उठालाये।

बहुत उत्तम और दर्शनीय स्थान नन्दराय के महल हैं जो अस्सी खंभा के कहलाते हैं। यह इस आकार का औरंगजेब के राज्य में मुसलमानों ने बनवाया था। निमाज पढ़ने की मसजिद पुराने मसाले से बना ली थी। सोलह २ खंभों की पांच पाती हैं। तीन खंभे जो अच्छे हैं, वे सतयुग, त्रेता और द्वापर कहलाते हैं और सादह जो एक है वह कलजुग कहलाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दो प्राचीन मन्दिर ग्वालियर के पहाड़ी पर और हैं और वह सास बहू के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनमें से जो बड़ा मन्दिर है उसमें भीतर चार खंभे बीच में लगे हुए हैं और वे दृष्टि को रोकते हैं। छोटा मन्दिर पीछे का बना है और कुछ अच्छा भी है।

छठी पालना भी महावन में है। जहां कृष्ण पालने में झूले थे। ग्वालियर के मन्दिरों में तीसरा तेली का मन्दिर कहलाता है। यह बहुत ऊंचा है। यहां जनन् हारी छठी पूजा के लिये बालक होने से छठे दिन आती हैं। और भादों की जन्माष्टमी पर यहां बहुत यात्रियों की भीड़ होती है। यहां पर पालना पड़ा हुआ है। और चलासनी रक्खी हुई है। और गृहस्थी की और चीजें भी रक्खी हैं।

महावन को पुराणों में बृहद्वन और बृहदारण्य भी लिखा है। और ब्रह्माण्ड पुराण में महावन के २१ तीर्थ वर्णन किये हैं।

एकविंशतितीर्थैनयुक्तं भूरिगुणान्वितम्। यमलार्जुनपुण्यलमंनन्दकूपंतथैवच
चिन्ताहरणब्रह्मांड--कुंडंसारस्वतंतथा। सरस्वतीशिलातत्र--विष्णुकुन्डसमन्विता
कर्णकूपंकृष्णकुंडं--गोपकूपंतथैवच। रमणंरमणस्थानं--नारदस्थानामेवच
पूतनापतनस्थानं--तृणावर्ताख्यपातनम्। नन्दहर्म्यंनन्दगेहं--घाटंरमणसंज्ञकम्
मथुरानाथोद्भवंक्षेत्रं--पुण्यंपापप्रणाशनम् जन्मस्थानंतुशेषस्य--जन्मंयोगमायया

अर्थात् १ यमलार्जुन २ नन्दकूप ३ चिन्ताहरण घाट ४ ब्रह्मांड घाट ५ सरस्वती कुन्ड ६ सरस्वती शिला ७ विष्णुकुन्ड ८ कर्णकूप ९ कृष्णकुंड १० गोपकूप ११ रमणरेती १२ नारदजी का मन्दिर १३ पूतनाखार १४ तृणावर्त्त-वध-स्थान १५ नन्द-भवन १६ नन्दगृह १७ रमण घाट १८ मथुरानाथजी का मन्दिर १९ मथुराक्षेत्र २० जन्म स्थान शेषजी का २१ योग माया का जन्म-स्थान। ब्रह्मांड घाट पर मृत्तिका का बिहारीजी का मन्दिर है। यहां नित रविवार को रास होता है। एक चबूतरा बना हुआ है जिस पर मिट्टी के पेड़ा बने रक्खे हैं। कृष्ण महाराज ने यहां मांटी खायी थी। जब ग्वाल बालों ने यशोदा माता से जाकर चुगली खाई तब माता क्रोध कर छड़ी हाथ में ले कृष्णचन्द्रजी को धमकाने लगीं, उन्होंने मुख फाड़ कर उदर दिखाया कि मैंने मिट्टी नहीं खायी। माता को मुख के भीतर तीन लोक चौदह भुवन दीख पड़े। ये पेड़ा ब्रह्मांड के पेड़ा कहलाते हैं और यात्री लोग प्रसाद की रीति पर इनमें से अपने संग लेजाते हैं। वृत्तों में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizaqtion by eGangotri

कुछ आगें बढ़ने से पाव मील पर चिन्ताहरण घाट आता है। यह एकान्त यमुना तट है। यहां हर सोमवार को रास होता है--यहां सिवाय एक वैरागी की मढ़ी के और कोई मकान नहीं है।

महावन शहर और रमण रेती के बीच में एक छोटासा उपवन है जो खिलवन कहलाता है। इसमें पारस, पीपल के बहुत वृक्ष हैं। रमण रेती के निकट यमुना के तटपर एकादशी को एक मेला हुआ करता है

रमन रेती के पास गोप कूप है।

महावन में नीचें लिखे हुए मेला और उत्सव होते हैं

१ कुवार—रामलीला जिसका मुंशी भजन लाल तहसीलदार ने प्रारंभ करवाया था।

२ कार्तिक सुदी ६—पूतना मेला

३ माघ मास के रविवार—जखय्या का मेला।

४ फागुन सुदी ११—रमन रेतीका मेला।

५ कार्तिक सुदी ५—परिक्रमा। यह महावन गोकुल और राधा जन्म-स्थान रावल की होती है।

गोकुल

मथुरा से पांच छ; मील पर गोकुल है। यह वल्लभ कुल वालों की राजधानी है। गोकुल में भाटिया लोग बहुत आते हैं; और इस देश के यात्री भी वहां वनेही रहते हैं। न गोकुल ग्राम अच्छा है, न मंदिर कुछ अच्छे हैं। वस्ती भी नवीन है, मंदिर भी नवीन हैं, गली कूंचा सड़क सब खराब हैं। इस वल्लभ कुल के मूल पुरुष श्री वल्लभाचार्य्य जिनसे गोकुल नाम हुआ है, सन् १४७९ में उत्पन्न हुए थे; और एक तैलंग ब्राह्मण लक्ष्मण भट्ट जी विष्णु-स्वामी सम्प्रदाय में थे उनके पुत्र थे। ये काशी के निकट चम्पारएय में उत्पन्न हुए थे। इनकी माता पिता यहां यात्रा को आये थे। बनारस में मत-सम्बंधी बखेड़े के कारण अधिक न ठहर सके। अपनी गर्भवती स्त्री को लेकर चल दिये। स्त्रीपर मार्ग का कष्ट न सहा गया। उनके अठमासा पुत्र मार्ग ही में हो पड़ा। उन्होंने भय से या ईश्वर की प्रेरणा से उस बालक को वहीं वृक्ष के नीचें छोडा और आप दोनों चल दिये। कुछ दिन वीतें, उनका भय दूर हुआ तब फिर लौटे और उसी वृक्ष के नीचें बालक को खेलता हुआ पाया। उस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बालक को लेकर वह बनारस पहुंचे और थोड़े दिन वहां रहकर गोकुल आरहे। जब बालक बड़ा हुआ तब पंडित नारायण भट्ट के पास पढ़ने को बिठाल दिया। चार महीने में बालक ने समस्त संस्कृत भाषा और पांडित्य पढ़लिया। ग्यारह वर्ष की आयु में उनके पिता का परलोक वास हुआ और इन्होंने उसी समय से मत के उपदेश करने का प्रारंभ किया—सब से प्रथम उन्होंने दक्षिण देश में विजय पायी और वहां दामोदर दासजी को अपना चेला बनाया। विजय नगर अपनी ननसाल में पंडितों की सभा जीती और राजा कृष्ण-देव उनकी विद्या का चमत्कार देख शिष्य होगया—इसके पीछे उज्जयन बना-रस हरिद्वार प्रयाग जहां वह गये, तहां उनकी जीत हुई। उनके मतके अनुसार ब्रह्मचर्य्य से रहना अवश्य न था, इस हेतु बनारस में उन्होंने अपना व्याह कर लिया। उनके दो पुत्र हुए—एक श्री गोपीनाथ सन् १५११ ई० में, दूसरे श्रीविट्ठल-नाथ जी १५१६ ई० में। वह ब्रज में बहुत आते थे और बहुत ठहरते थे। १५२० ई० में उन्हों ने गोबर्द्धन में श्री नाथ जी का मन्दिर बनाया—और वृन्दावन में श्रीकृष्ण चन्द्र का स्वप्न में उनको दर्शन हुआ, और उनको आज्ञा मिली कि सेवा पूजा की नवीन रीति प्रचलित करो और बाल कृष्ण और बालगोपाल के नाम से पूजो। वही रीति पूजा की अबतक उनकी सम्प्रदाय के लोगों में चली जाती है। उनका निवास-स्थान बनारस में हो रहा और वहीं पर सन् १५३१ ईसवी में अपना शरीर छोड़ा—और सुरलोक बास पाने से प्रथम श्रीभागवत् पर 'सुबोधिनी' नाम टीका बनाई। उनके पीछे उनके द्वितीय पुत्र श्री विट्ठलनाथ जी ने अपने पिता के मतका दक्षिण-पश्चिम देश में बड़े परिश्रम और सिद्धि के साथ विस्तार किया और २५२ प्रसिद्ध जन अपने अनुयायी करलिये। उन सबके शुभकर्म "दो सो बावन वार्त्ता" नामकी एक हिन्दी पुस्तक में लिखे हैं। सन् १५६५ में वह गोकुल आकर बसे और ७१ बर्ष की आयु में गिरि गोबर्द्धन पर उन्होंने प्राण छोड़े। इनको दो पत्नी थीं, दोनों से सात पुत्र उत्पन्न हुए थे। १ श्री गिरिधर जी २ श्रीगोबिन्द जी ३ श्री बालकृष्ण जी ४ श्रीगोकुलनाथ जी ५ श्री रघुनाथ जी ६ श्री यदुनाथ जी ७ श्रीघनश्याम जी। इन सब में चौथे पुत्र श्रीगोकुलनाथ जी बहुत प्रसिद्ध हुए—उनकी सन्तान अपने कुटुम्ब वालों में कुछ बड़प्पन का दावा करती है। हिन्दुओं में और सम्प्रदाय के लोग तो संसारी सुख से बचने में प्रतिष्ठा और वैकुंठ समझते हैं, परन्तु बल्लभाचार्य्य सम्प्रदाय के महाशय सुखभोगी हैं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को स्वर्गसोपान समझते हैं। "सिद्धान्त—रहस्य" में इस सम्प्रदाय का सिद्धान्त वर्णन किया है। "ब्रह्म-सम्बंध" इस मतका मूल मंत्र है और वह श्री वल्लभाचार्य्य जी को परमेश्वर से प्राप्त हुआ—विष्णुभगवान् बोलते गये और गुसाईं जी महाराज लिखते गये। इस सिद्धान्त के थोड़े से श्लोक हैं जो नीचे लिखे जाते हैं॥

श्रावणस्यामलेपक्षेएकादश्यांमहानिशि । साक्षात्भगवताप्रोक्तं तदक्षरशउच्यते ब्रह्मसम्बंधकरणात्सर्वेषांदेहजीवयो; । सर्वदोषनिवृतिर्हिदोषा:पंचविधा:स्मृता: सहजादेशकालोत्थालोकवेदनिरूपित: । संयोगजा:स्पर्शजाश्चनमंतव्या:कथंचन अन्यथासर्वदोषाणांननिवृत्ति:कथंचन । असमर्पितवस्तूनांतस्मात्वर्जनमाचरेत् निवेदिभि:समर्प्यैवसर्वंकुर्य्यादितिस्थिति: । नमतंदेवदेवस्यस्वामिभुक्तसमर्पणं तस्मादादौसर्वकार्य्ये सर्ववस्तुसमर्पणं । दत्तापहारवचनंतथाचसकलंहरे: नाग्राह्यमितिवाक्यंहिभिन्नमार्गपरंमतं । सेवकानांयथालोके व्यवहार:प्रसिद्ध्यति तथाकार्यंसमर्प्यैवसर्वेषांब्रह्मताततः । गंगात्वंसर्वदोषाणांगुणदोषादिवर्णना गंगात्वेननिरूप्यंस्यात्तद्वदत्रापिचैवहि ।

इस सम्प्रदाय वाले "सिद्धान्त-रहस्य" के अनुसार चलते हैं। इनके बालक बहुत थोड़ी आयु में सम्प्रदाय में इस रीति पर लाये जाते हैं कि फूलों की माला उनके कंठ में अष्टाक्षर यह मंत्र पढ़कर डाली जाती है—"श्री कृष्ण शरणंमम," परन्तु जब बड़े होने पर अपनी पदवी का पूरा अधिकार काम में लाना चाहते हैं, तब उनको "समर्पण" और करना पड़ता है और तन मन धन का समर्पण यों होता है:—

ओं श्रीकृष्णशरणंममसहस्रपरिवत्सरामितकालसंजातकृष्णवियोगजनित तापक्लेशानंततिरोभावोहंभगवतेकृष्णायदेहेन्द्रियप्राणांऽतकरणतद्धर्मांश्चदारागा रपुत्राप्तवित्तेहपराण्यात्मनासहसमर्पयामिदासोहंकृष्णतवास्मि ।

जो इस मत के अनुयायी हैं, वह तन मन धन भगवान् को समर्पण कर देते हैं और गुसाईंजी महाराज को भी भगवान् के ठौर मानते हैं।

इस वल्लभ कुल के प्रधान पुरुष गोस्वामी पुरुषोत्तम लालजी महाराज हैं। श्री विट्ठल नाथजी के छुटे पुत्र श्री यदुनाथ जी के वंश में हैं और बड़े सज्जन, उदार और सभ्यता पूर्ण हैं। नवनीत प्रिय अर्थात् राजा ठाकुर के मंदिर के अधिष्टाता हैं और गोकुल के जिमीदार हैं। उनके चचा श्रीगोविंदलालजी अपनी स्त्री जानकी बहूजी और एक पुत्री छोड़ कर मरे। यह पुत्री कुल रीति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के अनुसार एक भट्ट को व्याही गयी और रंछोरलाल और गोपीलाल दो पुत्र उनके हुए।परन्तु कोई उनमें से सेवा पूजा का अधिकारी न हुआ। तब जानकी वहूजी ने अपने पति के भाई ब्रजपाल के पुत्र को गोद लिया। इस पर बिलायत तक मुकद्दमा लड़ा।*

गोस्वामी पुरुषोत्तम लालजी के एक पुत्र गोस्वामी रमनलाल जी हुए और रमन लालजी के दो पुत्र ब्रजपाल और कन्हयालाल हैं। कन्हैयालाल जी को लक्ष्मण जी ने कि जो श्री विट्ठल नाथजी के चौथे पुत्र श्री गोकुल नाथ जी के वंशमें हैं, गोद लेलिया है। अब वह गुसाईं गोकुलनाथ जी के नाम से प्रसिद्ध हैं। दोनों कुल का धन अब एक ही कुल में आ गया है। उक्त गोस्वामी ब्रजभर में सबसे अधिक धनवान् हैं। विद्या अधिक नहीं है, परन्तु उदारता बहुत है। उक्त गोस्वामी जी महाराज अपने कुलको मर्य्यादा पालन करते हैं और कभी किसी अंगरेज से मेल मिलाप नहीं करते।इसी कुलमें एक ऐसे होगये हैं कि जिन्होंने गवरनर जनरल का छूलेनेसे शरीर तज दिया।वल्लभाचार्य्य संप्रदाय के मन्दिरों में सेवा पूजा और दर्शनों के आठ समय नियत हैं १ प्रातः काल मंगला—इस समय ठाकुरजी को जगाकर स्नान कराये जाते हैं--२ शृंगार-घंटा १॥ घंटा दिन चढ़े—ठाकुर भूषन बसन पहर कर सिंहासन पर बिराजते हैं। ३ ग्वाल—$\frac{3}{4}$ घंटे पीछें जब कृष्ण धेनु चराने के लिये वन को जाते हैं। ४ राज-भोग दुपहर के समय यह भोग लगाकर पुजारी और सेवक भक्तों में बांटा जाता है। (५)उत्थापन—तीसरे पहर जब ठाकुरजी सो कर जगते हैं (६)भोग—अर्थात् सांझ का कलेवा (७) संध्या-आरती सूर्य्यास्त समय वस्त्र उतारे जाते हैं। (८)शयन।इन आठ समयों पर पुजारी लोग पूजा सेवा करते हैं और भक्त लोग केवल दर्शन करते हैं।आषाढ की पूर्णिमा को अन्नादिक की राख तोल कर पुड़ियों में ठाकुरजी के पास मन्दिर में रखदी जाती है और मन्दिर के पट वंद होजाते हैं।परन्तु रातभर पूजन में बीतती है। प्रातःकाल सब राखें तोली जाती हैं।जिस वस्तु की राख तोल में कम उतरती है,उसको यह समझा जाता है इसकी हानि इस साल में होगी। इस रीति पर सम्बत् की सब बातें आगे से निश्चय करली जाती हैं, और जहां तक देखा गया है इस परीक्षा के अनुसार फल भी होता है।

---

* अब गोस्वामी पुरुषोत्तमलालजी का भी देहान्त होगया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोकुल में तीन मंदिर प्राचीन है १ गोकुल नाथ, २ मदन मोहन, ३ विट्ठल नाथ। सुनते हैं कि ये सन् १५११ में बने हैं। विट्ठल नाथ जी का मंदिर यशोदा घाट पर है और बहुत सुंदर बना हुआ है। हाथी और हंस के आकार उसमें बने हुए हैं, परन्तु अब इसकी कोई खबर गीरी नहीं करता। इस लिये बिल्कुल गिरकर नष्ट हुआ जाता है। इन मंदिरों के सिवाय नीचे लिखे हुए मंदिर और प्रसिद्ध हैं।

१ द्वारिका नाथ—सन् १५४६ में बनाया गया है।

२ बालकृष्ण—सम्बत १६३६ में बना है ४४२०) साल की आमदनी है।

३ नवनीत प्रिय अर्थात् दाऊजी—उन गुसांईजी के नाम से प्रसिद्ध है जिन के पौत्र गिरधारी जी के अब अधिकार में हैं। सालाना आमदनी ९३८२ की है।

४ व्रजरत्न—गोस्वामी गोकुल नाथजी के अधिकार में है। उक्त गोस्वामी जी औ विट्ठल दासजी के छोटे पुत्र घनश्याम जी के संतान में हैं। इस मंदिर की सालाना आमदनी १०६५०) है।

५ श्री चंद्रमा—इस मंदिर की सालाना आमदनी ४०५० है।

६ नवनीत लाल
७ नटवर
८ मथुरेश
९ गोपाल लाल
१० व्रजेश्वर

(६–१०) ये सब नवीन मंदिर हैं।

गोकुल में दो महादेव जी के भी मन्दिर हैं। जोधपुर के राजा बिजयसिंह ने सन् १६०२ में बनवाये थे॥

मुख्य मेलों में (१) एक जन्माष्टमी का है जो भादोंबदी ८ को होता है और (२) अन्नकूट का मेला कार्तिक सुदी १ को होता है, (३) कार्तिक बदी ४ को तृणावर्त का मेला होता है, यमुना की ओर गोकुल गाम का गांडी पुर द्वार है, उससे आगे मनोहरलाल भाटिया की बनाई हुई बावली है। नीचे उतर कर बल्लभ घाट आता है। इस घाट के सन्मुख यमुना के दाहिने तटपर कोयला घाट है— गोकुल में चांदी के खिलौना बहुत सुन्दर बनते हैं--मोर गाय आदि जीवों की मूर्ति बनायी जाती है॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बलदेवजी

महावन से छः मील आगे सादाबाद जलेसर की सड़क पर बलदेव जीका प्रसिद्ध मन्दिर है, और यह मन्दिर बलदेवजी नाम से जो प्रसिद्ध गांम है उसके बीच में है। पहले इस गाम को रीढ़ा कहते थे, परन्तु वह अब अलग एक छोटा सा नगला है, और उसमें मेहनती मजदूर लोग रहते हैं। यह गाम बलदेवजी नवीन बसगया है। इस मन्दिरके निकट एक८०फुट वर्गात्मक तालाव है। उसे चीर-सागर, चीरकुंड, बलभद्र कुंड कहते हैं--इसको दशा अब अच्छी नहीं है, टूट फूटकर बिगड़ता जाता है। काई पानी पर बहुत जमी रहती है, परन्तु यात्री फिर भी उस में स्नान करते हैं, आचमन करते हैं क्योंकि फल बहुत है--यहीं पर गुसांई गोकुलनाथजी को स्वप्न हुआ था कि एक देवता छिपे हुए विद्यमान हैं। बहुत से मनुष्यों ने मिलकर ढूंढ़ा तो बलदेवजी पागये। बहुतेरा परिश्रम किया गया कि किसी तरह बलदेवजी गोकुल पधारें परन्तु गांड़ियां टूट गयीं और देवता गोकुल जाने को राजी न हुए। तब वहीं मन्दिर बनवा दिया गया--और भरतिया का कल्यान ब्रजवासी मन्दिर की रखवाली को बिठा दिया गया। उसके दो बेटे जमुनादास और मूसिया उर्फ नाम सुखदेव हुए। इनदोनो के कुटुम्ब में अबके ये अनेक पंडा हैं जो बलदेवजीसे जीते हैं-रीढ़ागाम भी अब इन ब्रजवासी पंडोंने मोल ले लिया है और पांच छःगाम और इनके हैं कि जिनकी सालाना आमदनी ३८५३ हैं। ये गाम सिंधिया की तरफ से उनको मिले हैं। गामों की आमदनी कुछ बहुत नहीं है, परन्तु मन्दिर के चढावेकी ३०००० तीस हजार रुपे साल आमदनी होती है। चीरसागर पर जो यात्री लोग दान करते हैं, वह इन पंडाओं को नहीं मिलता, उसे सनाढ्य ब्राह्मण लेते हैं॥

बलदेवजी का मन्दिर बड़ा तो बहुत है परन्तु कुछ सुन्दरता उसमें नहीं है--मन्दिर से मिले हुए ग्यारह चौक हैं, जिनमें पंडालोग रहते हैं और यात्री ठहरते हैं। कुछ किराया यात्रियों से नहीं लिया जाता, परन्तु उनकी श्रद्धा अनु-सार भेट या दक्षिणा मिल जाने की आशा पर ठहराये जाते हैं। ये ग्यारह चौक कुंज के नाम से प्रसिद्ध हैं, जो बनाने वालों के नाम से पुकारी जाती हैं।

१ रङ्कलाल की कुंज--आगरे और लखनऊ के एक बनिया रङ्कलाल ने सन् १८१७ में बनाई थी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

२ हाथरस के बनिया बछराज की कुंज--सन् १८२५ की बनीहुई।

३ नवल करन कुंज आगरे के नवल करन नाम बनिया ने सन् १७६८ में बनाई थी।

४ भीमसेन हुलासराय की कुंज मथुरा के भीमसेन हुलासराय बनियों ने १८२८ में बनाई थी।

५ आगरे के दासमल खत्री की बनीहुई कुंज १८०१ ई० में तयार हुई।

६ जयपुर के भट्टाचार्य्य की कुंज १७८४ ई० की बनीहुई।

७ जयपुर के गुपाल ब्राह्मण की कुंज।

८ मथुरा के चिम्मनलाल की कुंज--सन् १७७८ की बनी हुई।

९ आगरे के सदाराम खत्री की कुंज--सन् १७६८ की बनी हुई।

१० भरतपुर के चुन्ना हलवाई की कुंज--सन् १८०८ की बनी हुई।

११ महावन के पूरन चन्द पचौरी की कुंज सन् १८७१ की बनी हुई।

मुख्य मन्दिर जो बलदेव जी का है, दिल्ली के सेठ श्यामदास का बनाया हुआ है और सत्तरहवीं शताब्दी के अन्त में बनाया गया है-इस मन्दिर में सिवाय बलदेव जी की परम विशाल मूर्त्ति के श्री रेवती जी उनकी पत्नी की प्रतिमा भी है, परन्तु सिंहासन अलग कौने में है। चोर सागर के किनारे पर सुड़साल के बिहारीलाल बोहरे का बनाया हुआ हरदेवजी का मन्दिर है कि जो सन् १८०२ में बनाया गया था--और पंडा हरदेव और जगन्नाथ इन दो की पत्थर की छतरी है।

साल भर में यहां दो मेले होते हैं—एक भादों सुदी ६ को जो देव छठ का मेला कहाता है। दूसरा अगहन सुदी पूर्णिमासी को, परन्तु वैसे मन्दिर में नित यात्रियों की भीड़ लगी रहती है।

सेवा पूजा में तो बहुत खर्च नहीं होता, परन्तु अतिथियों की एक आने के हिसाब से सदावर्त मिलता है पंडों के कुटुम्ब में अब तीन से चारसौ आदमी होगये हैं। उनके खर्च में बहुत उठ जाता है। आपस में तीन महीने पीछे बांट करलेते हैं। साधारण यात्री कुछ बहुत नहीं चढाते, केवल थोडे से पैसे और माखन मिश्री चढाते हैं और माखन मिश्री और पटका प्रसाद में मिलती है। तीसरे महीने चढावे की मिश्री का नीलाम ८० या ९० रुपे में होजाता है। बलदेव जी की बड़ी भारी मानता है, लोग जब कोई व्यापार आदि काम उठाते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

है, तब बलदेवजी की मान्ता मानलेते हैं और जो कुछ लाभ होता है उसका कोई भाग मन्दिर में चढ़ाते हैं--घोड़ा, गाड़ी, गाय आदि धन भी चढ़ावे में आते हैं। मन्दिर से लगा हुआ एक बाग था, उसका खर्च महाराजा भरतपुर के यहां से मिलता था--परन्तु पंडा महात्माओंने उसको बिगाड़ दिया और पेड़ काटकर जलाने के काम में ले आये। इस मन्दिर में एक अंधेर और सुनने में आया है कि जब कोई प्रेमी यात्री दंडवत् करने को धरती पर लेट जाता है तब लोग उसकी बासनी या रुपे जो उनके हाथ पड़ते हैं, उनको लेकर चम्पत होते हैं--यात्री बिचारा चिल्ल पुकार करके लाचार चुप होजाता है।

श्रीगोवर्द्धन

मथुरा नगर से तीन मील की दूरी पर सन्तान कुंड के निकट सतोहे ग्राम में होकर गोबर्द्धन को सड़क जाती है। सन्तान कुंड पर राजा शन्तनु ने सन्तान के लिये बहुत काल तक तप किया था--पुत्र कामना से नित स्त्रियां यहां दर्शन को आती हैं, और भादों सुदी ६ को एक मेला भी होता है। यह कुंड बहुत बड़ा है। आमेर के राजा सवाई जयसिंह ने इसको पत्थर की पार बनवाई थी। इसकी चिनाई जहां तहां टूटती जाती है। कुण्ड के बीच में एक ऊंचा टीला है। एक पुल पर उतरके वहां पहुंचते हैं। टीले की चारों ओर रीठा के पेड़ हैं और टीले की चोटी पर मन्दिर है पचास सिड़ियों पर चढ़कर मन्दिर तक पहुंचते हैं। जो स्त्रियां सन्तान की कामना रखती हैं, वे मन्दिर में जाकर पूजा करती हैं, कुछ चढावा चढ़ाती हैं और धरती पर या भींत पर स्वस्तिका अर्थात् सांथिया काढ़ती हैं।

इस सन्तान कुंड से दश मील पर गोवर्द्धन है। गोबर्द्धन बहुत बड़ा नगर है और गिरि गोबर्द्धन की पीठ पर बसता है। यह पर्वत ४ चार पांच मील लम्बा पूर्व-दक्षिण दिशा में है और १०० फुट तक इसकी ऊंचाई है-इसी गिरि गोवर्द्धन को श्री कृष्ण महाराज ने कर की उंगली पर सात दिन धारण करके ब्रज को इन्द्र के कोप से बचाया था। गिरि गोबर्द्धन को गिरिराज बोलते हैं और प्राचीन ग्रंथों में अन्नकूट भी इसका नाम है, लोगों के हृदय में यह विश्वास होरहा है। जैसे२ यमुना जी की धार घटती जाती है--तैसे२ गिरिराज की ऊंचाई कम होती जाती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है। पहले अड़ींग से दृष्ट आते थे, अब सौ दो सौ गज की दूरी से भी दिखायी नहीं देते।

गिरिराज जी को लोग देवता मानते हैं, एक टुकड़ा तक इनका मकान बनाने के काम में नहीं लाते। सबसे नीचे स्थान पर होकर जो सड़क निकाली गयी है उसके लिये भी गिरिराज जी खोदे नहीं गये, ऊंची उठाकर निकाली गयी हैं। गिरिराजजी की उंचाई जतीपुरा और अन्योर की तरफ बहुत है। जतीपुरा के पास गोकुल के वल्लभाचार्य्य जी ने सन् १५२० ईसवी में एक मन्दिर श्रीनाथजी का बनाया था। औरंगजेव की चढाई के डर से श्रीनाथजी की मूर्त्ति यहांसे उठाकर उदय पुर के राज्य में नाथद्वारे में जाकर पधरा दी थी-वह मूर्त्ति अभी तक वहीं विराजमान है। गिरिराजजी पर जो मन्दिर था वह सूना होगया और अब तक ऊजड़ पड़ा है। कुछ मन्दिर के चिन्ह शेष हैं—यहां पर चढ़कर मथुरा, दीघ और नन्दगाम बरसाने की सैर भली देखने में आती हैं।

पर्बत के नीचें जतीपुरा गाम है। उसमें बहुत से मन्दिर हैं। एक उनमें से गोकुल नाथ जी का है और यह बहुत प्रसिद्ध है। और गोकुल के गुसांईयों में से एक गुसांई के अधिकार में है। इस मन्दिर में साल भर में दो उत्सव बहुत बड़े होते हैं और दोनों दीपदान के दूसरे दिन पड़वा को होते हैं। एक उनमें से गिरिराज पूजा के नाम से प्रसिद्ध है दूसरा अन्नकूट है। इस अवसर पर श्री गोकुलनाथ जी की मूर्ति गोकुल से आती है और उत्सव भर गोकुल नाथजी के मन्दिर में गिरिराज जी पर वास करती है। दिवाली के दूसरे दिन गोकुलनाथजी मन्दिर में से बाहर पधारते हैं और एक मन्दिर में विराजमान होते हैं। यह स्थान श्रीनाथ जी के गुसांई गिरिधर जी का है। उनको औरोंका वृथा हस्तक्षेप सहा नहीं जाता।

यहां के और गोकुल के गुसांईयों का परस्पर सम्बंध नीचे के वंश-वृक्ष से प्रकट है।

दामोदर जी उपनाम दाऊजी नाथ द्वारे के श्रीनाथ जी के
मन्दिर के अधिकारी

लक्ष्मण जी	चन्द्रावली	गोविन्द राय जी
गोकुलनाथ जी के मन्दिर के गुसांई १८६१ से० परलोक गये	बहूजी	नाथद्वारे के मन्दिर नवनीत प्रिय और श्रीनाथ के पुजारी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कन्हैयालाल जी (दत्तकपुत्र) गुशांई पुरुषोत्तम लाल जी के पौत्र (नाती) — गिरधारी जी

ऊपर लिखी हुई बंशावली से यह प्रकट है कि श्रीनाथद्वारे के श्रीनाथजी के मन्दिर के अधिकारी दामोदरजी हुये जिनको दाऊजी भी कहते हैं। उनके दो पुत्र हुये १) लच्छमणजी गोकुलनाथजीके मन्दिर के गुसाईं जो १८६१ में परलोक बाशी हुये उनकी पत्नी चन्द्रावती (बहूजी) को अधिकार मिला २) गोविंदराम-जी नाथ द्वारे के मन्दिर नवनीत प्रिय और श्रीनाथ के पुजारी--इनके पुत्र गिर-धारीजी हुये--और उक्त लच्छमण जी की गोद कन्हैया लालजी पुरुषोत्तमलालजी के पौत्र आये।

ठीक जतीपुरा के साम्ने गिरिगोबर्द्धन की दूसरी ओर आन्योर गाम है— जतीपुरा और आन्योर के बी च में गिरिगोबर्द्धन पर श्रीनाथ जी का मन्दिर है। थोड़ी दूर पर वहां से पूंछरी गाम है जो गिरिराजजी की अन्तसीमा है।

कातिक के महीना में गिरिराज जी की परिक्रमा होती है। यह परिक्रमा बारह मील अर्थात् सात कोसकी है। योगी और महात्मा परिक्रमा देनेको इकट्ठे होते हैं और दंडौती परिक्रमा देतेहैं। पहले पृथ्वी पर पट्ट लेट जाते हैं और जहांतक हाथ फैलते हैं, वहां अंगुलीसे लकीर खींचदेते हैं। और फिर उठकर उसी लकीर से आगे को दंडवत् करते हुए इसी तरह चले जाते हैं। और एक अठवारे से लेकर पंद्रह दिन तक में इस प्रकार की दंडवती प्ररिक्रमा को पूरा कर लेते हैं। धनी लोगों की ओर से ५० या १०० रुपे लेकर ब्राह्मण परिक्रमा करदेते हैं और अपने पुण्य का फल रुपे के बदले देदेते हैं। एक दंडवती परिक्रमा इस प्रकार की भी होती है कि प्रति पद पर १०८ वार दंडवत कीजाती है। यह दो वर्ष में समाप्त होती है। स्त्रियां भी प्राय: दंडवती परि-क्रमा करती हुई देखी जाती हैं।

गिरिराज जी के मध्य भाग में गोवर्द्धन नगर मानसी गंगा के तटपर वसता है। मानसी गंगा विष्णु भगवान् के मनसे प्रकट हुई है। यह एक बहुत बड़ी सरोवर है। नगर की ओर पर्वत राज के टुकड़े दृष्टि में आते हैं। और एक तरफ सिड्ढियां वनी हुई हैं। भरतपुर के महाराजा इसका बहुत वार ध्यान लगाकर जीर्णोद्धार करचुके हैं। परन्तु यह सरोवर जयपुर के राजा मानसिंह की बनाई हुई है और उनके पिताने उक्त मान सिंह गाम के निकट हरिदेव जी का मंदिर बनाया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

दिवाली पर यहां दीप मालिका का मेला होता है। हजारों आदमियों की भीड़ होती है, मानसरोवर के चारों ओर अनेक पंक्ति दीपकों को यात्री लोग रखते हैं और जल में झलकने से दूनी पंक्ति दरसने लगती हैं। असंख्य दीपकों की झलमलाहट से मानसीगंगा की विचित्र शोभा होती है। पास ही हरिदेवजी का मंदिर है। यह मन्दिर अकबर बादशाह के राज में बना था और आमेर के राजा भगवान् दास ने बनवाया था। यह बहुत बडा मन्दिर है और देखने से बहुत ही दृढ़ और बड़ा मालूम होता है। इस मन्दिर की आमदनी २३०० रुपे सालाना है। भगोसा और लोधीपुरी गाम मन्दिर से लगे हुए हैं। महाराजा भरतपुर ५००) रुपे साल दिया करते थे। रुपये के बदले उन्होंने लोधीपुरी गाम मन्दिर से लगा दिया है और रुपये रोज का और बंधान कर दिया है। इस मन्दिर के पुजारी गुसांईं चढावे को अपने निज के खर्च में लाते थे, इस लिये लोगों ने चढाना कम कर दिया यहां तक कि चढावे की आमदनी केवल ५०) रुपये साल रह गयी। इसकी छत जब गिरने लगी तब मिस्टर ग्रूस साहब कलक्टर ने गवर्नमेंट की मंजूरी से मरम्मति कराने का विचार किया। गवर्नमेंट ने अंगीकार कर लिया, परन्तु अडींग के छीतर मल बनिये ने मन्दिर का जीर्णोद्धार अपने सिर लिया। और रही सही छत्त को तोड़ फोड़ कर नये ढंग की छत बना दी और कहीं २ लकड़ी की कड़ी भी लगा दी। निदान जितनी सुन्दरता थी सब जाती रही।

मानसी गंगा की दूसरी ओर दो छतरी हैं। एक राजा रणधीर सिंह की दूसरी राजा बलदेव सिंह की। ये दोनों राजा भरतपुर के थे। ये दोनों छतरी बहुत सुन्दर बनी हुई हैं इनमें कृष्ण लीला के बहुत से चित्र लिखे और खुदे हुए हैं। गोवर्द्धन से एक मील पर राधा कुंड की सीमा के निकट महाराजा सूरजमल की छतरी है। यह बहुत बड़ी और सुन्दर बनी हुई है। राजा की छतरी के पास उनकी दो रानी हंसिया और किशोरी रानी की छतरी हैं। ये राजा की छतरी से कुछ छोटी हैं। रानी हंसिया की छतरी के पास एक राज भक्त सरदार की छतरी है। पीछे एक बहुत बडा बाग है। बाग के आगे एक बड़ा तालाब कुसुमसरोवर नाम से है, और यह सरोवर ४६० फुट वर्गात्मक है। उत्तर की ओर महाराजा जवाहर सिंह की छतरी बनने को थी वह रह गयी।

गोवर्द्धन में एक मन्दिर चक्रेश्वर महादेव का है। और चार कुंड हैं। १ गौरोचन २ धर्मरोचन ३ पापमोचन ४ ऋण मोचन। इनमें पिछले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तो वर्षा ऋतु के सिवाय और ऋतु में सूखे पड़े रहते हैं। पहिले दो हैं तो तीर्थ-स्थान, परन्तु अच्छी दशा में नहीं हैं।

मथुरा से दीघ को जो सड़क जाती है और गिरि गोवर्द्धन के ऊपर होकर जहां पर निकलती है, वह स्थान दान घाट कहलाता है। यहां कृष्ण महाराज दान लेने को लिये छिपे बैठे रहते थे। एक ब्राह्मण अब भी दान लेने को बैठा रहता है और जाने आने वालों से पैसा दो पैसा ले लेता है। घाट के ऊपर गिरि राज पर दानी राय जी का मन्दिर है।

गोवर्द्धन अंगरेजी अमलदारी में सिंधिया के पास से आया और सन् १८०३ के पीछे कुमर लक्ष्मण सिंह भरतपुर वाले रंजीत सिंह के सब से छोटे पुत्र को विना मालगुजारी के दे दिया। सन् १८२६ में जब कुंवर लक्ष्मण सिंह मर गये तब सरकार अंगरेजी के अधिकार में फिर आगया। पीछे महाराजा भरतपुर मांगते ही रहे, फिर सरकार ने नहीं दिया।

हरिवंश पुराण में गोवर्द्धन नगर के बसाये जाने को कथा यह लिखी है कि इक्ष्वाकु के कुल में एक हर्यंश्व नाम राजा हुए। हर्यंश्व को मधु दैत्य की पुत्री मधुमती व्याही थी। हर्यश्व के बड़े भाई ने आप राज ले लिया और अपने छोटे भाई को निकाल दिया। हर्यश्व अपने श्वसुर मधु के घर मथुरा आ रहे। मधु ने मधुवन अपने पुत्र लवण को दिया; शेष राज अपने जामाता हर्यंश्व को दे दिया। हर्यंश्व ने इस पवित्र गिरिबर पर गोवर्द्धन नगर बसाया और उसको अपनी राज-धानी बनाया। हर्यश्व के पुत्र यदु की तीसरी पीढ़ी पर भीम नाम राजा हुए। उनके समय में अयुध्या में रामचन्द्र राजा थे। रामचन्द्र ने शत्रुघ्न अपने भ्राता को भेजकर मधुबन में जो लवण का किला था, उसको नष्ट कर दिया और उस की जगह मथुरा बसाई।

बरसाना

बरसाना श्रीकृष्ण की प्यारी राधिकाजी का धाम है। यह पहाड़ी के नीचे के ढाल पर बसा हुआ है। परगन्हे छाते में भरतपुर की सीमा के निकट एक दो सौ फुट तक की ऊंचाई की पहाड़ी है और वह दक्षिण-पश्चिम की ओर चौथाई मील तक चली गयी है। यह पहिले ब्रह्माजी का स्थान था। अब इस पहाड़ी पर बहुत से मंदिर लाडिलीजी के बने हुए हैं और अनुमान से दो सौ वर्ष के भीतर सब बन गये हैं और सब एक घेरे के भीतर हैं। एक इनमें से मुख्य श्री-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मंदिर है जिसमें श्रीलाडिलीजी बिराजती हैं। पहाड़ी के नीचे से जब इस मंदिर पर दृष्टि जाती है तो बहुत मनोहर मालूम होता है। सिढ़ियों पर चढ़ कर जब मंदिर को जाते हैं, तो बीच में राधाजी के पितामह (दादा या बाबा) महिभान का मंदिर आता है। सिढ़ियों के नीचे पर्वत के मूल में दो मन्दिर और हैं- एक राधा की सखियों का कि जो गिनती में आठ थी (१) ललिता २ विशाखा ३ चंपकलता ४ रंगदेवी ५ चित्रलेखा ६ इन्दुलेखा ७ सुदेवी ८ तुंगविद्या दूसरा मंदिर वृषभान का है—वृषभान की बड़ी बिशाल और पूर्ण मूर्त्ति इस मंदिर में बिराजमान है, एक ओर श्रीराधिकाजी सहारा दिये खड़ी हैं, दूसरी ओर उनके बन्धु श्रीदामाजी हैं।

यह बस्ती बहुत पुरानी है, बड़े मकानोंके चिन्ह अब तक बिद्यमान हैं। इस बरसाने गाम में पहिले एक रूपराम नामी कटारे ब्राह्मण थे, वह बड़े पंडित थे, पहिले भरतपुर के पुरोहित हुए, फिर सिंधिया और हुलकर के पुरोहित हुए। इन राजाओं के यहां से बहुतसा धन उन्होंने पाया और ब्रज-मण्डल में और भी बहुत से मन्दिर आदि उन्होंने बनाये। रूपराम कटारे से पहिले बरसाना एक नगला ऊंचे गाम का था। ऊंचा गाम अब ऊजड़ हो गया। एक पुराना किला और बलदेवजी का मन्दिर शेष है। रूपराम कटारे ने बरसाने में लाडिलीजी का मन्दिर बनवाया, बाजार डाला ६४ बाग ऐसे लगाये कि जिनकी पक्की चार-दीवारी बना दी। एक राजाओं का सा महल अपने रहने के लिये बनाया+ बहुत से मठ मन्दिर और कुंज रच कर खड़ी कर दीं। पत्थर की पार के तालाब उन्होंने बनाये। उनमें से एक में सुंदर सिढ़ियों के घाट उतार दिये चारों कोनों पर चौबुरजी बना दी हैं। पास ही तीन छतरी बनी हुई हैं। एक रूपराम कटारे की, दो उनके और नातेदारों की। पूर्वोक्त पत्थर के घाट वाले ताल को सब लोग भानोखरि कहते हैं—अर्थात् राधा के पिता वृषभान की सरोवरि उसको समझते हैं। पास ही इसके कीरति कुण्ड है। भानोखरि के किनारे पर जल-महल है। इसके दर सरोवरि में जल के ऊपर खुले हुए हैं। रूपराम कटारे ने कुटुम्ब की स्त्रियों के स्नान के सुबीते के लिये और जल-बिनोद के लिये यह महल बनवाया था। रूपराम कटारे ने दो तालाब पास के गामों में और बनवाये थे। एक उस गाम में जो उन्होंने आप बसाया था--और उसका रूप नगर नाम रक्खाया--दूसरा गाजीपुर गाम में बनवाया था उस तालाब का नाम प्रेम सरोवरि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

रक्खा था। इसके आगे को एक बाग है जिसमें उस कटारे के भाई हेमराज की छतरी भी बनी हुई है। रूपराम कटारे के समय में दो कुल और धनवान् बरसाने में बसते थे। एक लवनिया ब्राह्मणों का कुल था कि जिसका कर्ता मोहनराम था दूसरा तांतिया ठाकुर लालजी का कुल था--लालजी ठाकुर नौकरी करने लखनऊ पहुंचे और वहां पहिले ही पहिले हलकारा की जगह उनको मिली। धीरें २ नवाब के दरबार में उनका प्रवेश होगया। जब उनकी आयु का अन्त आया तब उन्होंने घर लौट आने की आज्ञा मांगी और यह अभिलाषा प्रकट की कि मैं अपने देश में कुछ आगे के लिये स्मारक चिन्ह छोड़ना चाहता हूँ। नवाब ने बहुत सा धन देकर उनको बिदा किया – बरसाने में आकर उन्होंने एक बहुत बड़ा महल बनाया और एक बावली बनायी-और दो बहुत बड़े कूप बनाये॥

बरसाने के निकट जो प्रियाकुंड अर्थात् पीरी-पोखर है उसको पत्थर लगा कर लवनिया ब्राह्मणों ने पक्का किया और एक बाजार कटारे के नाम से बसाया और पहाड़ी के नीचे छतरी बनायी।

बरसाना बहुत अच्छा बना हुआ था, सब मन्दिर और मकान नये थे, परन्तु मुसलमानों ने इसको दो बार लूट कर बिगाड़ दिया, धन की खोज में मकान भी खोद कर खराब कर दिये। पुराने जिमींदारों ने ६०२) रुपे में लाला बाबू के हाथ बेच दिया अब ६००० रुपे उसमें उठते हैं।

बरसाने की पहाड़ी अब भी ब्रह्मा का पर्वत कहलाता है। ऐसा जान पड़ता है कि ब्रह्मसानु का बिगड़ते २ बरसाना होगया। इस पर्वत की चार चोटी ब्रह्माजी के चार मुख समझे जाते हैं, और उन पर कुछ मकान भी बने हुए हैं। पहली चोटी पर लाड़िलीजी का मन्दिर है, दूसरी पर मानमन्दिर, तीसरी पर दानगृह, चौथी पर मोरमुकुटी है।

एक छोटा सा पर्वत बरसाने के दूसरी ओर है। दोनों बड़े छोटे पर्वतों के बीच में बरसाना बसता है। दोनों पर्वत जहां मिलते हैं वहां एक ऐसी तंग घाटी है कि पैदल आदमी इकहरा बड़ी कठिनाई से निकल सकता है। इस घाटी का नाम सांकरी खोर है। यहां पर भादों की तेरस को एक मेला होता है कि जो बूढ़ी-लीला के नाम से प्रसिद्ध है। दस हजार आदमी अनुमान से इकट्ठे होते हैं और स्त्री पुरुष अलग २ छट कर जो कुछ बन पड़ता है परस्पर रस विवाद करते हैं और गाली बकते हैं। मान मन्दिर और मोरमुकुटी के बीच में जो झाड़ी है,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वह गह्वर वन कहलाता है, और उस में एक पक्की सरोवरी बनी हुई है। यहां द्रुम, बेलि की शोभा अपार है।

नन्दगाम

नंदगाम कृष्णचन्द्रजी के पालक पिता नन्दबाबा का धाम है और बरसाने से पांच मील पर है। नंदगाम में पहाड़ के ऊपर नंदराय जी का मन्दिर है। इस नंदगाम की शोभा सब तरह बरसाने की सी है। नंदराय जी का मन्दिर बहुत बड़ा है, परन्तु देखने में मनोहर नहीं है। यह मन्दिर एक रूपराम जाट सिंसिनवार का बनाया हुआ है, और ८२६ बीघा धरती माफ़ी मन्दिर से लग रही है— इस मन्दिर में जगमोहन बना हुआ है, चौक है, रसोई और सेज महल है, और दो शिखिर हैं पक्का चौक है, चारों तरफ़ दीवार हैं, कोने पर बुर्ज है, जहां से भरतपुर के पहाड़, मथुरा की तरफ़ का मैदान और गिरि गोवर्द्धन दृष्ट आते हैं।

नंदगाम पहाड़ी के नीचें बसता है और उजड़ सा गाम है, परन्तु कुछ थोड़े से दर्शनीय मकान भी उसमें बने हुए हैं, उन मकानों में अधिकतर प्रसिद्ध रूपराम कटारे के हैं।

एक मन्दिर तो मानसा देवी का है, शेष सब नृसिंह जी, गोपीनाथ, नृत्यगोपाल, गिरिधारी जी, नंदनंदन, राधा मोहन और यशोदा नंदन के हैं। यशोदा नंदन का मन्दिर और मन्दिरों से बड़ा है, इस का चौक भी अलग है। यह पहाड़ी के अधबर में बना हुआ है। ११४ सिड्ढी पत्थर की बनी हुई हैं, इन पर चढ़कर मन्दिर में पहुंचते हैं। यह चढ़ने का ज़ीना कलकत्ते के बाबू गुरुप्रसाद ने सन् १८१८ ईसवी में बनवाया था। पहाड़ के नीचें रानी किशोरी का बनाया हुआ एक चौक है। उसमें एक ओर मकान बने हुए हैं, तीन ओर खाली पड़ा है। यह स्थान यात्री और सौदागर लोगों के ठहरने के लिये बनवाया गया था—इसके पीछें एक बहुत बड़ा खिरिनी का बाग राजा भरतपुर का है। इससे कुछ आगे बढ़कर पानसरोवर है, जहां कृष्ण महाराज गायों को पानी पिलाया करते थे। इस सरोवर में निर्मल जल भरे रहते हैं, घाट भी बहुत सुन्दर बने हुए हैं—बर्दमान की रानी ने सन् १७४७ में बनवाये थे—इस सरोवर की लम्बाई ८१० फुट और चौड़ाई ३७८ है—आकार इसका जहाज़ का सा है—ब्रज के चार परम प्रसिद्ध सरोवरों में से यह भी एक है। नंदगाम की यह एक पानसरोवर है, दूसरी गोवर्द्धन के निकट परसोली की चन्द्र सरोवर—तीसरी बर-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सानें की निकट गाजीपुर को प्रेमसरोवरि, चौथी पर गढ़े हैं माठ में अरुआ की मान-सरोवर है। पान सरोवरि के एक किनारे पर बिहारी जी का मंदिर है। गाम के पास एक कदम खंडी है जो ऊधी जी का क्यार कहलाती है। इस नंदगाम में ५६ कुण्ड हैं, परन्तु इस कलियुग में सब दृष्ट नहीं आते ॥

सन् १८११ ईसवी से नंदगाम लाला बाबू के पास है ॥

परगना कोसी के मुख्य स्थान

कोसी एक बहुत बड़ी मंडी है, नाज का गंज यहां का प्रसिद्ध है – और बैलों की पैंठ यहां लगती है — और दो लाख मन से कम नाज नहीं रहता।

तीन मेले यहां बड़े होते हैं (१) दसहरा – यह मेला पचास बर्ष से होता है। लाल सिंह खत्री और दरबारी सिंह बनिया ने जुड़वाया था (२) मुहर्रम— (३) फूलडोल यह चैत सुदी २ को होता है। बहुत से गामों के जाट इकट्ठे होते हैं ॥

रत्नाकर कुण्ड के नाम से एक पक्का तालाब कोसी में है – और पुराने समय का बना हुआ है ॥

इसके सिवाय तीन और तालाब हैं--१ मायाकुण्ड--२ बिसाखाकुण्ड--३ गोमतीकुण्ड--ये सब तीर्थ द्वारिका या कुशस्थलो के यहां पर बनाये गये हैं--और कोसी को लोग कुशस्थली का अपभ्रंश समझते हैं--गोमती कुण्ड (जहां पर चैत सुदी २ को फूलडोल का मेला होता है) बहुत बड़ा तीर्थ है और नगर भर में अत्यन्त रमणीय स्थान है--यह कुण्ड बड़ा और बेढंगे आकार का है, बीच में इसके एक टापू है/ घाट भी दो तीन बहुत सुंदर बने हुए हैं और घाटों पर कदम, पीपल और बड के वृक्ष झुक रहे हैं और इन वृक्षों में मोर और बन्दर बहुत हैं।

यहां से थोड़ी दूर दिल्ली की सड़क पर एक छोटा सा तीर्थ "मा ~~बाई~~ भाय" नाम का है। एक तालाब और एक मन्दिर वहां बना हुआ है।

कोसी में तीन मन्दिर सरावगियों के भी हैं, एक पदम प्रभू का २ नेमनाथ का ३ महावीर का। नेमनाथ के मन्दिर पर भादों की पूर्णमासी के पीछे जल-यात्रा का मेला होता है।

कोसी के पास बड़ी बठैन और छोटी बठैन दो गाम हैं। यहां बलराम जी श्रीकृष्ण की बाट देखने को बैठे रहे थे- रूपराम कटारे का बनाया हुआ यहां पर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

एक पक्का तालाब है जिसको बलभद्र कुण्ड कहते हैं--इस कुण्डपर चैत बदी ३ को होलिगा का मेला होता है जिसमें १५ या १६ हजार आदिमी इकट्ठे होते हैं-और बैठन की स्त्रियों से और जाव के आस पास के मरदों से लोलायुद्ध होता है। स्त्रियों पर लाठी होती हैं, मरदों पर बबूल की डाली होती हैं।

दो छोटे से उपवनों में जो बैठन और जाव में हैं, और पाडर-गंगा के नाम से प्रसिद्ध हैं, कोकिलाबन है कि जो ब्रजभर के बनों में सबसे प्रसिद्ध है। और २१२ बीघे के बीच में है। इसमें बड़े सुन्दर सघन वृक्ष हैं। एक उत्तम सरोवर पर कि जिस में निर्मल और शीतल जल भरे हुए हैं, एक वट वृक्ष की रुचिर शाखा लटकी हुई है। तालाब के तटपर बहुतसे मन्दिर और यात्रियों के ठहरने के लिये कुंजें बनी हुई हैं। भादों सुदी १० को यहां रासलीला का उत्सव होता है। उसमें दस बारह हजार आदिमी इकट्ठे होते हैं

इस गाम में मिरजापुर के सेठ का एक बहुत सुंदर बाग है। चारों तरफ उसके पक्की चहार दीवारी बनी हुई हैं। इसके पासही कोसी के नेमजी बनिये की बनाई बारह द्वारी है। बाग में हर रविवार को मेला होता है, परन्तु पूर्णमासी का मेला दर्शनीय होता है, बंदरों के आगे अन्न डाल कर उनकी लड़ाई मेले वाले देखा करते हैं।

कोकिला बन और गामके बीच में पाडर-गंगा के पास कबीर बन है।

छोटी बठैन में चरन पहाड़ी है। इसका पत्थर भी नन्दगाम बरसाने कासा है। यहां कृष्ण महाराज बहुत काल तक रहते थे और वंसी बजाया करते थे। उनके चरणों के चिन्ह पहाड़ी पर अबभी प्रकट हैं।

कोसी से छः मील पर कामर है। यहां पर निम्बारक सम्प्रदाय का एक वैरागी रहता उसकी मढ़ी है और बिहारी जी का मन्दिर है॥

थोड़ी दूर पर महाराजा सूरजमल का बनाया हुआ दुर्वासा कुण्ड है। और उन्हीं का बनाया हुआ मदनमोहनजी का मन्दिर है, कि सब जाट इस मन्दिर के चेला गिनेजाते हैं। और चैत बदी २ को फूलडोल के मेले में चार पांच हजार जाट इकट्ठे होते हैं।

बरहान – यहां भादों सुदी ८ को रास लीला होती है।

बरहा----इस गांव में हरसुख बनियां का बनाया हुआ गोबर्द्धननाथ का मंदिर है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विसक्षर —इसमें एक नयी मसजिद है--और ५ वी और ६ वीं रबीउल-सानी को सुसलमानों का मेला होता है। यह मेला शाह चेत और विलायत-शाह की यादगार है।

चन्दौरो —अर्थात् चन्द्राबली--यहां महादेव जी का एक मन्दिर है।

दह गांव —या दधिगांम--यह भी एक वन यात्रा का स्थान है--भादों सुदी ६ को दधिगाम के पास मेला होता है। दो तीन हजार आदमी इकट्ठे होते हैं। बन्दूक लेकर लोग मिथ्या युद्ध करते हैं। यहां राजा मान का बनाया हुआ व्रजभूषण ठाकुर का मन्दिर है और मन्दिर के पास भानकू (?) नाम का एक तालाव है। तालाव पर एक पुराना कदंब का वृक्ष है जिस की पींड़ में मुकट का आकार बनकर बाहर निकल आता है। एक दधिकुण्ड भी इस ग्राम में है और ३५ बीघे में है। ३२० बीघे की रक्षा (१) भी इस गाम में है। उसमें सिवाय एक बैरागी के कोई नहीं रहता *

धर्मसिंह--धर्मसिंह का बसाया हुआ। इस गाम में रक्षा बहुत है, और एक मौहारी कुण्ड भी है। भादों सुदी ६ को यहां रासलीला होती है॥

गोंनहारी--चैत बदी ५ को फूलडोल का मेला होता है।

गिरोई--यहां के और नन्दगाम के लोग मिलकर फागुन सुदी १३ को फूलडोल का मेला करते हैं, और यह मेला गेंदोखारि-कुण्ड पर होता है। इस गांम में दो मंदिर भी हैं, एक जुगल किशोर का नंददास का बनाया हुआ, दूसरा मुरलीमनोहर का जो गोमती दास ने बनाया है।

हलवान--अर्थात् पीपल वारा। भादों सुदी ६ को बलदेव जी का मेला होता है। दो नवीन मंदिर भी बने हुए हैं।

हसनपुर नगर-- चैत बदी ३ को फूलडोल का मेला होता है।

हथाना--इस गाम में ४३५ बीघे रक्षा है, उसमें पीलू के वृक्ष बहुत हैं। इस गाम में क्षीर सागर नाम का एक कुण्ड है, जिसके पक्के घाट बने हुए हैं। और घाट पर लक्ष्मीनारायण का एक प्रसिद्ध मंदिर है।

नाव--यह बन यात्रा का एक स्थान है। यहां मेला ठहरता है, कोई विशेष

---

(१) रक्षा पेड़ों को कहते हैं जिस्से गांव की रक्षा होती हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वन यहां नहीं है। इसी गाम का नाम जाववन और जाववर है। इस गाम में चार रक्षा हैं, चीर कुण्ड और जुगल कुटी हैं। दोनों छोटी २ किशोरीबट (जिसमें किशोरी कुण्ड भी है) ३५ बीघे में है। किशोरी-कुंज और किशोरी कुण्ड रूपराम कटारे के बनवाये हुए हैं। पाडर-गंगा १५ बीघे में है। उसमें आम और खिरनी का एक बाग है, और सूरमा बैरागी का लगाया हुआ है। इस बैरागी ने एक राधाकान्त का मन्दिर भी बनाया है।

खैराल---इस गाम में बराही देवी के दो मेले होते हैं, एक चैत सुदी १४ को दूसरा क्वार सुदी १४ को।

खरोट---यहां उरस का मेला फकीर दोस्त अलीशाह का होता है (११ रवी उल-सानी को)।

कोटवन---यह वनयात्रा की उत्तर की सीमा है। यहांपर शीतल कुण्ड है और सीताराम ब्राह्मण का बनाया हुआ सीताराम का मंदिर है।

सभोई---देवी के दो मेला चैतसुदी ८, क्वार सुदी ८ को होते हैं।

पाईगांम--यहां कदम्ब का वन पाईवन के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें पीलू, पसेंदू और सिहोरे के भी पेड़ हैं, और एक पाई वन कुण्ड भी है। क्वार वदी ७ को यहां एक मेला होता है, जिसका नाम बरसी-नागजी है। चतुर्भुज जी के मंदिर के महन्त १००० यात्रियों को भोजन देते हैं। यहां पर नहर के रजवाहे पर एक धरम शाला भी है।

फालेन--यहां फागुन की पूरनमासी को प्रहलाद जी का मेला होता है। खेड़ापति प्रहलाद कुण्ड में स्नान करके जलती होलिका में होकर निकलता है--(seepage 86) सोम्बार के दिन पेंठ लगती है।

सांचौली---यहां सांची देवी का मंदिर है--और चैत सुदी ७ और क्वार सुदी ७ को मेला होता है।

परगना छाता

परगना छाता कोसी के दक्षिण में है। यह ब्रज मंडल का मध्यम भाग है। इसमें बहुत से वन और उपवन हैं, इस परगने में नंदगाम और बरसाना दोनों पावन और प्रसिद्ध स्थान हैं कि जिनका हम पहले वर्णन कर आये हैं। चौमुहा, छाता, सहार, सेही, शेरगढ और रहे कि जिनका कुछ वर्णन करना अवश्य है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

...पुस्तकालय, भरतनिधि, करौंदी वाराणसी-5

दिल्ली की सड़क पर मथुरा से १२ मील चौमुहां ग्राम है। इसमें पुरानी पक्की सराय शेरशाह बादशाह के समय की ऊजड़ पड़ी है। माधोराव सिंधिया ने यह ग्राम पंडित गंगाधर शास्त्री को विद्यादान के लिये पुरस्कृत किया था। उनके पीछे उनके पुत्र टीकाधर और मुरलीधर के पास रहा। ४९७४ रुपे इस ग्राम की जमा है। उसमें से $\frac{3}{4}$ अर्थात् ३७३० आगरा कालेज में जाते हैं, जिससे आधा खर्च कालेज का चलता है और शेष उनके दायाद नाग नाथ, बदरीनाथ और गोपी नाथ को मिलते हैं॥

इस ग्राम में काशी दास वैरागी का बनाया हुआ २०० वर्ष का विहारी-जी का मंदिर है। दो कुण्ड भी इस ग्राम में हैं--१ विहारी कुण्ड दूसरा चांदोखर।

छाता---दिल्ली की सड़क पर मथुरा से १९ मील है। इसमें बहुत बड़ा पड़ाव और सराय है। वहां के पंडित लोग कहते हैं कि यहां कृष्णचन्द्र-जी ने छत्र धारन लीला की थी, इस लिये इस स्थान का छाता नाम है। व्रजभक्ति विलास में एक छत्र वन और सूरज कुण्ड का वर्णन है। सम्भव है कि वह यही स्थान हो। सूरज कुण्ड नगर से उत्तर-पूरब में अब भी विद्यमान है। राजा भरतपुर के अहलकार विजय राम ब्राह्मण ने एक पक्का घाट बना दिया है। कुण्ड के चारों ओर प्राचीन वृक्षों की पंक्ति लगी हुई है और उससे आगे पीलू छोंकर और हिंगोट की एक बहुत बड़ी रक्षा है। मथुरा की सड़क पर एक चन्द्र कुण्ड और है॥

इस कसबे में तहसीली स्कूल है और सोमवार को पेंठ लगती है। छोटे छोटे मंदिर हिन्दुओं के हैं और चार मुसलमानों की मसजिद हैं॥

सहार--छाते से सात मील और गोवर्द्धन से नौ मील पर है। भरतपुर वाले राजा सूरज मल के पिता ठाकुर बदनसिंह यहां पहले रहते थे। इन ठाकुर बदन सिंह का एक बहुत बड़ा मकान और अधबना तालाब अब भी मौजूद है, परन्तु बहुत जीर्ण होगये हैं। इस ग्राम में दूसरों के दो कुल बहुत धनी हैं दो। तालाब भी ग्राम में हैं और उन के घाट पक्के बने हुए हैं। एक उनमें से महेश्वर कुण्ड कहलाता है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दूसरा माणिक दास वाला कुण्ड बोला जाता है। एक बलदेवजी का छोटासा मंदिर भी है।

यहां पर हिन्दुओं ने राधावल्लभ का मन्दिर बनाना आरंभ किया था--बुनियाद के खोदने में एक बड़ा भारी पुराना मन्दिर निकल आया और बहुत से पुराने चिन्ह ऐसे निकले कि जो अजायब घरों को भेजे गये।

सेही--बाछल ठाकुरों का गाम है--यहां पर बच्छवन है। यह नाम के लिये बन है--वैसे तो अब एक बागसा है। इसमें बिहारीजी का मन्दिर है--गुसांई जी मन्दिर का पुजारी है वह यहां के सब गोरवे ठाकुरों का गुरु है। बिहारीजी के मन्दिर के चौक में एक लाल पत्थर की छतरी है। गांवमें एक छोटासा मन्दिर हनूमान जी का भी है। बैसाख और कार्तिक की पूर्णिमासी को दो मेले होते हैं। हिन्दू मुसलमान सब इन मेलोंमें आते हैं। जलेसर के मीरांकीसी जात जुडती है। चढ़ावा हिन्दू मुसलमान दोनों अलग २ लेते हैं।

शेरगढ़--छाते से ८ मील पर है। और पक्की सड़क बनी हुई है। इस गाम में शेरगढ़ नाम का किला है, परन्तु अब बहुत पुराना होगया है।

हिन्दुओं के छोटे २ बारह मन्दिर इस गाम में हैं। और चार मसजिद मुसलमानों की हैं। बृहस्पतिबार की पेंठ जुड़ती है। पुलिस की चौकी है। डांकखाना है, मदरसा हैं।

अगरवाला--इसमें दोसौ बीघे की रखा है जिसमें हींस करील, अडूसा, कदम्ब के वृक्ष हैं। चार मन्दिर हैं, एक युगल बिहारीजी का दूसरा बिहारी जी का और दो सीतारामजी के।

अभईछोटी-बिहारी जी का मन्दिर है। कदम्ब और ढाक की रखा है।

अभनोखी--यहां पर अंजन सिला और अंजनी खार है--कि जिसको किशोरीकुण्ड भी कहते हैं॥

अलवाई--गोवर्धन और छाते की सड़क पर है और इस गाम में राधावल्लभ का मन्दिर है॥

बरहरा--यहां रासबिहारी जी का मन्दिर है उससे कुछ धरती लगी हुई है और वृन्दावन में जो श्यामसुन्दर जी का मन्दिर है, उसके आधीन है। इस गाम में बड़ो सुन्दर रमणीय रखा है॥

बरसाना--इसका वृत्तान्त ५१ पत्र में लिख आये हैं॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भदावल—इसमें एक उत्तम धर्मशाला है।

भौगाम—जमुनाजी के तटपर है--इसमें नंद घाट है--नंदरायजी का मन्दिर है। वनयात्रा का मेला यहां ठहरता है--यहां नंद बाबा को बरुण देवता यमुनाजी में स्नान करनेके समय चुरा ले गये थे--उससे जो लोगों को भय उपजी इस लिये भयगाम नाम हुआ।

चकसौली—बरसाने के पर्वत के नीचें हैं--बरसाने के और इस गाम के बीच में सांकरीखोरि है--भादोंसुदी ८ और १२ को मोरकुटी पर दो मेला होते हैं। इसके निकट बहुत सुन्दर सघन वन है, उसमें विहारकुण्ड है और एक पक्का तालाव है जो दोहनी कुण्ड कहलाता है। उसमें बहुत बड़े और पुराने कदम के वृक्ष खड़े हुए हैं। निकट ही बरसाने के पर्वत और बन उपवनों की शोभा अपार दृष्ट आती है। पहाड़ की चोटी पर मन्दिर की शोभा, द्रुमबेलि की हरियाली से यह स्थान व्रज भर में सब स्थानों से मनोहर, रमणीय और दर्शनीय है। पश्चिम के शिखर पर मान-मन्दिर है। पूरब के पर विलास-मन्दिर है और बीच में मोर-कुटी है; दान मन्दिर है और लाडिलीजी के मन्दिर हैं।

डारौल—राधाकृष्ण और रामलला के दो मन्दिर हैं और एक ताल है।

धीमरी—यमुना के निकट है। यहां दो कुण्ड हैं और कदम-खंडी है जो भूखन-वन और निवार वन के नाम से प्रसिद्ध हैं। वनयात्रा का मेला इन दोनों वनों में पहुंचता है और ठहरता है। भूखनवन बाजीदपुर के पास है। उसमें बेर, पापरी, लभेड़े और पीलू के वृक्ष हैं। निवार वन गुलालपुर के निकट है। उसमें एक छोटीसी कदमखंडी है और बन की शोभा उत्तम है। पीलू की झाड़ी में सुन्दर इमली के नीचें एक बैरागी की मढ़ी है। बीच वन में एक सरोवर है जिसमें अनेक प्रकार के पक्षी जलक्रि-विहार करते हैं।

दिभाला—ऊंचे गाम और बरसानेसे जो नहराको पहाड़की श्रेणी चली गयी है उस पर यह गाम है। इसमें गदर की बनी हुई एक गढ़ी है--पहाड़ी पर एक छोटासा मन्दिर है और घाटी पर पुराने समय की बनी हुई है और पहाड़ के दूसरी ओर बनयात्रा के मेले का एक रत्न-स्थान है--दूसरा एक सूरजकुण्ड और है, पत्थर की एक छतरी बनी हुई है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गाजीपुर—यहां प्रेम-सरोवरि है। रूपराम कटारे ने इस सरोवरि का पक्का पत्थर का घाट बना दिया है। तीन मन्दिर भी हैं १ किशोरीवल्लभ २ ललितमोहन ३ गोपालजी--पिछले दो रूपराम के बनाये हुए हैं। सामने एक सुन्दर बाग है जिसकी पक्की दीवारें बनी हुई हैं। बाग के भीतर रूपराम के भाई हेमराज की छतरी है। पास ही जो रखा है उसमें भादोंसुदी १२ को रासलीला होती है।

जमालपुर—इसमें कदमखंडी है और चन्दनकुण्ड है।

कजरोठ—यहां सीताराम का मन्दिर है और अक्षयवट है। वनयात्रा वाले दर्शन को यहां जाते हैं।

कमई--वनयात्रा का मेला यहां पर ठहरता है और भादों सुदी ६ को रासलीला होती है। चैतसुदी ५ को फूलडोल का मेला होता है। चार छोटे २ मन्दिर यहां हैं, और तीन कुण्ड हैं १ हरिकुण्ड २ बलदेवकुण्ड ३ पीरी पोखरि।

करहला--इस गाम में बहुत बड़ी कदमखंडी ४६० बीघे में है और ११ बीघे में कृष्णकुण्ड या ललिताकुण्ड है। इस कुण्ड पर भादोंसुदी ७ को रासलीला होती है। किनारे पर पक्का झूलन है जिसमें उत्सव के दिन राधाकृष्ण बनाकर झुलाये जाते हैं। तीन मन्दिरों में से एक मंदिर राधारमन का पक्का बना हुआ है। यहां के रासधारी प्रसिद्ध हैं और बहुत धनवान् हैं।

खेरा--- खदिर बन का अपभ्रंश है। यहां कृष्णकुण्ड है, इस कुण्ड पर एक मेला हरसाल होता है।

इस कुण्ड के दूहरे पक्के घाट बने हुए हैं। किनारे पर बलदेवजी का मंदिर है और रूपराम बोहरे की छतरी है। एक गोपीनाथजी का मंदिर है। सुनते हैं कि यह मंदिर अकबर बादशाह के सूबा टोडरमल ने बनवाया था। तीन मंदिर और भी हैं १ मदनमोहन २ दर्शन-बिहारी ३ महाप्रभू। दो कुण्ड भवानी और चिन्ता-खोरि के नाम से प्रसिद्ध हैं, यहां मदरसा है और शनिबार को पैंठ लगती है।

खानपुर--आगरे की नहर पर है। इसमें श्याम कुण्ड है और बिहारीजी का मंदिर है। फागुनसुदी १२ को फूलडोल का मेला होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लाड़पुर---एक छोटा सा मंदिर बिहारीजी का है, परन्तु सौ वर्ष का बना हुआ है।

लोधावली---कदमखन्डो है और ललिताकुण्ड है।

मडोई---इसमें जैसोरामधारी का बाग है और आचार्य्य-कुण्ड है।

मानपुर---यह बरसाने के पास है। यहां मान-मंदिर है जिसका खुरजा के रामदयाल ने जीर्णोद्धार किया है। इस मंदिर पर भादोंसुदी १२ को मानलीला का मेला होता है और यहां गहबरवन और गहवरकुण्ड हैं।

नरी---इस गाम में दो छोटे मन्दिर हैं और तीन कुण्ड हैं---(१) किसापी कुण्ड (२) सूरज कुण्ड (३) बलदेव कुण्ड। इस बलदेव कुण्ड के किनारे पर सम्वत् १७९० का बना हुआ बलदेवजी का मन्दिर है।

नौगाम--यहां मर्ल्ल बिहारी जी का मन्दिर—डेढ सौ वर्ष का बनाया हुआ है।

पाली---छाता और गोवर्द्धन की सड़क पर है। इस में मुरली मनोहर का एक मन्दिर है और करील और छोंकर की एक रक्षा है।

परखम--इसमें चार कुण्ड हैं (१) पोखर (२) पोखर कला (३) कुण्ड (४) समोखर

परसौली--इस गाम में मनसाकुण्ड है और भादों सुदी ६ को मेला होता है।

पेलखू-- इसमें कदमखंडी है और राधाकुण्ड है।

पोरपुर---शेरगढ के पास जमुना तट पर है यहां बिहार बन है और उसमें एक कुण्ड है और बिहारीजी का मन्दिर है।

पिसाया--पिपासावन इसका संस्कृत नाम है। कदम्ब के सुन्दर और सघन वृक्ष लगे हुए हैं। पापरी, पसेंदू, ढाक और सिहोरे के पेड़ भी कदम्ब के संग मिले हुए हैं। द्रुम बेलि के बिस्तार से जो चौकोर स्थान बन गये हैं, वे बावन चौक के नाम से प्रसिद्ध हैं, परन्तु गिनती में ५२ नहीं है। इन में बन्दर बहुत रहते हैं---गाम के पास किशोरी कुण्ड है--और दो मन्दिर हैं भादों सुदी ९ को यहां वनयात्रा का मेला पहुंचता है।

रिठौरा---नन्दगाम के पास है; नीम और छोंकर की रक्षा है यह चन्द्रावली का गाम है।

संकेत----नन्दगाम बरसाने के बीच में है। रूपराम कटारे का बनाया हुआ एक बहुत बड़ा मन्दिर राधारमण जी का है। इस मन्दिर को भी पहलें अकबर बादशाह के सूबा टोडरमल ने बनाया था। एक और छोटा सा बिहारी जी का मन्दिर है जो शय्या महल या सिज्जा-महल कहलाता

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सा है। और राजा बर्द्दवान का बनाया हुआ है। यह मन्दिर एक बाग के भीतर है और उसकी दीवारों पर चारों ओर से हौंस का रङ्ग है-भीतर बहुत सी बैठक का स्थूला है और दर्शनीय स्थान हैं, जिन पर सिंधिया के सेनापति ने सम्बत् १८८५ में नाम आदि खुदवाकर पत्थर लगादिये हैं। यह श्री लाड़िली जी और कृष्णचन्द्र महाराज के मिलन का स्थान है। इस हेतु संकेत-वन कहलाता है। रासलीला जब यहां होती है, तब राधाकृष्ण विबाह-लीला अवश्य को जाती है। यहां पर पचास फुट चौकोर कृष्णकुण्ड है। करहला की सड़क पर गाम से थोड़ी दूर पर विह्वल कुण्ड है। यह पक्का है, इसके किनारे पर महाराजा ग्वालियर का बनाया हुआ देवीजी का मन्दिर है और संकेत और नन्दगाम के बीच में दुमन वन है और देखने में बहुत ही मनोहर है। दोनों ओरों पर वृक्षों से ढके हुए कुण्ड हैं, एक पूर्णिमासी कहलाता है दूसरा दकी भुंदकी कहलाता है।

सांखी---छाते और गोवर्द्धन की सड़क पर। भादों सुदी १५ को यहां रासलीला होती है॥

सेंमरो---(श्यामला शब्द का अपभ्रंश है) देवीश्यामला का यहां मन्दिर है और यह मन्दिर तालाब के किनारे पर नवीन बना हुआ है--दो यहां धर्मशाला हैं देवी के मेले होते हैं और २००० रुपे साल का चढ़ावा आजाता है। चैत सुदी में छीके दिन तक यहां मेला होता है और इतनी भारी भीड़ होती है कि सड़कों पर चलने की जगह नहीं मिलती। चैत सुदी ६ को सांचौली गाम में भी देवी का ऐसा ही भारी मेला होता है जैसा यहां होता है--दूसरा मेला फिर अक्षय तीज को होता है।

सेनुआ---इस गाम में श्याम कुण्ड है।

सिहाना--सहार और जैत की सड़क पर है। इस में क्षीर सागर और धानोखर दो कुण्ड हैं।

सियारा---जमुना तट पर है। इस में माधोराव सिंधिया के बनाये हुए तीन छोटे२ मन्दिर हैं और यमुना तट पर चीरघाट वन यात्रा का एक प्रसिद्ध स्थान है। यहां चीर हरन लीला होती है--और फागुन सुदी ११ को फूल-डोल का मेला होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तारीलो--यहां कार्तिक सुदी १३ से पूर्णिमासी तक बूढ़े बाबू का मेला होता है। बूढ़े बाबू के पूजने से त्वचा के रोग जाते रहते हैं। इस गाम में राधा-गोविंद का एक विशाल मन्दिर है। एक वैरागी ने चंदे से बनवाया है।

ऊवा---यमुना तट पर है। रूपराम कटारे का बनाया हुआ बलदेव जी का मन्दिर है यहां दो मेले होते हैं। चैत सुदी ५ को फूलडोल और सावन सुदी ५ को हिडोंला। यह ऊवा शब्द संस्कृत उत्तर वाह से निकला है। यहां यमुनाजी उत्तर की ओर बहती हैं।

उमराउ—आगरे की नहर पर हैं। छोंकर की रचा है और प्राचीन मन्दिर बिहारी जी का है और एक किशोरी कुण्ड है।

ऊंचागांम--बरसाने के पास है यहां बलदेव जी का मन्दिर राजा टोडरमल का बनाया हुआ है। टोडर मल खत्री थे और अकबर के मंत्री थे। यहां पर एक देव कुण्ड भी है। भादों सुदी १२ को दुपहर से पहिलें यहां वन-यात्रा का मेला ठहरता है॥

ऊंदी—इस गांम में प्रेम कुण्ड है॥

परगना मथुरा

मथुरा के परगन्हे में मथुरा, वृन्दावन, गोवर्द्धन, राधाकुण्ड आदि व्रज के बहुत बड़े और प्रसिद्ध स्थान हैं जिनका क्रम से नीचे वर्णन होगा॥

अड़ींग—मथुरा से ८ मील टीव की सड़क पर है और २४ उपवनों में से है--- यहां पर एक किलोल कुंड है, परन्तु शोभायमान वन नहीं है। यहां कृष्ण महाराज ने अरिष्टासुर को मारा था--यहां तीन मन्दिर हैं-- (१) वलदेवजी (२) बिहारी जी (३) पिपलेश्वर महादेव। रविबार को पेंठ जुड़ती हैं।

औरंगाबाद--मथुरा से ४ मील पर यह औरंगजेब बादशाह का वसाया हुआ और बादशाह से भीम भोज नाम के तोमर ठाकुर के पास आया था। इसमें एक स्कूल बहुत अच्छा बना हुआ है, वेत की कुरसी और कोंच यहां बहुत सुन्दर वनती हैं॥

सोंख---मथुरा से जो कुमेर को सड़क जाती है, उस पर है। इस गाम में पत्थर के काम की दुकानें बहुत अच्छी बनी हुई हैं और बाजार भी बड़ा है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सोंख के वाजार से एक मील पर एक पक्का तालाव है, जो गुनसार के नाम से प्रसिद्ध है और देखने के योग्य है। राजा रंधीरसिंह की रानी लक्ष्मी ने यह तालाव बनाया था। जहां से सड़क गोबर्द्धन को फटती है, वहां महादेवजी का एक बड़ा मन्दिर है और मन्दिर के पास पक्का तालाव है जो रामदास वैरागी ने चंदे से बनाया है, और सोंख से लेकर गोबर्धन तक जो सड़क के दोनों ओर वृक्ष लगे हुये हैं, वह एक सालिगराम वैरागी ने अपने परिश्रम से लगाये हैं ॥

आन्योर-गोवर्द्धन के दूसरी ओर गिरिराज पर है। यहां दो पुराने समय के मन्दिर हैं एक गोबिन्द देवजी का दूसरा बलदेव जी का। एक गोबिन्द-कुण्ड है जिसको रानी पदमावती ने वनवाया था। इसके जल से कुष्ट दूर होता है। इस कुण्ड पर श्राद्ध और पिंडदान करने से गया की बराबर फल होता है ॥

वच्छगाम-यह भरतपुर की सीमा पर है। यहां ब्रह्मा जी कृष्ण महाराज के बच्छा और ग्वाल-बाल चुरा ले गये थे, और जब कृष्ण महाराज ने वैसे ही और नवीन वना दिये, तव ब्रह्माजी का गर्व दूर हो गया और आकर अपराध क्षमा कराया--इस गांम में चार छोटे २ मन्दिर हैं ॥

बढ़ौरा--यहां १६६ वीघे की कदम्ब खन्डी है और मंगल दास वैरागी का सौ वर्ष का वनाया हुआ बुद्धानन्द लक्ष्मीनारायण का मन्दिर है।

बाठी--सतोहा और चौमुहा के बीच में परमट की लेन पर है। गाम के भीतर सीताराम का मंदिर है। यह मंदिर सूरज मल के समय में महंत रामकृष्ण दास ने बनवाया था। गाम भी मंदिर से लगा दिया गया है---राजा भरतपुर के गुरू मंदिर के पुजारी हैं, उन्हीं के नाम यह गाम है। गाम के वाहर एक बहुत बड़ी पक्के घाटों की सरोबर है। सरोबर पर गोमंदिर है। आगें फिर वहुला बिन है। बहुला वटी से विगड़ कर अब इस गाम का नाम वाठी रह गया है। गोमंदिर के पास राधा कृष्ण अर्थात् बिहारीजी का मंदिर है। सरोबरि की दूसरी ओर मुरली-मनोहर का पुराना मंदिर है--यह बहुलावन भी वनयात्रा का एक स्थान है। यहां भादों बदी १२ को एक मेला होता है ॥

छटीकरा--दिल्ली की सड़क पर है। कहते हैं कि राधिका जी की छः सखियों को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नाम से इस गाम का नाम हुआ है। यहां श्री राधा जी का गुप्त-भवन है। यात्री लोग उसके दर्शन को आते हैं। यहां कदम्ब आदिक बहुत सुंदर सघन वृक्षों का वन है, और गरुड़-गोविंद का मंदिर है कि जिसकी बड़ी मानता है। इसके निकट एक गुफा है, जिसमें मिट्टी बनी हुई है। यहाँ सामन सुदी ८ को पंच तीर्थ का मेला होता है--- और बहुत से यात्री दर्शन को आते हैं। पांच तीर्थों में से एक तीर्थ यह है, दूसरा मधुवन महोली में है, तीसरा सतोहे का सातन कुंड है चौथा मथुरा में गोकर्णेश्वर का मंदिर है और पांचवां वृंदावन का ब्रह्मकुण्ड है। इस गाम में दो मेले और होते हैं। १ धूल के दिन दूसरा जेठ सुदी १५ को॥

धौरेरा--मथुरा वृन्दावन के बीच में यमुना तट पर है। इसका दूसरा नाम शाहबाद है। इसमें अक्रूरजी का स्थान है और एक प्राचीन मन्दिर बिहारीजी का है, जो भतरोड के नाम से प्रसिद्ध है। यहां पर मथुरा की चौबिनों ने अपने अपने स्वामियों से छिपाकर कृष्ण भगवान् को भोजन कराया था। कार्तिक की पूर्णिमासी को यहां एक मेला होता है।

छोसेरास--दुर्वासा मुनि ने यहां तपस्या की थी, इस लिये यह नाम इस गाम का हुआ। यहां पर दुर्वासा कुण्ड भी है।

गांठौली--दीघ की सड़क पर है, यहां गुलाल कुण्ड है। एक मंदिर और धर्मशाला है।

गिरिधरपुर--यहां देवीजी का पुराना मंदिर है।

जाखिनगाम--यह वनयात्रा का एक स्थान है। इसमें रूपराम कटारे का बनाया हुआ बलदेवजी का मंदिर है।

जतीपुरा--गिरिराज पर्वत पर बसता है। पहिले इसका नाम गोपालपुर था। माधवेन्द्रपुरी जती जिन्होंने पहिले इस गाम में नाथजी की सेवा की थी उनके नाम से इस गाम का नाम जतीपुरा धर दिया। यहां २७३ बीघे की कदमखन्डी है, जिसमें भादोंसुदी ११ को रासलीला होती है। कार्तिकसुदी १ को श्रीगोकुलनाथजी के मंदिर में अन्नकूट का मेला होता है। हर पूर्णमासी को लोग परिक्रमा देते हैं। पहाड़ की चोटी पर श्रीवल्लभाचार्य्यजी के बनाये हुए श्रीनाथजी के मंदिर के चिन्ह हैं और गाम में बहुत से मंदिर और कुण्ड हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नवनीतप्रिय, विठ्ठलनाथ और मथुरानाथ के मन्दिर और सुत्त कुण्ड गुसांई विठ्ठलनाथजी के बनाये हुए हैं और बिजयनाथजीका मन्दिर राजा जयसिंह का बनाया हुआ है। ऊधोकुण्ड, ऐरावतीकुण्ड भरतपुर के राजा नाहरसिंह का बनाया हुआ है। और हरिजीकुण्ड भरौल के सेठ लज्जाराम का बनवाया हुआ है।

जयसिंहपुरा--कार्तिकसुदी ९ को युगादि नवमी का मेला यहां होता है और आषाढसुदी ११ से कार्तिकसुदी ११ तक प्रति ११ को परिक्रमा का मेला होता है। और सरस्वतीकुण्ड से परिक्रमा वाले चलते हैं। यहां चामुंडा देवी का मन्दिर है और सरावगियों का एक मंदिर है।

केसींपुर - केशवदेवजी के मंदिर से केसींपुर नाम हुआ है। कटरा के पास बस्ती से मिला हुआ है। यहां सेठ लक्ष्मीचंद के पिता मनीरामजी का बनाया हुआ एक जैनों का मंदिर है।

माधुरीकुण्ड - राधा की सखी माधुरी के नाम से यहां एक कुण्ड है। बुध के दिन इस कुण्ड में स्नान करने से ६८ तीर्थ का फल होता है। यहां मोहनजी का मंदिर भी है। और एक छतरी और बाग है।

महोली—अर्थात् मधुपुरी। यहां मधुवन है। इसमें चारों ओर कदम्ब के वृक्ष हैं, बीच में ऊजड़ धरती पड़ी हुई है। पास ही एक कुंड है, उसमें अगिनित सांप रहते हैं परन्तु बिषैले नहो हैं। रानी वेजावाई ने इस कुंड का घाट बनवा दिया था। कुंड के किनारे पर कुंवर कल्यानराय का मंदिर है। और उससे मिली हुई बैठक बनी है। उसमें भादों की वनयात्रा करने वाले गुसाई स्वरूप ठहरते हैं। गाम की दूसरी ओर अनेक प्रकार के पेडों से ढका हुआ ध्रुव टीला है। और साम्ने एक वैरागी की मढ़ी है। मथुरा यहां से दो मील पर है। सुनते हैं कि पहिले यमुना ध्रुव टीले के नीचें वहती थी।

मघावली या महोधरपुरी—यहां कदमखन्डी है और दो छोटे मन्दिर हैं।

नैनूपट्टी—यहां एक छोटा सा मन्दिर ब्रजभूषण का है।

नहरावली—यहां एक चबूतरे पर बहुत प्राचीन महादेवजो हैं।

पैंठा (थ) गोवर्द्धन के पास है। यहां प्राचीन काल में चतुर्भुजजी का मंदिर था परन्तु औरंगजेब बादशाह ने उसको गिराकर नष्ट कर दिया। पीछें फिर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उसी स्थान पर एक मन्दिर तयार हुआ,वह भी अब जीर्ण हो रहा है। खेरा गाम के निकट जो कदमखंडी है उसमें यह मन्दिर विद्यमान है। यहां बहुत नीची धरती है--जो भूमि भाग सब से नीचा है,वह जल से भरा रहता है।उसकी नारायण सरोवर हो गयी है। जहां तहां इसमें पक्के घाट के चिन्ह भी हैं, और सीढियां भी मौजूद हैं। एक अद्भुत मड़ोड़दार कदम्ब का वृक्ष है,जिसको ऐंठ-कदम्ब बोलते हैं,और एक कंदरा है जो गोवर्द्धन तक चली गयी है।व्रज पर जब इन्द्र देवता ने कोप किया था,तब व्रजबासी इस कंदरा में जाकर छिपे थे।

गोवर्द्धन की सड़क पर परसौली के पास मोहवन है और मोहेश्वर महादेव का मन्दिर है। इन महादेव की पिंडी इतनी गहरी है कि किसी को पता तक नहीं मिला।इस मूर्ति पर बहुत बार मंदिर बनाने का उद्योग किया गया परन्तु नहीं बन सका।जब दीवार बना कर छत पाटने का समय आया,दीवार अपने आप गिर गई।परसों लोग तो यह कहते हैं कि इस गाम का नाम परसों इस कारण से हुआ है कि जब श्रीकृष्णचंद्र केशी दानव को मार कर अपने मित्रों से यहां मिले और उन्हों ने पूछा कि कब युद्ध हुआ,तब श्रीकृष्णचंद्र ने उत्तर दिया कि परसों।जब से इस गाम का नाम परसों हो गया। परन्तु आज कल के चिन्हों पर यदि ध्यान दिया जाय तो यह मालूम होता है कि परशुराम गाम से बिगड़ते २ परसों हो गया है,क्योंकि परशुराम-कुण्ड अब भी मौजूद है।

परशुराम कुण्ड के किनारे पर राधा मोहन का मन्दिर है।यह मन्दिर गिरवरदास बैरागी ने २००० रुपे लगाकर बनाया है। गाम के भीतर एक पुराना राधारमन का मन्दिर और है और महरोली की ओर खेड़े पर बलभद्रजी की मूर्ति है।

राधाकुण्ड - गोवर्द्धन से दो मील पर पर्वत की कोर पर है। यहां दो प्रसिद्ध कुण्ड हैं,एक राधा कुण्ड दूसरा कृष्णकुण्ड। जब श्री कृष्णचंद्र ने अरिष्ट गाम (अडींग)पर अरिष्टासुर का बध किया कि जो वृषभ (बैल) का रूप धर कर आया था,तब कृष्ण को वृषभ बध का दोष लगा। उस दोष के दूर करने को दो कुण्ड बनाये और सब तीर्थ बुलाये। सब तीर्थों ने अपना पवित्र जल कुण्ड में डाला। तब कृष्णचंद्र कुण्ड में स्नान करके शुद्ध हुए इस हेतु इन कुंडों में स्नान का अनन्त फल है। चार पदार्थ के देने

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हारे हैं। सन्तान की कामना से लोग कार्तिक बदी अष्टमी को आधीरात पर अपनी स्त्रियों के संग गांठ जोड़कर न्हाते हैं। इस दिन बड़ा भारी मेला होता है। वनयात्रा का यह भी एक धाम है। गिरिराजजी की परिक्रमा में यह गाम पड़ता है। बंगाली इसमें बहुत आ बसे हैं। यह राधिकाजी का धाम है। इस गाम की सीमा पर गोवर्द्धन की ओर कुसुम सरोवर और महाराज सूरजमल की छतरी है।

राजपुर—इस गाम में मल्हरराव सिंधिया की बनाई हुई लाल पत्थर की एक सुंदर बावली है, और दूसरी बावली गुपालराव की बनायी हुई है। दो बाग बहुत बड़े २ हैं कि जिनका पक्का परकोटा बना हुआ है—एक भतरोंड के मन्दिर के पास पारिखजी का है दूसरा गुजरात के सेठ बाबू खुशाल का है।

राल—यहां दो बहुत बड़े २ उपवन हैं और तीन मन्दिर हैं (१) बलदेवजी का (२) मोहनजी का (३) केशवदेवजीका। राल और बाटी के अधबीच एक बरसाखिडा है। यहां अहबासी अपने बच्चों को सुडाने के लिये लाते हैं। तीन देवी की मूर्ति यहां पर हैं एक के पद के पास बालक बैठा है दूसरी को गोद में है, तीसरी की भुजाओं पर है।

रसूलपुर—यहां रामदास बैरागी का बनाया हुआ एक पक्का तालाव है नरायणदास बोहरे की बनायी हुई एक धर्मशाला है और बलदेवजी का मन्दिर है।

सकीतरा—गोवर्द्धन का एक भाग है, इसमें गोवर्द्धन के बहुत से तीर्थ और मुख्य स्थान हैं १ मानसीगंगा—राजा रंजीतसिंह और बलदेवसिंह की छतरी ३ ग्वालपोखर ४ सूरजमल का बनाया हुआ चक्रेश्वर महादेवका मन्दिर ५ सेठ राधाकृष्ण और स्वामी निवासाचार्य्य का बनाया हुआ लक्ष्मीनारायण का मन्दिर ६ रानी रूप कुमरि और रानी अमृत कुमरि की दो छतरी।

सतोहा—गोवर्द्धन की सड़क पर है यहां पर सांतनकुंड है जिसका पहिले वर्णन होचुका है।

तोरसो—भरतपुर की सड़क पर है। यहां तालवन है, भादोसुदी ११ को मेला होता है। इस ताल वन में पीपल और नीम के पेड़ बहुत हैं। पास ही

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बलभद्र कुण्ड है। जिसको वेत्र गंगा भी कहते हैं। यहां कृष्णचंद्र ने धरती पर वेत मार कर आज्ञा की थी कि जल प्रकट हो, तुरन्त जल प्रकट हो गया। यहां पर एक छोटा सा मन्दिर दाऊजी का है, उस पर शिखर बना हुआ है। यह मन्दिर सवाई जयसिंह ने बनाया था, पास ही एक पक्का कूआ है जिसे बनारस के किसी रईस ने सम्बत् १८४५ में तयार कराया था।

ऊंचागाम—यहां कुसुदवन है। भादोंवदी ११ को एक मेला इस गाम में होता है। यह गांम सोंख की सड़क पर है, यहां पर कदम, करील, पापरी, पसेंदू, छोंकर और हिंगोरे का वन है। पास ही एक कुण्ड है जिस पर दस बारह योगियों के रहने के घर बने हुए हैं, और एक छोटा सा मन्दिर महादेवजी का है।

फरह

इस परगने में कोई तीर्थ स्थान दर्शनीय नहीं है।

परगना माट

यह परगना यमुनाजी के पूर्व तट पर जिला अलीगढ़ से मिला हुआ है। इसमें १४१ गांव हैं और अनुमान से एक लाख २४८ मनुष्य बसते हैं। इस परगने में एक बड़ी भारी झील है जिससे नौहझील एक गाम का नाम प्रसिद्ध हुआ है। यह झील कभी २ वर्षा ऋतु में छै मील लम्बा और एक मील चौड़ा हो जाता है।

माट—एक बस्ती है जिसमें न बाजार है, न अच्छे मकान हैं। मिट्टी के कच्चे झोंपडे बहुत हैं। यह गाम यमुना तट पर बसता है, परन्तु धार से एक मील दूर है। नाव में बैठ कर लोग यमुना पार जाते हैं पुल कोई नहीं है। चार मील पूर्व को चल कर वृन्दाबन का नाव का पुल है, जिस पर होकर वृन्दावन आना जाना होता है। मार्ग में मोती झील पड़ता है जो लम्बाई में कभी २ दो मील हो जाता है। यहां पुराना किला है, उसमें तहसील और पुलिस है। कोई वृक्षों का वन यहां नहीं है, परन्तु फिर भी माट उपवनों की गिनती में है। और वनयात्रा का एक स्थान है। इस स्थान का नाम माट इस कारण हुआ है कि यहां पर कृष्णचन्द्रजी ने बाल लीला के समय दूध का मांट (मटका) लुढ़का दिया था।

यमुना किनारे कुछ ऊपर को बढ़कर छाहरी गाम है जहां वेरहीं से ०-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

और कटीले वृत्तों की झाड़ी हैं कि जो भांडीर वन के नाम से प्रसिद्ध है। इस वन में एक नवीन छोटासा मन्दिर है धर्मशाला है और एक कूप है। बाहर की ओर वह वट का वृत्त है जिस तक कृष्ण बलराम और श्री दामा बदन बदकर दौड़ा करते थे। चैतवदी ८ को यहां एक बड़ा मेला होता है जिसमें विशेष कर बंगाली होते हैं। इस मेले का नाम ग्वाल-मंडल है। वन में जो मन्दिर है वह बिहारीजी का है और भांडीरवट के नीचे जो मन्दिर है वह श्रीदामा का है। गाम में तीन मन्दिर और हैं, एक राधा मोहन का, दूसरा गुपाल का, तीसरा महादेव का।

नोहझील—एक पुराना कसबा मथुरा से ३० मील पर है यहां कोई प्रसिद्ध देव तीर्थ नहीं है।

सुरीर—मांट और नोहझील के बीच में पक्की सड़क पर है पहिले सुग्रीव खेड़ा इसका नाम था। तीन छोटे २ मन्दिर इस गाम में हैं (१) महादेव (२) लक्ष्मी (३) नारायण।

अमानुल्लापुर---(या महमूदगढ़ी) यहां बावरे बाबा के दो मेला होते हैं, एक भादोंसुदी ८ को दूसरा चैतवदी १ को।

बेरा---यहां कदम्ब की झाड़ी है, जो अलखवन के नाम से प्रसिद्ध है और एक मन्दिर भी यहां है।

भदनवारा---एक बांकी नाम का कुण्ड है और कुण्ड पर बैरागी की मढी है। करील, पसेंदू आदि वृत्तों की एक बहुत बड़ी रत्ता भी है। जो यहां झूठ बोलता है, वह कोढ़ी होजाता है।

भद्रवन---मांट से आगे यमुना के तटपर है और व्रज के वनों में मुख्य और प्रसिद्ध है। इस वन में मधुसूदन और रनछोरजी के मन्दिर हैं।

भिदौनी---यहां बिहारीजी और लाडिलीलाल के मन्दिर हैं।

भियून---यहां विजय बिहारीजी का मन्दिर है।

बिजौली---इस गाम में १३४ बीघे का गहनवन है जो मेखवन कहलाता है। राधामोहनजी का मन्दिर भी है और पाप-मोचनकुण्ड है। वनयात्रा में यात्री यहां के दर्शन भी करते हैं।

चांदपुर---(छोटा) महादेवजी का मन्दिर है और कुआ है।

होली गुजर--(इलापुरी) यहां जमुना जी का घाट है। इसमें बल्देव जी का मन्दिर है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हौली जनारदार--यहां कदम्ब खन्डी है, गहवर कुण्ड है, तीन छोटे २ मन्दिर हैं ॥

जहांगीर पुर--यहां बेल वन है जो व्रज के वनों में परम पावन और प्रसिद्ध हैं। लक्ष्मी गुपाल का मन्दिर भी यहां पर बना हुआ है।

जरारा--यहां राधा गुपाल का प्राचीन मन्दिर है।

जावर--इसका दूसरा नाम झूनागढ था--यहां पर चन्द्रवन है चन्द्रावली सखी के नाम से प्रसिद्ध हुआ है--चन्द्रवन में पीलू, प्रसेंदू, कदम आदि बहुत प्रकार के वृक्ष हैं--कदम्ब के पत्ते प्याले के आकार के होते हैं और गरमी की ऋतु में बहुत बढ जाते हैं--यहां की कथा प्रसिद्ध है कि एक समय श्रीकृष्णचन्द्रजी को ग्वाल बालों के खान पान के लिये कटोरी आदि बर्तनों की आवश्यकता हुई, वह उनकी आज्ञा से कदम्ब के वृक्षों ने दूर की। तब से कटोरी के समान पत्ते लगने लगे। मान गढ़ी के बने में भी इस प्रकार के पत्ते हैं, इस गाम में आठ वैरागियों के स्थल हैं, गदर में यहां के जिमीदारों में और पचहरा आयर खेड़े के जिमीदारों में घोर युद्ध हुआ था जिसमें ४५० मनुष्य मारे गये थे--सोम्बार और शुक्र को यहां पेंठ लगती है।

झारजा--इस गाम में महादेवजी की मढी है।

झुसभिना (?)--यहां महादेव जी का मन्दिर है--बाराही देवी के दो मेले होते हैं चैत सुदी १५ और कुवार सुदी १५ को ॥

परगना महाबन

परगना महावन जमुना के तट पर है और व्रजमंडल का एक भाग है। इस परगने में दो सौ सोलह गाम हैं। उनमें नीचे लिखे हुए मुख्य हैं :—

आयरा खेड़ा--पहले ३६० गामों का जन्मदाता था अब २८ गाम का कहा जाता है। यह खेड़ा ऊजड़ होता जाता है यहां दो बार बराही देवी का मेला होता है।

राया--अलीगढ़ की सड़क पर मथुरा से ७ मील पर है। यहां निम्बारक संप्रदाय का एक वैरागी सरनामदास रहता है। पुलिस की चौकी के पीछे एक खेमरा नाम का तालाव है, एक ठाकुर द्वारा भी माट की सड़क पर है। यह रेल का पहला स्टेशन मथुरा से हाथरस की तरफ है।

अनौधा या आनौड़ा--यहां कदमखन्डी है, परिवास-कुण्ड है ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बांदो---इस गाम में एक बड़ा अठ पहलू तालाब है, उसके चारों ओर कदम के पुराने पेड़ हैं। कुण्ड के किनारे पर यशोदा जी की दासी बांदी और आनंदी के दो मंदिर हैं। एक बाग के निकट खेत में बलदेव जी और रेवती जी की पूरी मूर्तियें आधी गड़ी हुई हैं। गाम वाले उनको सपहरा सपहरी कहते हैं निम्बारक सम्प्रदाय के एक वैरागी की यहां मढ़ी है।

ईसापुर---ठीक मथुरा के सन्मुख जमुना तट पर है। इसका प्रसिद्ध नाम हंस-गंज है सूरजमल की रानी हंसकुमरि ने इसको बसाया था। यहां पर दुर्वासा-टीला है। यह टीला बनाया हुआ है, इसकी चोटी पर मकान बने हुए हैं। एक स्त्री की प्राचीन मूर्ति यहां पर दर्शनीय है और एक बावली भी टूटी फूटी दशा में विद्यमान है।

लोहवन--यह वन यात्रा का स्थान है। यहाँ कृष्णचन्द्र जी ने लोहासुर को मारा था--जिसका दूसरा नाम लोहजंघा था--इस गाम में कृष्णकुण्ड और गोपीनाथ जी का मंदिर है। यह मंदिर १७१२ ईसवी का बनाया हुआ है--बाहर मंदिर के लोहासुर दैत्य की लाल पत्थर की मूर्ति है। यहां लोहे का दान होता है और मथुरा के एक महाब्राह्मण के कुटुम्ब को मिलता है। कृष्ण कुण्ड के पास बहुत सुन्दर कदमखंडी है और उत्तर-पीपल के वृक्ष हैं। उनमें से एक के नीचे गोपकूप है, निकट दो गोपियों की मूर्त्ति हैं।

नागल-- राये के निकट है। यहां रामदास वैरागी का बनाया हुआ एक मंदिर है, और हाथरस के हेमराज की एक धर्मशाला है।

पचावर---गाम से बाहर महादेवजी का मंदिर है।

पानीगाम---फागुन बदी ११ को यहा फूलडोल का मेला होता है। इस गाम के सिमाने पर मान-सरोवरि है, राजा बल्लभगढ के लगाये हुये दो बाग हैं, दो छोटे से नवीन मन्दिर भी हैं एक सूरज मल की रानी मोहनी का बनवाया हुआ है। घना भी यहां का प्रसिद्ध है।

रावल--(राजकुल) यहां राधिकाजी के नाना सुरभान रहते थे। इस गाम में लाडिलीजीका एक मन्दिर है और भादों सुदी ८को एक मेला होता है। यह गाम गोकुल की परिक्रमा में पड़ता है--और जब तक बरसाने में लाडि-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लों जी का मन्दिर नहीं बना था, तब तक यात्रा का यह बहुत बड़ा स्थान था ॥

परगना सादाबाद

यह परगना मथुरा और महावन के पूर्व में है। इसमें १३१ गाम हैं। इस परगने में कोई बड़ा शहर नहीं है। सादाबाद आप एक बड़ासा गाम है। इस गाम में दो महादेवजी के मन्दिर हैं—एक हनूमानजी का है और दौलतराम सिंधिया का बनाया हुआ एक मुरली-मनोहर का मन्दिर है। दूसरा बड़ा गाम सहपऊ है। इसमें गाम के बाहर भद्रकाली का स्थान है जहां दशहरे को भैंसे का बलिदान होता है।

बिसावर—यहां बिहारीजी और महादेवजी के दो मन्दिर हैं और बड़े मियां की एक दरगाह है।

कुकरगमां—यहां कुकर देवी का एक प्राचीन मन्दिर है और चैतबदी ७ को फूलडोल का मेला होता है।

मांडौर—यहां एक पुराने से चबूतरे पर जो सिलिया कंकर का बना हुआ है, बहुतसी मूर्तियां और सिंहासन हैं, और आशावरी देवी का स्थान है।

ब्रज के पुल और घाट

नाम परगना	नाम गाम	घाट
कोसी	शाहपुर	नाव पड़ती है
	खैराल	तथा
	मभोई	तथा
छाता	शेरगढ़	नावका पुल
	वहटा	नाव लगती है
	सियारा (चीरघाट)	तथा
	भौगाम(नंदघाट)	तथा
मथुरा	सकरांया	तथा
	वृन्दावन(केसीघाट)	नाव का पुल
	पानीगाम	नाव पड़ती है
	मथुरा	पक्का पुल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोकुल	नाव का पुल
कोयला	नाव पड़ती है

पुलिस स्टेशन

शहर मथुरा में---(१)कोतवाली(२)सदर बाजार(३)भरतपुर की सड़क पर(४)वृन्दावन की सड़क पर।

परगना मथुरा में--(१)अडींग(२)औरंगाबाद(३)वृन्दावन(४)फरह(५) गोवर्द्धन (६) जैंत(७)ओल(८)रसूलपुर(९)सौंख।

परगना छाता में--(१)छाता(२)बरसाना(३)सहार(४)शेरगढ़।

परगना कोसी--(१)कोसी(२)मझोई।

परगना माट--(१)माट(२)नोहझील(३)सुरीर(४)राजन की चौकी।

परगना महावन--(१) बलदेवजी (२) हंसगंज की चौकी(३)महावन(४)राया(५) सोनई की चौकी।

परगना सादाबाद--[१]सादाबाद[२]मढ़पऊ[३]गोगले की चौकी।

ब्रज के पोस्टआफिस अर्थात् डांकखाने

मथुरा शहर और छावनी--१ अडींग २ बलदेवजी ३ वृदावन ४ छाता५ फरह ६ गोवर्द्धन ७ कोसी ८ महावन ९ माट १० नोहझील ११ राया १२ सादाबाद १३ सहार १४ बरसाना १५ जैंत १६ मझोई १७ ओल १८ रसूलपुर १९ शेरगढ़ २० सौंख २१ सुरीर २२

ब्रजलीला का संक्षेप

जिन दिनों में श्रीरामचन्द्र अयुध्या के राजा थे, जमुना तट पर एक सघन वन था जो मधुबन कहलाता था और जिस में मधु नाम का दैत्य रहता था। मधुवन में मधु दैत्य का किला था। जब मधु मर गया, लवण उसका पुत्र राजा हुआ। उस का गर्व दूर करने के लिये श्रीरामचन्द्रजी ने अपने भाई शत्रुघ्न को भेजा। शत्रुघ्न ने असुर को पराजय किया। दुर्ग उसका नष्ट कर दिया और मथुरा नगर बसाया। श्र यादवकुल के मूल पुरुष भोज नाम के राजा मथुरा में बहुत काल तक राज करते रहे--उनके कुल में सब से पिछले उग्रसेन नाम राजा हुए। उनके घर कालनेमि दैत्य ने आकर अवतार लिया, नाम उसका कंस हुआ। कंस ने युवा होते ही अपने पिता उग्रसेन को राजगद्दी से उतार दिया। आप राजा हो गया और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भांति २ के उपद्रव और अन्याय करने लगा। जब भूमि पर उस पापी के उत्पातों का भार न सहा गया, तब सब प्राणियों ने परमेश्वर की बिनती की---तिस पर आकाश बानी हुई कि वसुदेव जी का आठवां बालक कंस का काल होगा---वसुदेव जी को कंस की बहिन देवकी व्याही थी—जब वसुदेव व्याह करके चले और कंस ने आकाश बानी सुनी, तब ही खड्ग लेकर देवकी को मारने दौड़ा, परन्तु वसुदेवजी ने समझाया कि स्त्रियों का मारना बड़ा पाप है - देवकी के मारने से कुछ लाभ नहीं है। जितने बालक देवकी के होंगे उनमें से आठवां बालक आप को दिया जावेगा। कंस ने यह बात मान ली और वसुदेव देवकी को जाने दिया। परन्तु जब नारद मुनि ने आकर कंस को लकीर खींच कर समझाया कि हर एक बालक आठों में से आठवां गिनती में हो सक्ता है, इस हेतु आप को इस भरोसे पर कि केवल अन्त का आठवां बालक ही हमारा काल है बैठ न रहना चाहिये। कंस ने यह उपदेश सुनकर तुरन्त गोवर्द्धन से कि जहां वसुदेव और देवकी पहले रहते थे, बुलवा लिया और एक बन्दीग्रह में बंद करके पहरे चौकी बिठाल दिये जैसे २ बालक जन्म लेते गये वसुदेवजी कंस के आगे जाकर धरते गये और कंस निर्दयी उनका बध करता गया - देवकी को जब सातवां गर्भ हुआ, तब योग माया ने वह गर्भ वसुदेवजी की दूसरी स्त्री जी के उदर में उठा कर रख दिया---रोहिणी जी उन दिनों गोकुल में रहती थीं, उनके उदर से संकर्षण जी हुए कि जिनका प्रसिद्ध नाम बलराम और बलदेवजी है।

एक वर्ष पीछे भादों बदी ८ को आधी रात रोहिणी नक्षत्र में देवकीजी के उदर से श्री कृष्ण महाराज ने जन्म लिया। रात अंधियारी थी, मेघ दर्शन के लिये घिरे हुए थे। वसुदेवजी बालक को गोद में लेकर गोकुल को चल दिये---प्रहरे चौकी वाले सब माया मोह की नींद में सो गये कपाट अपने आप खुल गये। वसुदेव जी के पैरों की बेड़ी आप ही टूट गयी। बालक को लेकर वसुदेवजी जमुनाजी पर पहुंचे। इधर मेघ की झड़ी लगी हुई थी। अंधकार सघन छा रहा था—सामन भादों की जमुना जुदी बहराय रही थी, परन्तु पेट की आत्मा प्राण से भी प्यारी होती हैं, बालक के मोह ने उनको निडर बना दिया। वसुदेवजी प्राण का लोभ त्याग जमुना में धस गये। पानी में पग रखते ही जल ऊपर को और बढ़ा, यहां तक कि जितना वसुदेवजी बालक को ऊंचा उठाते गये उतना ही

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जल बढता गया (१) अन्त को बाल कृष्ण के पद परस कर जमुना जी थाह दे गयीं। निदान वसुदेव जी निकल दूसरी पार गये और नन्दराय जी के घर जाकर देखा तो किवाड़ खुले पाये और सब सोते पाये। यशोदा जी के उसी समय जोग-माया ने अवतार लिया था। वसुदेव जी कृष्णचन्द्र जी महाराज को यशोदा के पास छोड़ आये और योग माया को उसी तरह लाकर देवकी की गोद में रक्खा। गोद में रखते ही यह माया मयी लड़की रोने लगी--पहरेदार रुदन सुनते ही दौड़े और बालक को कंस के पास ले गये। कंस ने यह समझ कर कि यह बालक मेरा काल है, देवकी के रोने चिल्लाने पर कुछ ध्यान न देकर पत्थर पर बालक को दे मारा। योग माया बीच में ही से छूटकर यह कहती हुई कि कंस! तेरा काल व्रज में उत्पन्न हो चुका आकाश को उड़ गयी (२) और कंस मूर्छित होगया।

कंस की जब मूर्छा जगी तब देवताओं को कोसने लगा--और अपने राज भर में यह आज्ञा दे दी कि जो कोई देवताओं का पूजन करे उसे मार डालो और देवकी के पुत्र को ढूंढ़ो। जब बालक मारे जावेंगे तब मेरा वैरी आप प्रकट हो जायगा या उन्ही में मर जायगा--यह आज्ञा दे और सोच बिचार कर बसुदेव देवकी को बन्दि से छोड़ दिया। उन्हीं दिनों कंस की भेंट लेकर नन्दराय जी मथुरा आये थे--बसुदेवजी उनसे मिले और सब भेद कहा और रोहिणी के पुत्र बलराम को उनके संग कर दिया और बिनती की कि दोनों को संग २ पालिये--नन्दराय जी ने यह बात अंगीकार की। बलदेवजी को संग ले आये। इस तरह कृष्ण बलराम ने बालपन का कुछ भाग गोकुल में यशोदाजी के पास व्यतीत किया।

गोकुल में कृष्ण भगवान् को बसते बहुत दिन नहीं हुए थे कि रात के समय कंस की भेजी एक पूतना नाम राक्षसी आयी और कृष्ण को अकेला सोते हुए पाकर उसने गोद में उठा लिये और विष-भरे आंचरों का दूध पिलाने लगी।

(१) इस कृष्ण लीला के स्मरण में "वासुदेव कटोरा" के नाम से एक खिलोना बनता है। यह खिलोना पीतल का होता है, बीच में आदिमी की मूर्ति, बालक गोद में लिये होती है पानी डालने से बालक के पावों से ऊंचा नहीं चढता नीचें होकर निकल जाता है।

(२) यह स्थान जहां जोगमाया पत्थर पर पटकी गयी थी मथुरा में जोग घाट पर है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

और बालक तो विष के दूध की एक बूंद पीते ही प्राण छोड़ देता, परन्तु कृष्ण महाराज जान गये और दूध के संग उसके प्राण खींचने लगे। निदान राक्षसी महाघोर शब्द करती हुई धरती पर आपड़ी और तुरन्त मर गयी। व्रजबासी पूतना का भयानक शब्द सुन घबराते हुए घरों से भागे आये और कृष्णजी को मरी हुई पूतना की छाती पर खेलते पाया—एक दिवस यशोदाजी कपड़ा धोने के लिये यमुनाजी को गयी, कृष्णचन्द्रजी को शकट (गाड़ी) के नीचे सोता हुआ छोड़ गयी। कन्हैयाजी भूख के मारे जग पड़े और लातें मार कर गाड़ी का चुरकट कर दिया और शकटासुर का भी बध किया। दूध दही के मटका मटकी सब लौट दिये। यशोदा रुदन का शब्द सुन दौड़ी आई, परन्तु बाल कृष्ण जी को सोते पाया। एक दिन कंस का भेजा हुआ तृणावर्त नाम असुर आया और कृष्ण महाराज को पवन के चक्कर में डाल कर उड़ा ले गया। परन्तु बाल-प्रभु का बोझ न सहारा गया, निदान दैत्य दब कर मर गया।

जब कृष्ण कुछ बड़े हुए, तब बड़ी चपलता करने लगे। वह घुटनों चलकर गोशाला में पहुंच जाते थे और वहां जाकर गाय बछड़ाओं की पूंछ मरोरा करते थे। दूध की दुहनी और मठा दही के माट औंधा देते थे और हाथ की उंगलियों से दही माखन निकाल मुख और वस्त्र लपेट लेते थे--एक दिन यशोदाजी ने क्रोध करके कृष्णचन्द्र को दामरी लेकर उलूखल से बांध दिया और आप घर के धंधे में लग गयी। बालकृष्णजी महाराज ने उलूखल को घसीट कर यमलार्जुन वृक्षों में अटका दिया और एक झटका मार कर दोनों वृक्षों को धरती पर गिरा दिया। भूचाल का सा भारी शब्द सुन कर नगर के लोग दौड़े आये, वृक्ष की डालियों से आधा गाम ढका हुआ और दो गुद्दों के बीच में हंसते हुए श्रीकृष्णको देखा (१) नंदरायजी ने जब नित ये उत्पात देखे तब यह बिचार किया कि कहीं वृन्दावन के निकट चल वसें, जहां गायों के लिये अच्छा चारा

---

(१) जो लीला गोकुल की हैं, वे सब वहां की थीं जहां अब महावन वसती है। वहां ही यमलार्जुन दोनों वृक्षों का स्थान है, वहीं पूतना, तृणावर्त, शकटासुर के बध की जगह है। यमुना के उस पार जो कोयिला गाम है, वह पूतना की देह के कोयला वहकर पार पहुंचने से हुआ है और कोई यह कहते हैं कि जब वसुदेवजी कृष्णको गोद में लिये डूबने लगे, तब उन्होंने पुकार मचाई कि कोई लो कोई लो इससे कोयला नाम हुआ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मिलै और हम इन उपद्रवों से बचें। सात वर्षकी आयु तक कृष्ण वहां जाकर रहे थे। परन्तु वृन्दावन में इतने नहीं रहे, जितने यमुनाजी की दूसरी पार मांट गाम के निकट रहे थे। यहां कृष्ण बलराम वन में बिचरते थे, मोर मुकट और वन माल धारण करते थे, बंशी बजाकर मधुर स्वर से गाते थे और धेनु चराते थे। सांझ को गाय घेर कर खरिक को ले आते, दिन में भांडीरवट (१) की छाया में ग्वाल बालों के साथ अनेक प्रकार की लीला करते थे।

इस नवीन स्थान पर भो दैत्य उनको बिना दुख दिये नही रहे। पांच बर्ष की आयु में कृष्णचन्द्र गाय चराने को यमुना तट पर गये, वहां वच्छासुर ने उनको आ घेरा (२) कृष्ण ने उसको मार गिराया, इतने में वकासुर ने आकर अपनी माया फैलायी, वगला बनकर असुर पर्वत के निकट बैठ गया। जब उसको देखने के लिये पास गये, तो कृष्ण समेत सबको निंगल गया। कृष्णचन्द्र उदर के भीतर जाय कर ऐसे तप्त होगये कि उसको उगिलतेही बनी। बाहर आकर कृष्णचन्द्र-जी ने उसे चोंच पकड़ कर चीर डाला।

एक और दिन कृष्णचन्द्र का सखा तोष (३) और थोड़े से और ग्वाल वाल खेल रहे थे। उन्होंने एक कंदरा सी देखी। उन्होंने उस समय यह नहीं जाना कि यह कंदरा नहीं है अघासुर का मुख है। ये बालक उसमें उझक रहे थे कि अघासुर ने लम्बी सांस ले सबको उदर के भीतर खींच लिया। कृष्णचन्द्र भी उन ग्वाल वालों के संग अघासुर के उदर में चले गये और वहां सबको धीरज वधांया और अपना उदर इतना बढाया कि अघासुर का उदर फट गया और सब ग्वाल वाल बाहर निकल आये।

इस तरह एक दिन कदम्ब के वृक्ष के नीचें कृष्ण और वलराम ग्वाल वालों समेत छाक खा रहे थे, इतने में बछड़े दृष्टि से बाहर होकर दूर निकल गये। ब्रह्माजी माया के भ्रम में आकर सब वछड़े चुराले गये (४) ग्वाल बाल गाय

---

(१) छांहरी गाम के पास मांटसे कुछ ऊपर बेर आदि करीलें वृक्षोंका बन है वह भांडीर बन कहलाता है---थोड़ी बाहर बनके भांडीर वट एक पुराना बट वृक्ष हैं।

(२) यह लीला बच्छाबन में सेही गाम के निकट कीथी।

(३) इसी से परगने मथुरा में एक गाम का नाम तोस है।

(४) यह लीला कृष्णमहाराज ने खादिर बन में कीथी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बछड़ों की खोज में चारों दिशा को उठि धाये – परन्तु श्रीकृष्ण अपने स्थान से न हिले--उन्होंने अपने गाय बछड़े नवीन बना लिये--कुछ देर जब ग्वाल बालों की बाट देखते हो गयी तब उन्होंने यह जान कर कि ब्रह्माजी ग्वाल बालों को भी चुरा ले गये, नवीन ग्वालबाल वैसे ही और बना लिये और बने हुए ग्वाल बाल और बछड़ों समेत अपने घर को आये--वर्ष दिन तक यही दशा रही। माया रूपी ग्वाल बाल और गाय बछड़े नित वन में चरने को जाते थे और नित लौट कर घर आते थे परन्तु यह भेद किसी को मालूम न था--ब्रह्माजी ध्यानमें लग गये, जब वर्ष दिन पीछे समाधि छूटी--तब ब्रज की बिना ग्वाल बाल और गाय बछड़ों की उजाड़ दशा सोच कर देखने आये, परन्तु कृष्णचन्द्रजी की माया रूपी ग्वाल मंडली और गाय बछड़ों को देखकर चकित रह गये। कृष्ण भगवान् की ब्रह्माजी ने बहुत स्तुति की और गाय बछड़े और ग्वाल बाल कंदरा में से निकाल कर सन्मुख ला खड़े किये।

एक दिन श्रीकृष्ण यमुना तीर पर भ्रमण कर रहे थे। फिरते२ उस स्थान पर पहुंचे जहां ऊंचा कदम्ब का वृक्ष था -वह उस कदम पर चढ़ कर यमुनाजी में गेंद निकालने के लिये कूद पड़े--जहां पर कालीनाग रहता था वह निकल कर देह से लिपट गया और फन मारने लगा--नंद यशोदा और बलराम यह सुन घबरा कर दौड़े आये--और श्रीकृष्ण की दशा देखकर चित्र के से काढ़े रह गये, परन्तु कृष्ण महाराज मुसकरा कर काली नाग के फंदे से झट निकल गये--और एक फन उसका पकड़ कर यमुना तट पर रगड़ दिया और फिर चढ़कर फन२ पर नृत्य किया--काली नाग इस दुःख को न सह सका उसकी नागिनि दौड़ी आयी और बहुत विनती कर उन्होंने अपने पति के प्राण बचाये--इधर कालीनाग ने भी दीन स्वर से क्षमा मांगी। तब कृष्ण भगवान् ने उसको जीवदान दिया, परन्तु कुटुम्ब सहित काली को रमणक द्वीप में भेज दिया और उसके माथे पर अपने चरण चिन्ह कर दिये जिससे गरुड़ फिर न सतावें।

इसके पीछे कृष्ण बलराम वन २ बिचरते हुए तालवन पहुंचे--और वृक्षों को हला कर फल झारने लगे। यहां धेनुक नाम असुर रहता था, वह शब्द सुन कर उन पर दौड़ा--बलरामजी ने उस रासभरूप राक्षस को पछाड़ कर मार डाला और भांडीर वट पर आये। रात को भांडीर वन में बड़ी आंधी आई और घास में बिजली से आग लग गई और सब वन में फैल गयी। गाय और ग्वाल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वहां से तित्तर वित्तर होकर भागी। कृष्णचन्द्र ने पुकार कर कहा कि आंख मूंद कर खड़े होजावो उनके आख मूंदते ही दावानल विलाय गया, आंख खोलकर देखा तो सुन्दर चन्दा की चांदनी वन में खिली हुई दृष्ट आयो।

८/ एक दिन कृष्ण बलिराम श्रीदामा सखा के संग भांडोर वट तक दौड़ कर रहे थे--प्रलंव असुर ने आकर कहा कि मुझे भी संग दौड़ने दो--दौड़ में बलिराम प्रलम्ब से जित गये--दौड़ के नियमानुसार बलदेवजी प्रलम्ब को पीठ पर चढ़ाकर ले जाने पड़े प्रलम्ब वलरामजी को ले भागा और अपना असुर रूप प्रकट करके मारने का उपाय करने लगा, परन्तु बलिरामजी ने उसको जांघों में दवा कर चूर कर दिया और मुष्टिक मार कर सिर फोड़ दिया। राक्षस इस मारके मारें मर गया--वलदेवजी के सखा यह अपूर्व वल देखकर बहुत प्रसन्न हुए और वलराम नाम रख दिया।

कृष्ण महाराज की वाललीला तो विचित्र थीं। एक दिन व्रज युवतियों को जमुनाजी में नग्न स्नान करते देखा, उनके सव वस्त्र चुरा कर कदम्ब पर चढ़गये और उनको खिजाने लगे। व्रजबालाओं ने बहुत बिनती की, परन्तु उस समय तक उनके चीर नहीं दिये जव तक नंगी नारी हाथ जोड़ें अपने आगे जल में से बाहर न बुलालीं। इस लीला से यह सिखाया कि जल का देवता बरुण है। जल में नग्न होकर स्नान न करना चाहिये। दूसरे यह कि ईश्वर के सन्मुख लज्जा का करना वृथा है।

एक वर्ष वर्षा ऋतु वीतें सव ब्रज वासी इंद्र की पूजा की तैयारी घर २ करने लगे—श्रीकृष्ण के मन यह वात न भायी—और नन्द वावा से विनती कर बोले—"महाराज! हमारे परम पूजनीय देव तो गिरिराज जी हैं, इन्हीं से हमारा और हमारे गोधन का पालन होता है। यदि ये क्रोध कर उठें तो हमारा वचना कठिन है, इस हेतु इनको पूजना चाहिये, इन्द्र की पूजा से कुछ लाभ नहीं है—व्रज वासी लोग इन्द्र की पूजा छोड़ गिरिगोवर्धन की पूजा करने गये--कृष्णचन्द्र जीने उस समय दो रूप धारण किये, एक रूप से गिरिराज की चोटी पर निकल कर खड़े होगये और पूजन का पकवान भोग लगाते गये, दूसरे रूप से व्रजवासियों में मिले रहे और बड़ी भक्ति और श्रद्धा से पूजा करते कराते रहे—इन्द्र ने यह अपना अपमान देख व्रज पै चढ़ाई की और श्याम घटा चारों ओर से घिर आई, बिजुली जुदी चमक ने लगी---इन्द्र देवता ने व्रजको खोदकर बहा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ना चाहा--परन्तु श्रीकृष्ण महाराज ने कन अंगुरिया पर गिरिगोवर्द्धन को उठा लिया और सात रात और दिन इन्द्र के प्रचण्ड कोप से व्रजकी रक्षा की। ग्वाल वाल, गाय और व्रज वासी सब गिरिराज के नीचे खड़े रहे। इन्द्र की जब कुछ न बस्यानी, तब अपने दल बादल को व्रज से हटा लिया। व्रजवासी निर्मल आकाश देख कर अपने२ घर गये और नन्द नन्दन की सराहना करने लगे---इन्द्र ने भी श्री कृष्ण के निकट आकर अपना अपराध क्षमा कराया। जब श्रीकृष्ण बारह वर्ष के हुए तब नन्दराय जी अपनी पूर्व मानता के अनुसार सकुटुम्ब देवी पूजने गये---देवी का पूजन कर जब रात को सो गये, तब एक अजगर ने आकर नन्दबाबा का पद पकड़ लिया और निगल चला---नंदराय जी व्याकुल हो चिल्लाने लगे--- श्री कृष्ण ने उनका चिल्लाना सुन अजगर के मस्तक पर पद रख दिया पद परसते ही वह अजगर दिव्य-तन-धारी पुरुष होगया। बहुत काल हुआ कि वैकुंठ के पार्षद सुदर्शन ने अपने रूप के घमंड से अंगिरा ऋषि का अपमान किया था। उनके शाप से वह अजगर होगया--और श्री कृष्णचन्द्र के पग परस कर उसने मुक्ति पायी।

व्रज की युवती कृष्णचन्द्रजी की ये बाल-लीला देखकर प्रेम में डूब गयी और मधुर बन्शी की ध्वनि सुन कर मोहित होगयीं। शरद की रात उनके संग वन में रास करने को पहुंचीं। श्री राधारानी सब गोपियों में मुख्य श्रीकृष्ण महाराज की विशेष प्यारी थीं।

एक रात को वंशी की ध्वनि सुन व्रजनारी वनको दौड़ीं जातीं थीं कि बीच में शंखचूड़ ने उनको आ घेरा। श्रीकृष्ण बंसी और मुकुट धरती पर पटक उस दुष्ट के पीछे दौड़े और केश पकड़ कर उसे दे मारा और उस का सिर काट लिया-- और मणि उसकी छीन ली कि जो लाकर बलरामजी को देदी।

एक समय श्री कृष्णचंद्र गोपियों के संग रास कर रहे थे, इतने में अरिष्टासुर बैल का रूप धर कर आया और कृष्णचन्द्र जी पर मारने को दौड़ा--कुछ देर तो कन्हैया जी उसकी ढिटाई देखते रहे, अन्त को सींग पकड़ उसको धरती पर दे मारा और गर्दन मरोड़ दी कि उसके प्राण निकल गये--यह देख ग्वाल बाल प्रसन्न हुए, परन्तु बैल मारने की हत्या श्री कृष्णजी को लगी--श्री कृष्णचन्द्र ने सब तीर्थ बुलाये और तीर्थ रूप धारण कर गोवर्द्धन आये और वहाँ अपना पवित्र जल एक कुंड में डाल गये। कृष्ण महाराज ने उस कुंड में स्नान कर पाप दूर कर दिया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जब श्रीकृष्ण की इन अद्भुत लीलाओं का समाचार कंस ने पाया तब मारे भय के कांपने लगा-- और यह जान लिया कि मेरा काल व्रज में आ पहुंचा। सोच बिचार कर यह प्रकट किया कि हम धर्म यज्ञ करेंगे जिससे कि कृष्ण बलराम भी कौतुक के मारे चले आवें।यादवों में अक्रूरजी का कंस को बिश्वास था। उनको बुलाकर नन्दराय जी को निमंत्रण (नोंता) भेजा।अक्रूर जी जब तक पहुँचने भी न पाये कि कन्स ने घबरा कर के केशी दानव को भेज दिया।केशी दैत्य घोड़े का रूप धर वृन्दावन के निकट वन में आया और दौड़ भाग कर गाय बछड़ों को तित्तर वित्तर कर दिया और मुख फाड़ कर कृष्ण पर दौड़ा। कृष्ण चन्द्रजी ने अपनी भुजा उसके मुख में घुसेड़ दी और चीर कर उसके शरीर के दो टुकड़े कर डाले।किसी का इस युद्ध की ओर ध्यान न गया।श्रीकृष्ण फिर आ कर ग्वाल वालों से आंख मिचौंनी खेलने लगे — उस समय व्योमासुर ग्वाल वन कर प्रकट हुआ --- और मिल कर खेल खेलने की प्रार्थना की --- जब ग्वाल वालों ने उसको अपने संग मिला लिया तब यह कहने लगा कि "आंख-मिचौंनो तो खेल चुके अब भेड़ भेड़िया खेलो --- जब ग्वाल वाल इस खेल पर राजी हुए तब सच मुच भेड़िया बन कर बैठ गया --- और ग्वाल वालों को खाने लगा---श्रीकृष्ण उसको बिल में से पकड़ कर खींच लाये और गला घोंट कर मार डाला---इस के कुछ दिन पीछे कंस ने अक्रूर जी को नंदराय के पास छल का नोंता देकर भेजा और नंद जी को कृष्ण बलिराम समेत मथुरा बुलाया --- व्रज वासियों को कृष्ण का मथुरा जाना न भाया।सब सोचते हो रह गये।कृष्ण बलराम नंद बाबा के संग बड़े उत्साह से चल दिये --- जब मथुरा के निकट पहुंचे तो राजा कंस के धोवी को गधों पर धुले कपड़ों का बोझ लादे नगर की ओर जाते देखा --- कृष्ण बलराम ने धोवी से कहा कि हम राज दरवार को जाते हैं, अच्छे अच्छे कपडे हम को दे दो--- उसने मुंह बना कर नाहीं कर दी--कृष्ण बलराम ने सब कपड़े छीन लिये और उलटे सीधे जैसे बने मन मानते पहन लिये--इतने ही में एक दरजी मिल गया।उसने काट कपट कर वस्त्र ठीक कर दिये-- सुदामा माली ने सुन्दर माला पहना दी मथुरा की गलियों में श्रीकृष्ण बलराम राजकुमार की भांति सज धज से जा रहे थे कि मार्ग में कुवरी मिली।उसने कृष्णचन्द्रजी के शरीर में चन्दन लगा दिया।कृष्ण महाराज ने प्रसन्न होकर एक पग उसके पग पर रख और ठोड़ी के नीचे हाथ लगाकर उसका कूवर दूर किया---और तब से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुवजा परम सुंदरी होगयी। भगवान् ने उसे अपना भक्त जान अपनाया, आगे बढ़कर देखा तो राज महल के अगले चौक में एक बहुत बड़ा बिचित्र धनुष पड़ा हुआ है, युद्ध से प्रथम योद्धाओं के बलको जांच इस धनुष के उठाने और चढ़ाने में होती थी--कृष्णचन्द्रजी ने यह धनुष उठा लिया और तुरन्त तोड़ डाला। --पहरे वाले आयुध लेकर लड़ने को दौड़े, परन्तु कृष्णचन्द्र ने सब मार गिराये--दूसरे दिन नन्दराय कृष्ण बलराम को संग लेकर रंग भूमि में गये जहां कंस ऊंचे सिंहासन पर बैठा था। द्वार पर पहुंचते ही कुवलिया पीड़ हाथी से मुठभेर हुई--कंस ने यह हाथी इस हेतु द्वार पर खड़ा कर दिया था कि कृष्ण बलरामको भीतर प्रवेश करते ही पैरों से पीस डालेगा--परन्तु कृष्णचन्द्रजी कुछ देर तक उसके साथ खेलते रहे, अन्त को पूंछ पकड़ कर और घुमाकर धरती पर दे पटका और निर्जीव कर दिया--दांत उसके उखाड़ कर दोनों भाइयों ने हाथ में लेलिये और रंग भूमि में जाकर सबको चिनौती दी--इस पर चाणूर और मुष्टिक दोनों युद्ध करने को बढे--चाणूर कृष्ण से आकर लिपट गया और मुष्टिक बलरामजी से। इन दोनों मल्लों को भी कृष्ण बलराम ने मार गिराया--यह देख कंस उच्च स्वर से पुकारा कि पहरे वाले कहां गये? इन ढीठ बालकों को और बसुदेव उग्रसेन को क्यों नहीं मार गिराते? श्रीकृष्ण यह सुनते ही धर कूदे और सिंहासन के निकट जाकर कंस दुष्ट का जूट पकड़ लिया। कंस बहुतेरा बिलबिलाया, परन्तु इन्होंने उसे मार कर नीचे गिरा दिया--और मृतक देहको घसीट कर यमुना पर ले आये--और तट पर बिश्राम करने को बैठ गये--इस कारण उस स्थान का नाम बिश्रान्त घाट हुआ--कृष्णचन्द्रने अपने मामा कंस का दाह-कर्म किया। कंस की विधवा स्त्रियों को समझा बुझा कर धीरज बंधाया--उग्रसेन को राज गद्दी पर बिठाया और मथुरा में फिर आनन्द-मंगल छाया।

श्रीकृष्णने कुछ काल मथुरामें रहना पसंद किया। नन्दरायजी को ज्यों त्यों कर वृन्दावन लौटा दिया--और कह दिया कि माता यशोदा सोच न करें हम दोनों भाई शीघ्र ही वृन्दावन आकर उनके दर्शन करेंगे--मथुरा में रहकर अपना संस्कार कराया और फिर उज्जयन बिद्या पढ़ने के लिये गुरु काश्य के घर गये। थोड़े दिन में सब विद्या पढ़ कर पंडित होगये--गुरु कृष्णचन्द्र की ईश्वरता पहचान गये और चलती बार गुरु ने यह गुरु-दक्षिणा मांगी कि मेरे पुत्र को मुझे लादो--वह प्रभास तीर्थ में न्हातीवार समुद्र की लहरों के संग वह गया है--कृष्ण

आम्नाय-ग्रन्थालय,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चन्द्रने समुद्र से इस अपराध का उत्तर मांगा।मालूम हुआ कि पांचजन नाम राक्षस उस बालक को खागया।तब कृष्णचन्द्र बलरामजी को संग ले यम पुरी पर चढ़ गये--और ब्राह्मण के पुत्र को वहां से ले आये।

कंस की विधवा रानियां मगध देश में अपने पिता जरासन्ध पर जाय पुकारीं।जरासन्ध ने सेना संग लेकर मथुरा आ घेरी--कृष्ण और बलराम ने रनभूमि में जाकर शत्रु दल को पराजय किया और जरासंध को पकड़ लिया--परन्तु दया मान कर छोड़ दिया--जरासन्धने इसका कुछ उपकार न माना, दूना दल ले कर फिर चढ़ आया--परन्तु फिर उसकी पराजय हुई--इसी प्रकार १७ वार जरासन्ध की हार हुई।अठारवीं वार उसने काल यवन की सहायता ली।यह देख कृष्णचन्द्र ने अपने भक्तों के लिये समुद्र में रात भीतर में द्वारिकापुरी बसाई और सोते ही सोते सब वहां पहुंचा दिये।नगर निवासियों की प्रात:काल समुद्र के शब्द से आंख खुली तब यह भेद मालूम हुआ कि कृष्णचन्द्रने यह नवीन नगर फिर बसाया।काल यवन से लड़ने को मथुरा आये, काल यवन को पराजय किया, सेना उसकी भगा दी और उसे भस्म कर दिया, परन्तु जरासन्ध के कोप से बचने के लिये कृष्ण बलराम किसी यतन से निकल गये और इस रीति से मथुरा जरासन्ध के अधिकार में आगयी।

इस युद्ध के पीछे कृष्णचन्द्र बडे तेज प्रताप पूर्वक द्वारिका में राज करते रहे और रुक्मिणीजी की सुन्दरता के समाचार पाकर उनके पिता के घर से उनको हर लाये और घर लाकर विवाह कर लिया।इसी तरह और भी अनेक विवाह कृष्ण महाराज ने किये--व्रज वनिताओं से अलग अन्त तक द्वारिका में रहे। कुटुम्ब परिवार की वृद्धि भी बहुत हुई, यह कृष्णलीला है कि जिसकी पावन रंगभूमि यह व्रज चौरासी कोस के बीच में है।

व्रज के मुख्य घराने

व्रज में बसते तो अनेक हैं और सब प्रशंसनीय और दर्शनीय हैं, क्योंकि उनके धन्य भाग्य समझो कि जिन्होंने पावन व्रज भूमि में जन्म पाया है, परन्तु सबमें प्रसिद्ध और योग्य हमारे सेठ साहब श्रीलछमण दासजी सी-आई-ई-हैं कि जिन्होंने अपनी उदारता और सौम्यता से लोगों के मन वश कर रक्खे हैं-उक्त महाशय जाति के वैश्य हैं और वैष्णव धर्म रखते हैं।सेठ मनीराम लक्ष्मीचन्द की कोठी के स्वामी हैं।इस कोठी के स्थापन करने वाले एक गुजराती

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ब्राह्मण श्री वल्लभाचार्य्य सम्प्रदाय के थे। वह ग्वालियर राज में कोशाध्यक्ष (खजानची) थे, उप नाम उनका पारिखजी था और असली नाम गोकुल दास था। इनके कोई संतान न थी, भाई से विरोध था, इसलिये कुल अपना धन मनीरामजी को दे दिया। सेठ मनीराम जी १८३८ ई० में मरगये। उन्होंने तीन पुत्र छोड़े, बड़े इनमें लक्ष्मीचन्द थे कि दूसरे देशों में अबतक प्रसिद्ध हैं। इन्हों ने भी सन् १८६६ में परलोक वास पाया। केवल एक पुत्र रघुनाथ दास छोड़े कि वह भी अब मरगये। सेठ रघुनाथ दास बहुत काम काज में मन नहीं लगाते थे, इस लिये सब काम उनके दोनों चचा सेठ राधा कृष्ण और सेठ गोविंद दास के हाथ में पहुंच गया। इनके कुल में जैन-धर्म चला आता था, परन्तु स्वामी रंगाचार्य्य के उपदेश से ये दोनों वैष्णव होगये और एक बहुत बड़ा मंदिर रंगजी का वृन्दावन में बनाया।

सेठ राधाकृष्ण सन् १८५९ में मरगये सेठ गोबिन्ददास — सी — एस — आई कुल के प्रवन्धकर्त्ता रहगये। सन् १८७८ में यह भी स्वर्गवासी हुए। इस समय सेठ लक्ष्मीचन्द के पुत्र सेठ रघुनाथ दास और सेठ राधाकृष्ण के पुत्र सेठ लक्ष्मणदास सेठजी के विभव के स्वामी हुए। अब अकेले श्री लक्ष्मण दास जी सब सम्पत्ति के स्वामी हैं। सेठ जी की कोठी का काम सेठ मंगीलालजी के सुपुर्द है, कि जो अत्यन्त योग्य और सेठजी के परम शुभचिन्तक हैं और स्वभाव के गंभीर और मृदु हैं। उनके दो सुयोग्य पुत्र लाला नारायण दास और लाला श्री निवास दास सेठजी के हित चित्त से सहायक थे और समस्त प्रशंसा और बड़ाई के मुख्य कारण थे। सेठ नारायण दास रंग मन्दिर की कमेंटी के कार्य्य कर्त्ता मेम्बर और सिक्रेटरी थे और जितने राजकीय काम इस कुल से संवध रखते हैं उनका निर्भर इन्हीं महाशय पर था। दूसरे हमारे माननीय मित्र बड़े विद्वान् गुण ग्राही और सुयोग्य कवि थे कि जिन्होंने बहुत पुस्तकों की रचना की और सेठ मंगीलाल जी के तीसरे पुत्र लाला बद्रीदासजी मंगल आनन्द की मूर्त्ति हैं। शो- न/ पश्चात्ताप है कि सेठ मंगीलाल जी के दोनों ज्येष्ट पुत्र मर गये, सेठजी का कुल सदा राज भक्त रहा है। सरकार की बड़ी२ सहायता करता रहा है और सदा नेकनाम रहा है। इसका उपकार और उदारता का यश दूर दूर तक छा रहा है।

दूसरा घराना जाट ठाकुरों का है। इस घराने में अब राजा हरनारायणसिंह हैं---पहिले हाथरस में ठाकुर दयाराम सिंह थे जो अंगरेजों के संग लड़े थे। उन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

के पुत्र राजा गोविन्द सिंह हुए, राजा गोविंद सिंह के दत्तक पुत्र राजा हरनारायण सिंह हैं। वह वृन्दावन में रहते हैं। राजा गोविन्द सिंह ने गदर में सरकार की खैरख्वाही की उसके बदले में बहुतसी जायदाद मिली है।

व्रज के राजा महाराजा जसवंतसिंह भरतपुर वाले हैं इनका राज पहले व्रज में था अब भी उनके गाम, और मंदिर, मकान, छतरी, कुंज घाट, आदि अनेक स्थान हैं--गोवर्द्धन से कुछ आगे उनके राज की सीमा है। चार मील पर दीघ एक पुराना नगर है, वह महाराज के राज्य में है--इस दीघ को लठावन भी बोलते हैं। दीघ के भवन प्रसिद्ध हैं, महाराजा भरतपुर के वनाये हुए हैं। एक बहुत बड़ा बाग है उसमें कितने ही महल वने हैं जो भवन कहलाते हैं--सामन भादों वनी हुई हैं फब्बारे के महल हैं कि जहां गरमी की ऋतु में भी सामन भादों दरस उठती है।

इनके सिवाय और भी बहुत से वर्णनीय कुल हैं, परन्तु पुस्तक के बिस्तारके भयसे नहीं लिखे। केवल चौबोंका और वंदरोंआदिका कुछ वर्णन करना अवश्य है।

मथुरा के चौबे प्रसिद्ध हैं--इनमें बड़े २ धनी हैं, वली हैं, परन्तु विद्या के वैरी हैं--यमुना तट बैठकर जन्म पूरा करते हैं, पढ़ते लिखते एक अक्षर भी नहीं है--भोजन को भली भांति पहचानते हैं। घी, मिष्टान्न-रहित भोजन को भूत भोजन कहते हैं। लड़वा पेड़े तो चाहै वर्षों तक खाते रहैं, विजिया इनकी जन्म घुटी है। व्यायामकरते हैं, मल्ल युद्धमें मथुराकी कीर्ति दूर२फैलाते हैं--स्वभावके भी मधुर होते हैं--कटु वचन कहकर दूसरे को दुख नहीं देते। संतोषभी इतना है कि याचक में होना कठिन है--यात्रियों को सुख उनसे बहुत मिलता है--मिथ्या बात कह कर किसी को छलते नहीं, कपट उनके पास नहीं--मिलनसार, बहुत प्रसन्न कर के लेने वाले, आप दुख सहकर यात्रियों को सुख देने वाले, कहने में बड़े चतुर और निडर, निदान चौबे जितने हैं, उनमें खोजने से भी कोई मलीन मुख न मिलैगा। सब को चैतन्य और प्रसन्न हमने देखा है--इनकी स्त्रियां इनसे भी अच्छे स्वभाव की और देवी-स्वरूपा हैं।

मथुरा के बन्दर भी चौबों से कम प्रसिद्ध नहीं हैं। हाट, वाट, घाट सब बन्दरों से भरे हुये हैं। कोई स्थान बिना वंदरों के देखने में नहीं आता। भांति २ के उपद्रव नित करते हैं। नगर के लोग और यात्रियों को बहुत कष्ट पहुंचाते हैं। प्रति वर्ष दश बीस मनुष्य को छतसे गिराकर यमलोक में पहुंचाते हैं। वंदरों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की लीला वर्णन से बाहर है, कुछ पकड़ कर बनों को भेज दिये गये परन्तु फिर भी चौबों से कम नहीं हैं।

चौबे और बन्दरों के सिवाय मथुरा के कछुवे भी प्रसिद्ध हैं। ये बड़े २ स्थूल होते हैं विश्रांतघाट पर इनकी अधिकता है—इनको लोग चूनकी गोली, चना आदि डालते हैं। कोई २ काट भी खाता है।

जैन मंदिर

मथुरा में जैन (सरावगी) मत के भी लोग रहते हैं। सेठजी का कुटुम्ब भी पहिले जैन था—जैन मंदिर भी मथुरा के निकट हैं—एक मंदिर के गोपुर पर है। यह सेठजी का बनाया हुआ है और देखने के योग्य है—यहां जम्बू स्वामीको तपस्या का स्थान है—इस मंदिर को सेठ मनीराम ने बनवाकर चन्द्र प्रभु की मूर्ति पधराई थी। पीछे रघुनाथदासजी ग्वालियर से अजीतनाथ की मूर्ति ले आये। वह पधरा दी गयी। कार्तिक की पंचमी से द्वादशी तक ७ दिन यहाँ मेला होता है और इस मेले का प्रारंभ भरतपुर के सरावगी नैनसुख ने सन् १८७० में किया था-दो मंदिर जैनियों के शहर मथुरा के भीतर भी हैं, दोनों में पद्म प्रभु विराजमान हैं—कुछ मंदिर जैनियों के कोसी और सहपऊ में हैं।

(वृन्दावन और वृन्दावन के वैष्णव)

मथुरा से ६ मील पर यमुना तट पर वृन्दावन बसता है। यमुना जी पहिले दूर थीं, परन्तु हलधर जी महाराज ने क्रोध में आकर हल से खींच ली हैं-मथुरा से जो सड़क वृन्दावन को जाती है, उस पर जयसिंहपुरा और अहल्या गंज दो ग्राम पड़ते हैं और सड़क के इधर उधर बाग बगीचे कूप वापिका बनी हुई हैं और दो एक मंदिर भी हैं।

वृन्दावन नाम इस नगर का वृन्दा अर्थात् तुलसी के वन से हुआ है। जहां अब वृंदावन बसता है, वहां पहिले तुलसी का वन था। वृंदा राधिकाजी का भी नाम है, इस हेतु वृंदावन की उत्पत्ति की बहुत सी कथा हैं। वृंदावन में अब अनुमान से छोटे बड़े एक हजार मंदिर हैं और ३२ घाट हैं, दो कुण्ड हैं एक ब्रह्म कुण्ड दूसरा गोविंद कुण्ड, पहिला सेठजी के मंदिर के पिछवाड़े है और बहुत ही टूटी फूटी दशा में है, दूसरा मथुरा की सड़क पर है जिसको राजशाही की चौधरानी काली सुंदरी ने २०००० रुपे लगाकर नये सिरे से बनवा दिया है।

तीसरा कुण्ड कि [illegible] नाम से [illegible] और है [illegible] पीपर, गूलर, कदम आदि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृक्षों का बन है।मथुरा की सड़क पर उस स्थान में है जहां से मदन मोहन जी के मन्दिर को रास्ता जाता है।बन यात्रा का मेला यहां ठहरता है "किन वारी" शब्द का किवार बन होगया है--जब दावानल लगी तब ब्रजवासी घबराकर बोले कि "किन बारी" अर्थात् दावानल किसने लगाई,यह दावानल भद्रवन में लगी थी।दावानल-विहारी का यहां एक छोटा सा मन्दिर है।

वृन्दाबन में अनुमान से ५० चैन हैं जहां अतिथियों को भोजन मिलता है।जैसे मथुरा का नाम इसलामाबाद मुसलमानों ने रक्खा था वैसेही वृन्दावन का मोमिनाबाद और फकीराबाद रक्खा था।

वृन्दावन में चार संप्रदाय के वैष्णव वास करते हैं (१) श्री वैष्णव(२)निम्बार्क वैष्णव (३) माध्व वैष्णव (४) विष्णु स्वामी।

श्री सम्प्रदाय के वैष्णव वृन्दावन में जबसे बसे हैं कि जब सेठजी के लाये हुए श्री रंगाचार्य्य वृन्दावन आये और रंगजी का मन्दिर बनवाया।श्रीसम्प्रदाय के मुख्य आचार्य्य---श्री रामानुज थे।ये ११ या १२ वीं शताब्दी में हुए थे।उनकी आयु दक्षिणही में व्यतीत हुई।७०० के अनुमान मन्दिर उन्होंने बनवाये।मुख्य सब में श्रीरंगजी का मन्दिर कांची में था।उनके मतकी पुस्तकें उनकी रचीहुई थीं।मुख्य जिनमें श्री भाष्य, गीताभाष्य, वेदार्थ-संग्रह, वेदान्त-प्रदीप, और वेदांत-सार हैं।इनका मत विशिष्टा द्वैत है।वृन्दावन के और बैष्णवों में और इनमें इतना भेद है कि ये राधाजी को नहीं मानते।ओं रामायनमः इनका मुख्यमंत्र है।इहसम्प्रदाय के दो भेद हैं।एक "तिंगल" दूसरे "वड़गल" इन दोनों में नीचे ऊंचे तिलक का भेद है और विशेष भेद नहीं है।

निंवारक सम्प्रदाय का मन्दिर मथुरा में ध्रुवटीले पर है।इस संप्रदाय के मूल पुरुष भास्कराचार्य्य थे।उन्होंने एक वैरागी का नोंता किया और सब पदार्थ भोजन के लियें बनाकर तयार कराये परन्तु सूर्यास्त तक भोजन के लिये बुलाने न पाये।देर होगई परन्तु उक्त बैरागी अपनी संप्रदाय के नियमानुसार रातको भोजन नहीं करता था।इस लिये यह भय हुआ कि आज भूखा रहना पड़ेगा परन्तु भास्कराचार्य्य की बिनती मान सूर्य्य नींवके वृक्ष पर आबैठे और भोजन के करने तक उसी नीव के वृक्ष पर बैठेरहे जिसके नीचें भोजन होरहाथा।

उसीदिन से वह महात्मा निम्बार्क या निम्बादित्य कहलाये।इनके मतकी पुस्तकें नहीं मिलतीं।सुनते हैं कि औरंगजेब बादशाह ने जलादीं थीं।इस लिये कुछ मत-सम्बन्धी भेद मालूम नहीं होता।निम्बार्क सम्प्रदाय के बहुत से साधू ब्रज के वन उपबिनों में बसते हैं।बड़े सीधे सच्चे,महात्मा और धर्म का रूप हैं। इस संप्रदाय का मुख्य [illegible]माबाद है और कुछ मत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की पुस्तकें ये हैं (१) सिद्धान्त रत्नावली (२) गिरिव्रज (३) रत्नमाला (४) सेतुका (५) जान्हवी (६) रत्नमंजूषा।

माध्व-वैष्णव व्रज में बहुत नहीं हैं, न उनका कोई प्रसिद्ध मन्दिर व्रज में या वृन्दावन में है। इस संप्रदाय के चलाने वाले माधवाचार्य्य दक्षिणी थे कि जो सन् ११९८ ईसवी में उत्पन्न हुए थे। वह मन्दिर कि जहां वह रहा करते थे अब भी विद्यमान है। अर्जुन के हाथ की बनाई हुई कृष्ण की मूर्ति इस मन्दिर में थी। द्वारिका से किसी जहाज में वह मूर्ति चली आई थी। जहाज मालाबार के किनारे पर नष्ट होगया। मूर्ति मंदर में पधराई गई कहते हैं कि माधवाचार्य्य ने नौ वर्ष की उमर में गीता का भाष्य बनाया था। उस भाष्य को उनके मतानुयायी स्वधर्म-पुस्तक मानते हैं। ये द्वैतवादी हैं, गौड़िया बैष्णव इसी संप्रदाय की शाखा हैं।

४ बिष्णुस्वामी संप्रदाय के साधु जबतब व्रजमें आते हैं परन्तु कोई मुख्य निवास-स्थान या मन्दिर उनका अभीतक विदित नहीं हुआ। इस कारण बिशेष भेद इस संप्रदाय का लिखने में नहीं आया। वल्लभाचार्य्य की संप्रदाय इसी की शाखा है। इन चार मुख्य संप्रदायों की तीन शाखा संप्रदाय व्रज में और हैं (१) बंगाली अथवा गौरिया बैष्णव (२) राधावल्लभी (३) स्वामी हरिदास के शिष्य।

इन तीनों में प्रथम का बिस्तार बहुत है और वह इनमें पहली भी है। इस संप्रदाय के जन्म देने वाले श्री चैतन्य ~~स्वामी~~ महाप्रभु थे कि जो सन् १४८५ ईसवी में बंगाल के नदिया नगर में उत्पन्न हुए थे। २४ वर्ष की आयु में इन्होंने संसारी बंधन को तोड़ दिया और बैराग लेलिया। ६ वर्ष तो मथुरा और जगन्नाथजी की यात्रा में व्यतीत किये। फिर जगन्नाथ जी में निश्चल हो बसे। अन्त को सन १५२७ में ४२ वर्ष की उमर में परलोक सिधारे। एक दिन स्वप्न में उनको गोपियों के संग यमुना में किलोल करते हुए कृष्ण इष्ट आये। उसी ध्यान में मग्न उठ कर समुद्र में चलेगये। फिर वहां से नहीं लौटे। इनके मत के मूल सिद्धान्त चैतन्य चरितामृत में विस्तार पूर्वक लिखे हैं। इस पुस्तक को उनके शिष्य कृष्णदास ने १५९० ई० में बनाया था। श्री चैतन्य ~~स्वामी~~ महाप्रभु के साथी अद्वैताचार्य्य और नित्यानंद भी उनकी तरह ~~महा~~ प्रभु कहलाते थे। बंगाल के देव-मन्दिरों के अधिकारी ये रहे और छः गुशाईं वृन्दावन में अधिकारी रहे। इस संप्रदाय वाले कृष्णोपासक हैं। कृष्ण नाम को सार मानते हैं। नासिका पर्यन्त लम्बे तिलक और १०८ मनिका की तुलसी की माला यह उनका चिन्ह है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

श्रीचैतन्य प्रभु की संप्रदाय के लोग जो वृन्दावन में थे, उनके मुखिया रूप और सनातन थे। उन्होंने बहुत से स्वमत संबंधी भाष्य बनाये और मथुरा महात्म्य की रचना भी उन्होंहों ने की थी। श्री रूप सनातन के संग उनके भतीजे एक श्री जीव नाम के थे। उन्होंने राधा-दामोदर का मन्दिर वृन्दावन में बनाया- और दूसरे गुपाल भट्ट थे जिन्होंने राधा रमण का मंदिर बनाया और और मंदिर भी बनवाये कि जो बहुत प्रसिद्ध नहीं हैं।

राधावल्लभी संप्रदाय के मूल-पुरुष श्रीहरिवंशजी थे। उनके पिता श्रीव्यासजी गौड़ ब्राह्मण थे और देवबन्द जिले सुहारनपुर में रहते थे--सन्तान उनके कुछ न थी। वह दिल्ली के बादशाह के यहां नौकर थे-एक समय बादशाह के संग आगरे से जाते थे। मार्ग में बाद नाम गाम पर जो मथुरा के निकट है उनकी स्त्री तारा के सम्बत् १५५९ में पुत्र उत्पन्न हुआ--स्त्री पुरुष ने हरि की बड़ी सेवा की थी और बहुत ध्यान करते रहे थे। इस लिये हरि का दिया हुआ पुत्र मानि उस बालक का नाम हरिवंश रक्खा--जब हरिवंश युवा हुये तब इनका रुक्मिणी एक स्त्री के संग बिवाह हुआ--रुक्मिणी से दो पुत्र और एक पुत्री हुई। बड़े पुत्र मोहनचन्द्र बिना संतान सुरलोक गये-छोटे गोपीनाथ देवबन में रहे-हरिवंशजी ने अपनी कन्या का बिवाह कर के वैराग लेने का बिचार किया--यह निश्चय कर अकेले वृन्दावन को चल दिये--जब होडल के पास चारथावल गाम में पहुंचे तब उनको एक ब्राह्मण मिला--उस ब्राह्मण ने हरिवंशजी से यह हठ की कि तुम मेरी दो लड़कियों से बिवाह करलो--और कहा कि मुझको स्वप्न में ईश्वर की यही आज्ञा हुई है--उसने एक श्रीकृष्ण की मूर्ति दी कि जिस मूर्ति का नाम राधावल्लभ था--हरिवंशजी ने वह मूर्ति वृन्दावन में लाकर एक मंदिर में पधरा दी जो कि युगल घाट और कोशीघाट के बीच में यमुना तट पर बनाया। प्रथम हरिवंश जी माधवाचार्य सम्प्रदाय में थे। परन्तु फिर निम्बार्क सम्प्रदाय से भी उन्होंने मत सिद्धान्त लिये। ईश्वराज्ञा से उनको दो स्त्रियां ग्रहण करनी पड़ीं। हरिवंशजी श्रीकृष्ण के भक्त तो थे ही परन्तु श्री राधिका जी को उन्हीं ने अपना मुख्य देवता माना।

इन पिछली दो स्त्रियों से हरिवंशजी के बनचन्द और कृष्णचन्द दो पुत्र हुए। कृष्णचन्द्र ने राधा मोहन का मन्दिर बनाया जो अब उनके ही कुल के अधिकार में है। श्री बनचन्द्र जी दूसरे पुत्र के वंश में राधा वल्लभ के मन्दिर के वर्तमान गुसांई हैं। यह मन्दिर उनके एक कायस्थ शिष्य सुन्दरदासने जो दिल्ली में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खजानची थे बनाया था--इसके एक खंभे में सम्वत् १६८३ खुदा हुआ है--मन्दिर के सन्मुख सकिड़ की दूसरी ओर मन्दिर बनाने वाले का स्मारक चिन्ह है परन्तु वह अच्छी दशा में नहीं है।उसकी गोस्वामी महाशय मरम्मत नहीं कराते थे। गोस्वामी वनचन्द्र के उन चार पुत्रों के वंश में है जिनके नाम यह हैं--१ सुन्दर बर २ राधावल्लभदास ३ ब्रजभूषण ४ नागरवरजी--अब इन चारों घराने के कर्त्ता दयालाल--मनोहरवल्लभ,सुन्दरलाल और कन्हैयालाल के पुत्र हैं।

हरिवंशजी ने दो पुस्तकों की रचना की चौरासी पद हिन्दी में और राधा-रस-सुधा-निधि १७० श्लोक संस्कृत यह बहुत उत्तम काव्य है।इस पर वंशीधरजी की हिन्दी टोका है जो सम्वत् १८२० में लिखी गयी था--इस संस्कृत काव्य का अधिक प्रचार नहीं है तथापि प्रेमी विद्वानों के मुख से प्राय: सुनने में आता है--चौरासी पद नाम का हिन्दी काव्य बहुत प्रचलित है।यहां तक कि बहुत से गोस्वामियों को कंठ है।उक्त हिन्दी काव्य पर भी लोकनाथ की टीका है कि जो सम्वत् १७३४ में किया गयी मालूम होती है।

हरिबंशजी का उपनाम हितजी था और वह नाम जन्म के नाम से अधिक प्रसिद्ध था।उनके प्रसिद्ध चेले उरछा के रहने वाले व्यासजी थे।प्रथम ही प्रथम जब उनको स्वामी हरिवंशजी से भेट हुई,तब स्वामीजी भोजन बना रहे थे। पहुंचते ही इन्होंने एक धर्म-सम्बन्धी प्रश्न किया – स्वामीजी ने विना बिलम्ब के संदेह दूर कर दिया।परन्तु भोजन को तुरन्त फेंक दिया और कहा कि कोई आदमी दो बातों पर एक साथ ठीक २ ध्यान नहीं दे सकता।व्यासजी को यह बात ऐसी लग गयी कि उसी समय वहीं स्वामीजी के शिष्य होगये और थोड़े ही दिनों में वृन्दावन का प्रेम उनके हृदय में ऐसा समा गया कि वह अपनी स्त्री और बालकों के पास घर जाने में भी अति दुखी हुए।अन्त को बड़ी कठिनाई से घर जाना अंगीकार किया और थोड़े ही दिन रहकर ऐसी युक्ति निकाली कि जिस से घर वाले अपने आप अलग होजावें।निदान एक दिन सब के आगे भंगी के हाथ का भोजन उन्होंने कर लिया।जब इस तरह जाति पांति से बाहर होगये,तब घर के लोगों ने उन्हें वृन्दावन चले आने दिया।वहां उन्होंने शेष आयु अपनी पूर्ण की।उनकी समाधि अब भी वृन्दावन में बनी हुई है।

हरिबंशजी का दूसरा चेला ध्रुवदास बहुत बड़ा ग्रन्थकर्ता था।उक्त चेले ने ४२ पुस्तक बनायी हैं जिनके नाम ये हैं (१) जीवदशा (२) वेदज्ञान (३) मनशिक्षा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

था (४) वृन्दावनसत (५) भक्तनामावली ६ वृहद्वामन पुरान ७ ख्यालहुलास ८ सिद्धान्त-बिचार ९ प्रीतिचौवनी १० आनन्दाष्टक ११ भजनाष्टक १२ भजन कुण्डलियां १३ भजनसत १४ शृंगारसत १५ मनशृंगार १६ हितशृंगार १७ सभा मंडल १८ रसमुक्तावली १९ रसहीरावली २० रसरत्नावली २१ प्रेमावली २२ श्रीप्रियाजी की नामावली २३ रहस्यमंजरी २४ सुखमंजरी २५ रतिमंजरी २६ नेहमंजरी २७ बनविहार २८ रसविहार २९ रंगहुलास ३० रंगबिहार ३१ रंगविनोद ३२ आनन्द दशा ३३ रहस्यलता ३४ आनन्दलता ३५ अनुरागलता ३६ प्रेमलता ३७ रस-आनन्द ३८ युगलध्यान ३९ नृत्यविलास ४० दानलीला ४१ मानलीला ४२ व्रजलीला।

इस सम्प्रदाय के और महात्माओं की बनायी हुई पुस्तकें १ सेवक-वानी २ वल्लभरसिक की बानी और गुरुप्रताप दामोदरदास रचित हैं। हरिनाम-महिमा दामोदर स्वामी कों बनायी हुई हैं। श्रीरूपलालजी का अष्टक हितवल्लभ विरचित है। हरिनाम बेल, श्रीलालजी बधायी, और श्रीलाडिलीजूकी बधायी, वृन्दावन दासजी की बनायी हुई हैं।

तीनों नवीन और प्रधान सम्प्रदायोंमेंसे अवडेरससम्प्रदायका वर्णन करते हैं जो स्वामी हरिदासजी कौं स्थापित की हुई है। उक्त स्वामीजी के वंश में अनुमान से अब ५०० मनुष्य हैं। और उनके अधिकार में श्री बांके बिहारीजो का मंदिर है। हिन्दुस्तान भर में यही एक मंदिर है जो इस सम्प्रदाय वालों के अधिकार में है। यह मन्दिर थोड़े दिन हुए जब बनकर तयार हुआ है, इसमें ७०००० रुपे लगे हैं। उक्त सम्प्रदाय के सेवकों ने यह रुपिया दिया है। यह मन्दिर लालरंग के पत्थर से बना है। दरबाजे पर सफेद पत्थर लगा है। ऊपर की मंजिल अभी इसकी बनने को है। इस सम्प्रदाय की जायदाद के दो बांट होगये हैं। सम्प्रदाय के स्थापन करने वाले स्वामीजी ने अपना विवाह नहीं किया था, परन्तु उनके भाई जगन्नाथजी के तीन पुत्र थे। मेघश्याम, मुरारीदास और गोपीनाथदास। तीसरे पुत्र गोपीनाथदास ने कोई संतान नहीं छोड़ी। पहिले के दो पुत्रों की सन्तान में वर्त्तमान गोस्वामीजी हैं। इन दोनो कुलों में बिरोध भी रहता है कचहरी दरबार भी होता है। प्रायः इनमें विद्या का अभाव है। इससे उनकी वह प्रतिष्ठा नहीं है, जो मूल पुरुष की सुयोग्यता के कारण होनी चाहिये। समय के प्रभाव से स्वभाव में भी अन्तर आगया है। इस कुल में दो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वरूप अभी उत्तम है और विद्वान हैं १ गुसाई जगदीश जी २ गुसाई किशोरचन्द्रजी। परन्तु अपनी सम्प्रदाय की विद्या से आगे यह भी नहीं बढ़े ॥

ब्रह्मधार नामी एक सनाढ्य ब्राह्मण कोल के पास एक हरदास पुर ग्राम में रहते थे। उनके एक ज्ञानधीर नाम का पुत्र था कि जो श्री कृष्ण महाराज के गिरधारी जी के नाम से भक्त थे और ये श्री गोवर्द्धन नाथ जी की यात्रा को जाया करते थे एक बार मथुरा जाकर उन्होंने अपना विवाह कर लिया। उनके जो पुत्र हुआ, उसका आसधीर नाम रक्खा। आसधीर ने राजपुर के ब्राह्मण गंगाधर की पुत्री से विवाह किया। यह राजपुर वृन्दावन के निकट है। भादोंवदी ८ सम्वत् १४४१ को आसधीर के इस विवाहिता पत्नी से श्री हरिदास जी उत्पन्न हुए। बालकपन से ही उन्होंने खेल-कूद को त्याग कर भजन-पूजा में मन लगाया, जिससे यह प्रतीत होता था कि किसी दिन ये पूजनीय महात्मा होंगे। माता पिता के समझाने पर भी इन्होंने विवाह बिना रहने का पन किया और २५ वर्ष की अवस्था में यमुना तट पर श्री वृन्दावन के निकट मानसरोवर पर एक कुटी में आ बसे। पीछे फिर निधिवन में चले गये। वहां प्रथम ही प्रथम अपने मामा विट्ठलविपुल को शिष्य बनाया। श्री हरिदास जी की कीर्ति दूर २ तक फैल गयी। एक दिन एक दिल्ली का खत्री दयालदास उनके पास आया। इस दयालदास को पारस पत्थर संयोग वश मिल गया था। उस पत्थर को जिस वस्तु से लगा देते थे वह सुवर्ण की हो जाती थी यह पारस पत्थर बहुत बड़ा धन जान कर उसने स्वामीजी की भेंट किया। स्वामी जी ने फिरा कर वह पारस पत्थर यमुना जी में फेंक दिया। जब स्वामीजी ने देखा कि दयालदास को पारस पत्थर के जमुना जी में फेंक देने से बड़ा भारी दुख हुआ, तब उसको यमुना तट पर ले गये और कहा कि दोनों हाथ से रेती भरलो। जब जल में से रेती दयालदास ने हाथ में भर ली, तब उसको रेती के सब कण पारस पत्थर प्रतीत हुए और परीक्षा करने से उन सब में वही गुण देखा जो उस पारस पत्थर में था जिसको स्वामी हरिदास जी ने यमुना जी में फेंक दिया था। दयालदास की आखें खुल गयीं और जान लिया कि महात्माओं को धन की कुछ परवा नहीं होती। वह आप सब प्रकार पूर्ण होते हैं। निदान वह भी स्वामीजी का शिष्य हो गया ॥

चोरों ने यह सुन कर कि स्वामीजी के पास पारस पत्थर है, जब स्वामी जी स्नान करने गये, उनके शालिग्रामजी पारस पत्थर समझ कर चुरा लिये परन्तु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

जब देखा कि पारस पत्थर का गुण नहीं है, तब शालिग्रामजी को मूर्ति को एक झाड़ी में फेंक गये और स्वामीजी जब ढूढ़ने निकले तब शालिग्रामजी आप बोल उठे कि मैं यहां पड़ा हुआ हूं। उस दिन से नित्य उनको एक मुहर मिल जाती थी। उस में से मन्दिर का भोग लगाते थे और यमुनाजी में मछली और किनारे पर वन में मोर, बन्दर चुगाते थे॥

एक दिन एक कायस्थ ने एक हजार रुपये का अतर भेंट किया, परन्तु यह देखकर उसको बहुत दुःख हुआ कि स्वामीजी ने सब अतर धरती पर पटक दिया। शीशी टूटगयी और अतर मिट्टी में मिल गया। परन्तु जब स्वामीजी उस को मन्दिर में लेगये, तो वहां जाकर देखा कि अतर की भेंट श्री ठाकुर जी ने अंगीकार करली। सब मन्दिर सुगंध से महकने लगा॥

अकबर बादशाह के दरबार में एक गाने वाला था। उसका बेटा बहुत मति-मन्द था। बाप ने बेटे को घर से निकाल दिया। वह बिचरता हुआ वृन्दावन आया और सड़क पर सोरहा। प्रातःकाल स्वामी हरिदासजी निधिवन से यमुनाजी के स्नान करने को जाते थे। मार्ग में उसपर जाकर ठोकर खायी और उसकी सब विनती सुनकर तानसेन उसका नाम रक्खा और वरदान देकर पूर्णगानविद्या में कुशल उसको बनादिया। जब लौट कर वह दिल्ली गया, बादशाह ने उसकी उत्तम गानविद्या देखकर बड़ा अचंभा किया और स्वामीजी के दर्शन के लिये आप वृन्दावन जाने का बिचार किया।

एक बार अकबर बादशाह आगरे आये और आगरे से मथुरा गये और मथुरा से सवार होकर भतरोंड़ पहुंचे कि जो मथुरा वृन्दावन के बीच में है। भतरोंड़ से पैदल निधिवन गये। स्वामीजी ने अपने शिष्य का बड़ा प्रेम पूर्वक आदर किया, परन्तु संग में बादशाह थे उनकी और कुछ ध्यान न दिया। जब बादशाह ने बार २ कहा कि मेरे लिये क्या आज्ञा है, मैं कुछ सेवा करने की इच्छा करता हूं। स्वामी हरिदासजी बादशाह को विहारी घाट पर जो पास ही था लेगये, वह घाट उस समय रत्नजटित दीखपड़ा। रत्नों की बड़ी २ सिड्ढी सुवर्ण के चौखटे से जड़ी हुई मालूम हुई। एक सिड्ढी का एक कोना टूटा दृष्ट आया। स्वामीजी ने बादशाह से कहा कि इस टूटी सिड्ढी को निकाल कर साजी लगवा दो। यह काम बादशाह से बड़े बादशाह की सामर्थ्य से भी बाहर था। अन्त को परचा पाकर बादशाह दिल्ली चलेगये और मोर बन्दरों के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लिये कुछ बंधान कर गये। स्वामी हरिदासजी की और कोई प्रसिद्ध करामात सुनने में नहीं आयी। संवत् १५३७ में वह सुरलोक को पधारे। विट्ठलविपुल उन की जगह महन्त होकर गद्दी पर बैठे। विट्ठलविपुल के पीछे बिहारीदासजी हुये। इनके समय में मन्दिर का प्रबन्ध पंजाब के सारस्वत ब्राह्मण जगनाथ जी के सुपुर्द हुआ। बिहारीदासजी के परलोक-वास पाने पर मंदिर का अधिकार इस कुलको संतान में बंट गया।

भक्ति सिंधु में स्वामी हरिदासजी का पूर्वोक्त रीति पर जीवन-चरित्र लिखा है, परन्तु उनके कुल के लोग और रीति पर वर्णन करते हैं। उनका कथन है कि स्वामी हरिदास जी सनाढ्य ब्राह्मण न थे, वह सारस्वत थे। उनके कुटुम्ब के लोग कोल या जलेसर के रहने वाले थे। वह उच्छनाम स्थान से जो मुल्तान के पास है, आये थे। उनको चार सौ वर्ष नहीं हुये वरन् तीन सौ वर्ष हुए हैं। मालूम यह होता है कि भक्तिसिन्धु नाम ग्रन्थ के रचने वाले ने सम्वत् में भूल की है। सम्वत् १४४१ — १५३७ तक स्वामी हरिदास जी का होना लिखा है, परन्तु इतिहास के देखने से प्रकट है कि बादशाह अकबर जो स्वामीजी के दर्शन को वृन्दावन आये थे, वह आप सम्वत् १६१२ तक तख़्त पर नहीं बैठे थे ॥

स्वामी हरिदास जी की सम्प्रदाय में जो महंत हुए उन के क्रम से नाम ये हैं। स्वामी हरिदास जी--विट्ठल-विपुल--बिहारी दास--नागरी दास--सरस-दास--नरहरदास--रसिकदास---ललित किशोरी-ललितमोहनीदास ये सब महंत एक दूसरे के पीछे गद्दी पर बैठते गये और इन सबने साखी, चौबोला, और पद बनाये हैं। और उपासना सम्बन्धी पुस्तकें लिखी हैं। सबसे अधिक ग्रन्थ रचना करने वाले महंत बिहारिनी दास जी हुए हैं उन्होंने एक पदों की पुस्तक लिखी है जिसमें ६८४ पद हैं। इस सम्प्रदाय के मूल पुरुष स्वामी हरिदासजी की बनाई हुई दो पुस्तकें मिलती हैं (१) साधारण सिद्धान्त (२) रसके पद--इस सम्प्रदाय के पुजारी इन पदों को कंठ रखते हैं — इन नवीन संप्रदायों में से दो संप्रदाय का पता व्रज में और लगता है एक मलूकदास दूसरी प्राणनाथी ॥

मलूकदासी सम्प्रदाय का एक धर्म-स्थान व मंदिर वृन्दावन में है। मन्दिर रामजी के नाम से केशीघाट पर है--इस सम्प्रदाय के स्थापन करने वाले मूल-पुरुष औरंगजेब बादशाह के समय में हुए थे। वह व्यापार करते थे। उन्होंने हिन्दी में एक दशरत्न नाम का ग्रन्थ बनाया था--जिसमें कुछ पद और साखी भी लिखीं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खीं थीं इस सम्प्रदाय का ग्रन्थ छपा नहीं है यह अच्छी तरह मालूम नहीं होता कि इनका क्या मत और सिद्धान्त है। स्वामी हरदासजी की सम्प्रदाय में और इस सम्प्रदाय में और तो कुछ विशेष भेद मालूम नहीं होता। केवल यह भेद प्रकट है कि मलूकदासी रामोपासक हैं और हरिदासी सम्प्रदाय वाले कृष्णोपासक हैं।

प्राणनाथी सम्प्रदाय एक छोटीसी नवीन सम्प्रदाय है। इस सम्प्रदाय के एक प्रतिनिधि पुरुष अब मथुरा में है। उनके पास प्राणनाथ की रचीहुई पुस्तक भी है। परन्तु वह फारसी अरबी के शब्दों से भरी हुई है ग्रन्थकर्त्ता प्राणनाथजी क्षत्री थे और १८ वीं शताब्दी में वह विद्यमान थे पन्ना के प्रसिद्ध राजा छत्रसाल के विशेष कर कृपा पात्र थे उन्होंने हिन्दू और मुसलमान दोनों के मतों को मिलाने का उद्योग किया था उनके शिष्य लोग धामी कहलाते हैं क्योंकि वह धाम शब्द को परमात्मा का बाचक मानते थे परन्तु मूर्ति पूजा को नहीं मानते थे उनके मन्दिर में मूर्ति नहीं रक्खी जाती सिक्खों की तरह सम्प्रदाय स्थापन करने वाले का बनाया हुआ ग्रन्थ पूजा के लिये रक्खा रहता है उनका बनायी हुई छोटी २ चौदह पुस्तकें छंद में हैं (१) किताब रास की (२) प्रकाश की (३) षतरोति की (४) कलस की (५) सनानंध की (६) कीर्तन की (७) खुलसा की (८) खिलवात की (९) परिक्रमा इलाही दुलहिन (१०) सागर सिंगार की (११) बडे सिंगार की (१२) सोधी भाषा की (१३) मारफत सागर की (१४) कियामतनामा की॥

इस संप्रदाय के एक करक दास नामी महात्मा विद्यमान हैं इस संप्रदाय का सिद्धान्त यह मालूम होता है कि कोई मत किसी दूसरे मत से अच्छा नहीं जिस का दूसरा आशय यह निकल सक्ता है कि कोई मत सच्चा नहीं है।

ठाकुर दयाराम के समय में एक बख्तावर नाम के शून्य वादी ने ठाकुर दयाराम के नाम से व्योमसार और शून्यसार नाम की दो पुस्तकें लिखी हैं उनमें यह सिद्धान्त रक्खा है कि पृथ्वी आकाश सब शून्य हैं सिवाय शून्य के लोक परलोक में और कुछ नहीं है न कुछ गुप्त है और न प्रकट है सब शून्य है इन पुस्तकों में कुछ विषय वेदान्त सार से लेकर लिखा है यह पुस्तक छपी हुई अभी तक नहीं देखी गयी परन्तु ठाकुर दयारामके पौत्र राजा हरनारायण सिंह के पास वृन्दावन में विद्य मान हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ब्रजमंडल-माहात्म्य

मथुरा

वाराह पुराण में पृथिवी से वाराहजीने यह वर्णन किया है कि तीनलोक में मथुरा उत्तम है और पृथिवी के सब तीर्थों का फल मथुरा में एक क्षण के वास से मिलता है और प्रतिज्ञा की है कि सौ बर्ष तक मथुरा में रह कर कन्सादि दैत्योंको मैं नष्ट करूंगा और मेरे मथुरा-मंडल में गंगा से सौ गुणा फल होता है। जो मनुष्य मथुरा में प्राण छोड़ता है, वह फिर जन्म नहीं लेता--मथुरा में ये बारह तीर्थ उत्तम हैं।

१ विश्रांति-तीर्थ---इसके स्नान से बैकुंठ और यज्ञ आदि का संपूर्ण फल मिलता है।

२ गुह्य-तीर्थ – मुक्ति और सुरलोक मिलता है।

३ प्रयाग--अग्निष्टोम यज्ञका फल मिलता और स्वर्गलोक-वास होता है।

४ कनखल स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है।

५ तिन्दुक,-इसमें स्नान करने से कांपिल्यपुर पंजाब देश का निवासी तिन्दुक नापित(नाई) मुक्ति को प्राप्त हुआ है। उसका सब कुटम्ब जब नष्ट होगया, वह दुखी होकर मथुरा में आ बसा था और यमुना में त्रिकाल स्नान किया करता था वह मरकर मथुरा में विष्णु का भक्त ब्राह्मण हुआ और विश्रांततीर्थके प्रतापसे मुक्त हुआ

६ ऋषिमुक्त-तीर्थ-- मुक्तिमिलती है।

७ सूर्य-तीर्थ--सब पापों की निवृत्ति होती है। यहां राज्य से भ्रष्ट हुये बलि ने सूर्य की आराधना की और सूर्य्य की कृपा से चिंतामणि को पाकर पाताल में गया--इसमें स्नान और प्राणों के छोड़ने से विष्णु लोक प्राप्त होता है।

८ ध्रुवतीर्थ--यहां ध्रुवजीने तप किया था। यहांपर स्नान और प्राणोंका त्याग और श्राद्ध करने से उत्तम लोक मिलता है और पितरों की मुक्ति होती है।

९ ऋषितीर्थ--बैकुंठ मिलता है।

१० मोक्षतीर्थ--स्नान करनेसे मोक्ष होता है।

११ कोटि-तीर्थ--बैकुंठ मिलता है।

१२ बोधतीर्थ--इनमें स्नान, दान, जप, होमका फल मिलता है और असिकुण्ड के उत्तर नवतीर्थ हैं, उसके स्नान से सौभाग्य होता है।

और एक संयमन-तीर्थ है, उससे सब कामना मिलती हैं--नैमिषारण्य-निवासी भील जो किसी कार्यके लिये मथुरा आया था, वह कृष्णपक्षकी चौदश

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को यमुना के तर ने के लिये गया। उसको पार तरते समय उपानह गिरो, वह निकालने के लिये गया। संयमन-तीर्थ में गोता लगाते ही मर गया और सौराष्ट्र देश का चच-धनुचत्री हुआ। उसने काशिराज की पीवरी कन्या विवाही। उसके सात पुत्र और पांच कन्या हुई--वह एक दिन अपनी भार्य्या पीवरी के संग सो रहा था, सोते समय जगा--और हा। मथुरा। हा। संयमन-तीर्थ। ऐसे कहने लगा। रानी पूछने लगी "आप वारंवार क्या कह रहे हैं? राजा ने कहा कि मेरे निद्रा की वात है तुम मत पूछो"--फिर भार्य्या के हठ से यह कहा कि सब राज पुत्रों को देकर मथुरा चलो--वह मथुरापुरी में आकर संपूर्ण कामनाओं को प्राप्त हुआ। उसने भार्य्या सहित मथुरा में आनन्द पूर्वक निवास किया। एक दिन पीवरी को अपने पूर्व जन्म का पूर्वोक्त वृत्तान्त चचधनु ने सुनाकर कहा कि तू भी अपने पूर्वजन्म का वृत्तान्त कह। पीवरी बोली मैं गंगा के तीर बसती थी, कार्तिकवदी १२ के दिन मथुरा के दर्शन को आई। नाव पर बैठी हुई यमुना के जल में गिरी और मर कर काशिराज के पैदा हुई और आप से मेरा विवाह हुआ।

व्रजमंडल में ये बारह वन रूप तीर्थ देवताओं को भी दुलर्भ हैं

१ मधुवन--इसके दर्शन से सब कामनाओं की प्राप्ति होती है।

२ तालवन--इसमें स्नान करके मनुष्य कृतार्थ होता है।

३ कुमुदवन--भाद्रपद में कृष्णपक्ष की एकादशी को स्नान करने से शिवलोक होता है॥

४ कामवन--इसमें जाने और बिमल कुण्ड में स्नान करने से सब पापों की निवृत्ति और मरने से बैकुंठ होता है॥

५ बहुलावन--इसके दर्शन से अग्नि लोक होता है॥

६ भद्रवन--इसके दर्शन से नाग लोक होता है॥

७ खादिरबन }
८ महाबन } यह दोनों बन सदैव परमेश्वर को प्यारे हैं॥

९ विल्वबन--इसके दर्शन से सब पापों की निवृत्ति और स्वर्ग लोक होता है॥

१० लोहजंघबन--यह बन लोहजंघ राक्षस ने रचा है। इसमें जाने से ब्रह्मलोक होता है॥

११ भाण्डीर बन, इसके दर्शन से फिर जन्म नहीं होता॥

१२ वृन्दावन--वृन्दादेवी से रक्षित है इसके अनंत फल हैं।

इन बारह वनों के दर्शन और स्नान आदि से यमलोक नहीं होता।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१ धारापतन तीर्थ---स्नान से स्वर्गलोक, मरने से वैकुण्ठ होता है।
२ नागतीर्थ--स्नान से स्वर्ग, और मरने से मोक्ष होता है॥
३ घंटाभरण--दर्शन से सब पापों की निवृत्ति, स्नान से सूर्यलोक, मरने से वैकुण्ठ होता है॥
४ ब्रह्मलोक-तीर्थ--स्नान और जल पान से विष्णुलोक होता है॥
५ सोम तीर्थ--इसमें स्नान से मनुष्य विष्णु का दर्शन पाता है और मरने से सोमलोक या विष्णु लोक में जाता है।
६ सरस्वती-संगम इसमें स्नान करने से सन्यासी के समान मुक्ति होती है और जहां तहां मथुरा मंडल के स्नान से और तीन रात्रि के उपवास से, ब्रह्महत्या से निवृत्ति और मरने से वैकुण्ठ होता है॥
७ दशाश्वमेध इसमें स्नान से स्वर्ग भी दुर्लभ नहीं॥
८ मानसतीर्थ--स्नान से स्वर्ग और मरने से पुनर्जन्म का नाश होता है॥
९ विघ्नराज--पापों की निवृत्ति और स्नान से विघ्नों का नाश होता है। चौथ, अष्टमी--चौदस--इन में स्नान करने का विशेष फल है और इसमें मरने से वैकुण्ठ होता है॥
१० कोटतीर्थ--इसके स्नान से कोटि तीर्थों का फल और मरने से वैकुण्ठ मिलता है।
११ शिवक्षेत्र यह आध कोश में है। इसमें शिवजी रहते हैं। इसके स्नान और दर्शन से मथुरा के दर्शन का फल मिलता है। और मरने से वैकुण्ठ होता है।
१२ अनंत-तीर्थ--इसमें विष्णु के दर्शन से मुक्ति और संक्रांति में दर्शन करे तो सब पाप दूर होते हैं॥
१३ अक्रूर तीर्थ--ग्रहण के दिन स्नान करने से राजसूय, अश्वमेध यज्ञ का फल होता है। यह तीर्थों का राजा है। इसमें सब तीर्थों का फल मिलता है इसके महात्म्य में यह इतिहास है।

इसमें सुधनु नाम हरि भक्त एकादशी का व्रत कर वहां स्नान और नृत्य किया करता था। एक दिन उसके चरणों को पकड़ कर ब्रह्म राक्षस ने कहा कि हे वैश्य! मैं तुझे भक्षण करूंगा--उसने कहा कि मैं आज व्रती हूं और रात्रि को जागरण, देव दर्शन करि के प्रातःकाल आऊंगा, जब मुझे भक्षण करना--जब उसने न माना तो सुधनु वैश्य ने अनेक प्रकार की प्रतिज्ञा की। ब्रह्मराक्षस ने कहा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कि भक्षण करजाओ--जब वैश्य जागरण से निवृत्त हुआ, तब यमुना में स्नान किया और मथुरा को चला। उसने मार्ग में दिव्य पुरुष भगवान् को देखा। भगवान् ने पूछा कि तू शीघ्र कहां जाता है? सुधनु ने कहा कि ब्रह्मराक्षस के समीप--भगवान् ने कहा कि जीते हुये धर्म करेगा मरने क्यों जाता है? सुधनु बोला सत्य से बंधा हुआ जाता हूं। निदान सुधनु ने ब्रह्मराक्षस के पास जाकर कहा कि तू मुझे भक्षण कर ले। तब राक्षस ने कहा कि मैं तुझे भक्षण नहीं करता। तू मुझे जागरण का फल दे दे, अथवा एक ही बार के नृत्य का फल दे दे। उसने कहा कि तुझे मैं पुण्य नहीं दूंगा, तू मुझे यह बतलादे कि तू राक्षस क्यों हुआ? ब्रह्मराक्षस ने कहा कि मैं वेदपाठी अग्निदत्त ब्राह्मण था--और अपने घर बनाने के लिये दूसरे को ईंट चुराने से ब्रह्मराक्षस हुआ--तू मुझे एक विश्राम का पुण्य देकर छुड़ाकर। वैश्य बोला मैंने तुझे एक नृत्य का फल दिया--वह राक्षस उसी से मुक्ति को प्राप्त हुआ और सुधनु वैश्य भी कुटंब और शरीर सहित विमान में बैठ कर वैकुण्ठ में गया। इससे अक्रूर तीर्थ से परे कोई तीर्थ नहीं॥

१४ वत्सक्रीड़नतीर्थ--स्नान से वायुलोक और मरने से वैकुण्ठ होता है॥

१५ भांडीरक तीर्थ--स्नान से सब पापों का नाश और स्वर्ग लोक होता है और मरने से वैकुण्ठ मिलता है॥

१६ वृन्दावन तीर्थ--यहां गोपों के संग भगवान ने क्रीड़ा की है। यह तीर्थ देवताओं को भी दुर्लभ है। इसमें जो कुण्ड है, उसके स्नान से और एक रात्रि वास से स्वर्गलोक मिलता है और मरने से वैकुण्ठ मिलता है॥

१७ केशीघाट--इसमें स्नान से गंगा और काशी से सौगुना पुण्य होता है और पिंडदान से गया के समान फल होता है॥

१८ सूर्यतीर्थ (अर्थात् कालीयकुण्ड)--शीत से दुःखित भगवान् ने सूर्य को देखा कि श्री कृष्ण के समीप बारह सूर्य तपने लगे और यहां ही कालीय को नष्ट किया। आदित्यों को श्री कृष्ण ने वहां स्थापित करके कहा कि तुम वर मांगो। आदित्यों ने कहा कि इस तीर्थ में हमें वास मिले। भगवान् ने कहा कि इसका नाम द्वादशादित्य होगा। चैत्र शुक्लपक्ष की ६ को इसमें जो स्नान करेगा, वह सब कामनाओं को प्राप्त होगा।

प्रस्कंदनतीर्थ--इसमें स्नान का फल स्वर्गलोक है। जो मनुष्य मथुरा में तीन दिन रहकर भी गोविन्द का पूजन करते हैं, वे वैकुंठ को प्राप्त होते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यमलार्जुन-तीर्थ (महावन में)--यहां एक कुण्ड है, जहां शकट ओंधा गिरा है। वहां स्नान और उपवास से अनन्त फल होता है। ज्येष्ट शुक्ला १२ को स्नान दान करने से महा पातक नष्ट होते हैं--

वहुला-वन तीर्थ---इसमें चैत्र शुक्ला १४ के स्नान से बैकुण्ठ होता है।

अग्निभांडह्रद---जिसमें प्रतिदिन आदित्यों का दर्शन होता है, उस में स्नान से सूर्य लोक और मरने से बैकुण्ठ होता है॥

१ अर्कस्थल—स्नान से सूर्यलोक होता है। अर्क स्थल के समीप सप्तसामुद्रिक-कूप है उसके स्नान से उत्तम गति और मरने से बैकुण्ठ होता है।

२ वीर स्थल तीर्थ—इसके स्नान और एक रात्रि के वास से वीरलोक और मरने से बैकुण्ठ होता है।

३ कुशस्थल---स्नान का फल ब्रह्मलोक होता है।

४ पुष्पस्थल---स्नान से पुण्य लोक, मरने से बैकुण्ठ होता है।

५ शिवस्थल स्नान से शिव लोक होता है। इन पांच स्थलों के स्नान से ब्रह्मलोक होता है।

गोपीश्वर महादेव--शिवजी ने रास क्रीड़ा देखने के लिये गोपियों का वेष धारण किया। देवताओं के कहने से मातलि ने रत्न और औषधियों से भरे हुये सात कलशों से स्नान कराया और पूजन किया। शिवजी का स्थापन किया और एक कूप उन्हीं कलशों के जल से स्थापित किया। जिसको सप्तसामुद्रिक कहते हैं। जो मनुष्य सोमवार और ३० मावस को उक्त कूप पर श्राद्ध करता है, उसके ७७ कुल पार होते हैं और गया पिण्डदान का फल मिलता है। यहां मरने से इन्द्र लोक को प्राप्त होता है और बहुल, रुद्र गोविन्द, ब्रह्मेश्वर गोपीश्वर इनके मध्य में स्नान और पिंडदान से दस पिछले दस अगले पितर मोक्ष को प्राप्त होते हैं।

वत्सपुत्रतीर्थ---इसके स्नान और मरण का फल बैकुण्ठ है॥

फाल्गुण तीर्थ--इसके स्नान का फल बीर लोक की प्राप्ति है।

हर्ष भंजन इसमें स्नान का फल स्वर्गलोक और मरण का फल बैकुण्ठ है।

तालवन--यह मथुरा से पश्चिम की तरफ दो कोश है। इसके कुण्ड में स्नान करने से वाञ्छित फल की प्राप्ति है।

सर्वांतक-तीर्थ--इसके कुण्ड में स्नान और एक रात्रि के उपवास से अग्निष्टोम यज्ञ का फल और मरने से बैकुण्ठ होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

शांतनु कुण्ड--मथुरा से पश्चिम की तरफ दो कोश है। यहां तप करने से देवकी को भगवान उत्पन्न हुये। उस कुंड में शुक्ल पक्ष की सप्तमी को जो स्नान करता है, उसको सर्व फल मिलते हैं। इसमें स्नान से शांतनु राजा के भीष्म पुत्र हुए।

श्री मथुरा जी का मंडल २० योजन है। देवशयन में अथवा देव शयन के अनन्तर जो मथुरा का दर्शन करते हैं, उनका सात जन्म का पाप दूर होता है। और जो मथुरा मंडल की परिक्रमा करते हैं। उनको पृथ्वी की परिक्रमा का फल मिलता है और केशव का दर्शन और केशव को दीपदान से विमान मिलता है और देवता गंधर्व भी यह चाहते हैं कि मथुरा में जन्म हो। इस मंडल की आठों दिकपाल और मध्य में शिवजी रक्षा करते हैं और जो मथुरा में केशव का मन्दिर बनाता है, वह चतुर्भुजी भगवान् के रूप को धारण करता है।

बिमलोदक कुण्ड--इसमें स्नान करने से सब पातकों से छूटता है। मथुरा में पद पद पर तीर्थ हैं। उनमें और श्री यमुनाजी के प्रवाह में स्नान करने से परम गति होती है।

मुचकंद-तीर्थ--यहां मुचकंद सोये हैं। यहां स्नान करने से वाञ्छित फल और मरने से वैकुण्ठ होता है और मथुरा में केशव भगवान की प्रदक्षिणा करने से जन्म नहीं होता। यदि होता है तो राजा होता है। जो मनुष्य कार्तिक में प्रदक्षिणा करता है वह सब पापों से छूटता है। ब्रह्म-हत्यारा, मद्यप, गौ घातक, भग्नव्रत, ये सब पवित्र होते हैं।

बिमलोदक तीर्थ--चतुः सामुद्रिक--ये दो कूप हैं। इनके स्नान से स्वर्ग लोक और मरने से वैकुण्ठ होता है। मथुरा को परिक्रमा से सब तीर्थों का फल होता है। जो मनुष्य कार्तिक शुक्ला ८ को बिश्रांत घाट पर स्नान, केशव का दर्शन, और मथुरा की परिक्रमा करता है, वह पृथ्वी की परिक्रमा के फल को प्राप्त होता है।

परिक्रमा की विधि यह है कि सायंकाल को दन्त धावन करि के शयन करै ब्रह्मचर्य से रहै। प्रातः काल उठ कर ब्राह्ममुहूर्त में यात्रा का प्रारंभ करै और तीर्थों में स्नान करै। पूर्वोक्त स्थल वन, कुण्ड आदि के दर्शन और स्नान करै।

सिद्ध सुख शिवजी और हयमुक्त के दर्शन करै। एक सिंदूर राजा ने घोड़े पर चढ़कर यात्रा की थी। घोड़ा तिलिस्म हो गया, राजा न हुआ। इससे सवारी में यात्रा न करै। लवण की गुहा, शत्रुघ्न का दर्शन, शिवकुण्ड, मल्लिका देवी का दर्शन, कदंब

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

खंड,गुह्यतीर्थ,उज्वाला,वरदा देवी, चर्चिका,योगिनी, स्पृशा, संस्पृशा, दीमातर, देवी,वर्ष स्थान, चेत्रपाल भूतेश्वर, कृष्णकी क्रीड़ाका सेतुबंध, कुक्कुटक्रीडन, स्तंभी-क्षाप,नारायण स्थान,सिद्धिविनायक, कुब्जिका, वामनादीनी,ब्राह्मणी, लोहजंग रंभा,ललिता,महाविद्येश्वरी,संकेत केशा, इनके दर्शन करे और वहां एक कुण्ड है उसमें स्नान करे तौ सिद्धि को प्राप्त हो।गोकर्णशिव,विघ्नराज,गार्गीदेवी,सुखाकार महादेव,उत्तरकोटगणेश्वर, गोपालक्षण, सोमतीर्थ,चक्रेश्वर,भद्रेश्वर, घंटाभरण, धराधीप, गरुड़केशव, मणिकर्णिका,संयमन, अग्निकुण्ड,गोपतीर्थ, मुक्तिकेश्वर गरुड़तीर्थ,-विश्रांततीर्थ इन सब तीर्थों में स्नान करि के देवता और पितरों के पूजन से सिद्धि को प्राप्त होता है,और सब देवताओं और विमुक्तेश्वर से प्रार्थना करें कि यात्रा सफल हो फिर विश्रांत घाट सुमंगलादेवी पिप्पलादेश्वर,कर्कोटक-नाथ, सुखवासादेवी,सिद्धादेवी (इनका पूजन श्रीकृष्ण ने कंसके मारने के लिये किया है)सकुनाथ बज्रानन,सूर्यसंवर इनका दर्शन करके यात्रा को समाप्त करें।इस यात्रा से ब्रह्महत्यादि आदि संपूर्ण पापों से मुक्त होते हैं और इसके माहात्म्य सुनने से मुक्ति होती है और मथुरा के वास से नरक नहीं होता॥

महोदय नगर का एक ब्राह्मण था।वह शालिग्राम-तीर्थ में गया।उसको कल्प-ग्राम का वासी सिद्ध मिला।वह कल्पग्राम की नित्य प्रशंसा किया करता था। एक दिन उस ब्राह्मण को कल्पग्राम में अपनी सिद्धि से ले गया।वह ब्राह्मण जब मरने लगा तब अपने पुत्र से बोला कि मुझे गंगा पर ले चल।जब पुत्र गंगा पर ले गया,तब पिता के मुंह से रोने लगा।एक दिन किसी ब्राह्मण के घर में भोजन के लिये गया। उसने उसका आदर किया और अपनी कन्या उस लड़के को विवाह दी।वह लड़का अपने श्वशुर के यहां भोजन किया करता था और पिता की सेवा किया करता था।एक दिन लड़का अपने श्वसुर से बोला कि जाने हमारे पिता ने क्या पाप किया है,बड़े दुःखी हैं और प्राण नहीं निकलते।श्वसुर बोले कि तेरे पिता ने शूद्र का अन्न भक्षण किया है,इससे प्राण नहीं निकलते। यह वृत्तान्त लड़के ने अपने पिता से कहा कि आपके चरणों में शूद्र का अन्न है;और ऊपर के देह में ब्राह्मण का।जब प्रातःकाल लड़का अपने श्वसुर के यहां चला गया,तब एक पत्थर से उसने अपने पैरों को तोड़ा और वह मृत्यु को प्राप्त हो गया।लड़के ने आन कर देखा तो पिता मरे पड़े हैं।शास्त्र को विचार के देखा कि आत्मघाती की क्रिया नहीं होती।ऐसा सोचकर श्वसुर के यहां गया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

और सब वृत्तान्त सुनाया। जामाता के वृत्तान्त को सुनकर श्वसुर ने कहा कि तुम्हें ब्रह्महत्या लगी है। मथुरा के दर्शन को वह लड़का कल्प ग्राम से मथुरा को आया। कन्यापुर-निवासी कुशिक राजा के चेत्र में दो सहस्र ब्राह्मण नित्य भोजन किया करते थे। उनके उच्छिष्ट को खाया करता था और चक्रतीर्थ में स्नान किया करता था। भिक्षा आदि कुछ नहीं किया करता था। इस बात को श्वसुर ने दिव्यज्ञान से देखकर अपनी कन्या को भोजन-सामग्री सहित मथुरा में भेजा। उस लड़के से ब्राह्मणों ने पूछा कि तू कहां भोजन करता है? उसने सब वृत्तान्त कहा। ब्राह्मण बोले कि तू उच्छिष्ट का भोजन करने वाला शूद्र है, परन्तु चक्रतीर्थ के स्नान करने से शुद्ध हो गया। उससे स्त्री बोली कि तू अब ब्रह्महत्या से शुद्ध हुआ। अब मेरे हाथ का भोजन करो। ये दोनों शुद्ध होकर कल्प ग्राम को चले गये। जहां यह लड़का भोजन किया करता था, वह भद्रेश्वर तीर्थ है। इसमें अहोरात्र के उपवास से इस मथुरा के सब तीर्थों का और अश्वमेध आदि यज्ञों का फल मिलता है।

वैकुण्ठ-तीर्थ—एक समय मिथिला के निवासी संपूर्ण वर्ण के लोगों ने वराह-तीर्थ में स्नान कर मथुरा में आकर वैकुण्ठ तीर्थ में स्नान किया—उनमें एक ब्राह्मण ब्रह्महत्यारा था, जिसके हाथों में से रुधिर की धारा जाती थी—भगवान् ने एक ब्राह्मण का रूप धरकर सब ब्राह्मणों से कहा कि वैकुण्ठ तीर्थ में स्नान करने से इसकी ब्रह्महत्या दूर हो गयी।

असिकुण्ड-तीर्थ, गंधर्व कुण्ड, इसके स्नान से गंधर्व लोक मिलता है।

२० योजन कमलाकार मथुरा मंडल में केशव भगवान् मध्य में हैं। केशव भगवान् के चारों तरफ एक योजन के बीच में जो मरते हैं, वे मुक्त होते हैं और पश्चिम में गोवर्द्धन पर हरिदेव हैं। इनके दर्शन से जन्म मरण छूटता है। उत्तर में गोविन्द देव हैं, जिन के दर्शन से प्राणी भव सागर तर जाते हैं॥

पूर्व में विश्रांतिश्वर हैं, जो मुक्ति के दाता हैं और दक्षिण की तरफ वाराहजी हैं। सतयुग में मांधाता राजा ने मेरी भक्ति की। उसको मैंने यह प्रतिमा दी थी। जब लवण राक्षस को शत्रुघ्न ने मारा, तब कपिल ब्रह्मर्षि ने इस प्रतिमा को स्थापन किया था--कपिल मुनि ने यही प्रतिमा इन्द्र को दी। फिर इन्द्र नित्य पूजा करता था। इन्द्र के जीतने को जब रावण स्वर्ग में गया, देवताओं को जीत कर कपिल वाराह की मूर्ति को शिर से उठाकर पृथ्वी में ले आया। वाराहजी ने रावण को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोह करदिया। रावणने स्तुति की कि तुम मुझ पर प्रसन्न हो, मैं आप को लंका लेचलूंगा।

वाराहजी प्रसन्न हुए, फिर मूर्ति को उठाने लगा तो न उठी। फिर स्तुति की कि महाराज मैं तुम्हें लंका में लेचलूंगा, आप मुझपर प्रसन्न हो। उसकी भक्ति से वाराहजी लघु होगये। पुष्पक-विमान में रख कर रावण ने लंका में स्थापन किया। जब रामचन्द्र लंका को जीत और रावण को मार कर विभीषण को राज्य दिया, तब विभीषणने सब धन को रामचन्द्र जी को अर्पण किया। रामचन्द्र ने सब धन को त्याग कर कपिल-वाराह को लाकर अयोध्या में स्थापन किया। ग्यारह सहस्र वर्ष के अनंतर मथुरा वासी ब्राह्मणों की यज्ञ लवण राचसने नष्टकर दी। वे रामचन्द्र की शरण गये, रामचन्द्र ने शत्रुघ्नको भेजा। शत्रुघ्न ने लवण राचसको मार कर मथुरा में प्रवेश किया। माथुर ब्राह्मणों का पूजन किया। जब लवण को मार कर शत्रुघ्न रामचन्द्र के पास गये, तब रामचन्द्र बोले कि वर मांग, शत्रुघ्न बोला कि महाराज! कपिलवाराह को मथुरा में स्थापन करने के लिये मुझे दो। रामचंद्र ने कपिलवाराह को देदिया। शत्रुघ्न ने मथुरा में आनकर स्थापन किया। इस प्रकार कपिलवाराह का मथुराजी में आगमन हुआ। ज्येष्टपुष्कर और गया के पिंडदान से जो फल प्राप्त होता है, वह फल वाराह के दर्शन से होता है।

विश्रांतेश्वर, गोविन्ददेव, केशव, दीर्घविष्णु, इनका भी यही फल है। प्रातःकाल के समय भगवान् का तेज विश्रांत में, मध्यान्ह में दीर्घ विष्णु में, और चौथे भाग के समय केशव में रहता है॥

गोवर्द्धन मथुरा से पश्चिम दो योजन पर है। वहां एक कुण्ड और चार तीर्थ हैं। पूर्व में ऐन्द्र, दच्छिण में यम, पश्चिम में वारुण, उत्तर में कुवेर का तीर्थ है। इन सब में स्नान करने से इंद्र लोक, सब पापों की निवृत्ति, वरुण लोक, कुवेर लोक, ये सब मिलते हैं, मरने से बैकुण्ठ होता है।

अन्नकूट, मानसी गंगा, गोवर्द्धनहरि, इनकी परिक्रमा से सब दुःख निवृत्त होते हैं। सोमवती आमावस्या को पिंडदान से और परिक्रमा से राजसूय और अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। भाद्रपद को शुक्ल ११ को प्रदच्छिणा करे और कुण्ड में स्नान करे, पितरों का तर्पण करे।

अप्सरा कुण्ड---संकर्षण तीर्थ---इनके स्नान से गो हत्या दूर होती हैं॥

शुक्रतीर्थ—इसके स्नान से सौ यज्ञ का फल मिलता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizaqtion by eGangotri

कादंब कुण्ड, इसके स्नान से और यहां पर पितरों के पूजन से ब्रह्मलोक मिलता है।

देवगिर--इसके स्नान से वाजपेय-यज्ञ का फल मिलता है।

महादेव, इन के दर्शन से यात्रा सफल होती है--गंगा और चक्र तीर्थ के उत्तर अरिष्ट-तीर्थ जहां अरिष्टासुर और वृषभासुर को मारा है--राधा कुण्ड इन दोनों के स्नान से संपूर्ण हत्यां दूर होती हैं और संपूर्ण यज्ञों का फल मिलता है।

गिचराज-तीर्थ, इन्द्र ध्वज, चक्र तीर्थ, पचतीर्थ कुण्ड इनमें स्नान करता हुआ जो परिक्रमा करै, वह सब पापों से छूटता है॥

दक्षिण देश के प्रतिष्टान नगर में एक सुशील बैश्य था, परन्तु वह जप, होम न करने से दरिद्री था—वह मर कर जङ्गल में प्रेत हुआ। दैव योग से वृक्षमूल के नीचे बसता था। वहां एक यात्रियों का संग आया। उस संग के किसी बैश्य ने उस प्रेत को देखा। जब वह बैश्य चलने लगा, तब प्रेत ने कहा कि तू अब कहां जाता है? अब मैं तुझे भक्षण करूंगा। उसने कहा मेरा कुटम्ब, मेरी पतिव्रता स्त्री, मेरे पुत्र मेरे भक्षण से मर जांयगे। उस प्रेत ने कहा कि तू कहां रहता है? बैश्यने कहा कि मथुरा में" प्रेत० "मैं तुझे भक्षण न करूंगा, मथुरा में जाकर तू विश्रांति, चतुःसमुद्र कूप में स्नान करि के मेरे निमित्त पिंडदान करे और स्नान का फल दे" बैश्य० "मैं द्रव्य के विना मथुरा कैसे जाऊं? इससे मुझे तू भक्षण करले" प्रेत० "तेरे घर में बहुत धन है" बैश्य० "मेरे घर में कुछ धन नहीं, बड़ों का नाम बाकी है" प्रेत० "तेरे घर एक गड्ढे में उस स्थान पर सोने का भार है" बैश्य० (प्रसन्न होकर) "यह तुझे कैसे ज्ञान हुआ?" प्रेत० "प्रतिष्टान पुर में विष्णु के मन्दिर में एक ब्राह्मण पुराण की कथा सुनाया करते थे उसमें मैंने सुना है कि चतुःसमुद्र कूप में स्नान करने से सब पाप दूर हो जाता है। मेरे मित्र ने कहा कि तू भी कुछ दान दे। उसके कहने से मैंने एक मासा सोना दिया और कोई तीर्थ न जप न तप किया तिससे प्रेत होगया" बैश्य० "तेरे प्राण कैसे जीते हैं?" प्रेत० "एक मासे सोने के दान से तृप्त रहता हूं"। बैश्य ने मथुरा में आकर स्नान किया, फिर प्रेत के निमित्त पिंड दान किया। वह प्रेत स्वर्ग में चला गया, सब पुरियों में मथुरा धन्य है, जो मनुष्य सहस्र बर्ष पर्यंत एक पैर खड़ा होकर तप करे, उससे अधिक पुण्य मथुरा के निवास का है॥

असिकुण्ड---सुमति नाम एक राजा था वह तीर्थयात्रा के लिये अपने पुत्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को घर का भार देकर तीर्थ यात्रा को गया और मरगया। उसका पुत्र विमति राजा हुआ। उसके यहां एक दिन नारद मुनि आये। उसने यथोचित् पूजन किया और नारद मुनि यह कहकर अन्तर्ध्यान होगये कि जो पुत्र पिता के ऋण से दूर होता है वही धर्मवान् होता है। राजा ने मंत्रियों से पूछा कि ऋषि यह क्या कह गये? मंत्री बोले कि तुम्हारे पिता तीर्थ यात्रा में मरे हैं। तीर्थों पर क्रोध होकर विमति बोला कि मथुरा में चलकर वर्षा के चार महीने बसें, वहां सब तीर्थों से पूछें कि तुम्हारी यात्रा में मेरे पिता की मृत्यु क्यों हुई और उत्तम कर्म का अधम फल क्यों हुआ। तीर्थों को सोच हुआ कि यह हमें नष्ट करेगा। इससे हमारी न्यूनता होगी। सब तीर्थों ने कल्पग्राम में जाकर बाराहजी की स्तुति की। बाराहजी ने तीर्थों की प्रार्थना सुनकर असि (तलवार) से विमति को नष्ट किया--परन्तु असि का अग्र भाग टूट पड़ा। बाराहजी ने मिट्टी खोद कर असि पर लगाई। इससे वह विख्यात असिकुण्ड हुआ। उस दिन से भगवान् बाराह पश्चिम की ओर मथुरा में रहते हैं। उनके चार नाम हैं--बाराह, नारायण--लांगल--वामन--। इन चारों का दर्शन और असि कुण्ड में स्नान जो करता है उसको पृथ्वी की परिक्रमा का फल मिलता है--द्वादशी के दिन प्रातः-काल स्नान कर के इनका जो दर्शन करता है, वह पुनःजन्म को नहीं धारता।

बिश्रान्त--उज्जयन में एक भ्रष्ट चोर ब्राह्मण हुआ। वह चोरी करने लगा। एक दिन राजा के सिपाहियों ने पकड़ लिया। उनके आगे से भागकर अंधकूप में गिर और मर कर घोर प्रेत होगया--दैवयोग से वहां एक जात्रियों का संग आया। उनमें एक ब्राह्मण राक्षस का रूप धरे सब संग की रक्षा किया करता था। राक्षस ब्राह्मण से बोला कि बहुत समय में मुझे भोजन मिला है, तू यहां से अन्यत्र चला जा। मैं इस संग को भक्षण करके तृप्त हूंगा"--ब्राह्मण ने कहा कि मैं इसकी रक्षा करता हूं, इसको छोड़ कर कैसे चला जाऊं? राक्षस ने कहा कि मेरे भोजन को क्यों बिगाड़ता है? तू मुझ पर दया कर--ब्राह्मण ने पूछा कि तू किस पाप से राक्षस हुआ? उसने अपना सब वृत्तान्त कहा। ब्राह्मण ने कहा कि तू वर मांग, तेरे उपर मैं प्रसन्न हूं, तुझे मैं क्या दूं? राक्षस ने कहा कि मथुरा के बिश्रान्त का फल। ब्राह्मण ने पूछा कि तू बिश्रान्त-तीर्थ को कैसे जानता है? राक्षस ने कहा कि उज्जयनपुरी में मैं एक दिन बिष्णु मन्दिर में गया था। वहां कथा में बिश्रान्त का माहात्मय सुना था--वहां कंस को मार कर भगवान् ने बिश्राम किया है। ब्राह्मण ने एक स्नान का फल दिया। इससे वह राक्षस मुक्ति को प्राप्त होगया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्षेत्रपाल--इनके दर्शन से मथुरा के बास का फल मिलता है, महादेव ने सहस्र वर्ष पर्यंत तप किया। बाराह भगवान् ने प्रसन्न होकर कहा कि वर मांगो। महादेव ने मथुरा में बसने को स्थान मांगा। वाराहजी ने कहा कि मथुरा में तुम क्षेत्रपाल हो कर बसो।

जो कोई जीव मथुरा में बसते हैं, वे सब मुक्ति को प्राप्त होते हैं--साठ कोटि और साठ कोटि शत तीर्थ मथुरा में हैं--उनमें गोवर्द्धन, अक्रूर, प्रस्कन्दन--भांडीर, बिश्रान्त, असिकुण्ड, बैकुण्ठ, अविमुक्त, सोमतीर्थ--यामुन -- तिंदुक -- चक्रतीर्थ द्वादशादित्य, ये सब से उत्तम हैं।

अर्द्धचन्द्रतीर्थ--इसमें स्नानसे अक्षय लोक होते हैं। दक्षिणसे यात्रा का प्रारंभ करे। उत्तर को यात्रा समाप्त करे--और यज्ञोपवीत मार्ग से यात्रा करे। मौन धारण किये हुये घरसे निकले, वामन देव का पूजन करे-- ब्राह्मणों को भोजन करावें और यज्ञोपवीत का दान करे--जो अर्धचन्द्र में स्नान कर के मरते हैं, फिर जन्म नहीं पाते--माथुर ब्राह्मणों का पूजन करे क्योंकि उनकी तृप्ति से मैं तृप्त होता हूं।

एक समय गरुडजी मथुरा में आये और भगवान् की स्तुति की, भगवान्ने कहा कि मैं तेरे मथुरा आने से प्रसन्न हुआ, परन्तु तेरा आने का क्या प्रयोजन है? गरुडने कहा कि यहां आनेकर आपके और माथुर ब्राह्मणों के रूप में भेद नहीं देखा। भगवान्ने कहा कि इनके और मेरे रूप में कुछ भेद नहीं है। ऐसे कहकर भगवान् अंतर ध्यान हो गये और गरुडजी चले गये। यहां मरे हुये कीट आदि भी मुक्त होते हैं।

पद्मनाभ--अश्विनको १२ के दिन जो इनका दर्शन करता है, वह योनि के संकट को नहीं भोगता और ये पद्मनाभ शिव के शव दोनों का रूप हैं।

दीर्घ विष्णु, चैत्र शुक्ल की १२ को इस तीर्थ में स्नान और बिष्णु का पूजन जो करेगा, उसके सब शोच निवृत्त हो जांयगे और एकादशी के व्रत के अनंतर यशोदा, देवकी, महा बिद्या, इनके दर्शन से ब्रह्म हत्या निवृत्त होती है।

यमवापी--इसमें जो स्नान करता है, वह यमराज का दर्शन नहीं करता और जिनके इसमें अस्थि पड़ते हैं, वे और जिनका अर्द्धचन्द्र में कर्म होता है वे स्वर्ग में जाते हैं।

गोकर्ण--इसके पिता वसु कर्ण नामा जाति के वैश्य थे। उनकी स्त्री सुशीला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

थी।वह सन्तान के लिये त्रिकाल देव पूजन करती थी।एक उग्र तपा नाम का ऋषि सरस्वती के संगम में जो वसे था,उसके समीप गई और नमस्कार करके सन्तान के लिये सोच करने लगी।उसके बिलाप को सुनकर ऋषि को दया आई और ध्यान और विचार कर कहा कि,शिवजी का गोकर्ण रूप है, उनकी तू सेवा कर।

यह वृत्तान्त उसने अपने पति को कहा।दोनों स्त्री पुरुषों ने दश वर्षतक गोकर्ण की पूजा की।गोकर्णजीने प्रसन्न होकर कहा कि तुम्हारे गुणवान् एक पुत्र होगा,परन्तु उस पुत्रके सन्तान न होगी। होगी तो देवताओं की प्रसन्नतासे होगी।यह सुन कर प्रातःकाल एक सहस्र ब्राह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा दी।दश महीने के अनन्तर पुत्र हुआ।पुत्र के जन्मोत्सव में एक सहस्र गौ ब्राह्मणों को दी और जात कर्म आदि संस्कार किये और गोकर्ण नाम उस का रक्खा,और पुत्र का विवाह किया,और सन्तान के न होने से चार विवाह किये।परन्तु संतान एक स्त्री के भी न हुई।उस गोकर्ण ने बहुतसा धर्म किया, देवताओं के मन्दिर बनवाये और गोकर्णेश्वर के समीप चक्रपाणि से पश्चिम की ओर बिष्णु के पांच मन्दिर बनवाये और बड़ा सुन्दर बाग लगवाया,जिसमें नाना प्रकार के वृक्ष और फूल होते थे।उस बाग में से चारों स्त्री फूल बीन २ कर गोकर्ण को पूजा किया करती थीं और वें चारों स्त्री पतिव्रता थी और परस्पर उनका प्यार था। ॥

इसी प्रकार मथुरा में बसते हुए गोकर्ण का धन नष्ट होगया।फिर उसे चिन्ता हुई कि किस प्रकार कुटुम्ब की पालना होगी।ऐसे बिचार कर पूर्व दिशा में गया।वहां से बहुतसा माल लेकर उत्तर दिशा को भेजा और उत्तर दिशा से वहां मंगवाया।इस प्रकार अश्व और अनेक प्रकार के रत्न लेकर मथुरा को चला। एक दिन नाव को एक पर्वत के समीप टिका दिया और सब काम अपने सेवकों को बता कर पर्वत के ऊपर शोभा देखने के लिये कुछ सेवकों सहित चला गया।पर्वत पर एक उत्तम स्थान देखा जिसमें नारंगी,फल,फूल वाले वृक्ष थे।एक गुफा देखी उस गुफा के द्वार पर भीतर से शब्द आया कि स्वागत(आप का आना अच्छा हुआ)।इस वाणी को सुन कर गोकर्ण को आश्चर्य हुआ और देखा कि एक पींजरे में तोता बैठा है। तोते ने कहा कि आओ बैठो पाद्य,आसन, अर्घ, स्वादिष्ट फल, मधु, इन सबको आप और आप के सेवक ग्रहण करो और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जब मेरे माता पिता आवेंगे तब विशेष सत्कार करेंगे क्योंकि जो गृहस्थी अतिथि का पूजन नहीं करता उसके पितर नरक में जाते हैं और अतिथि के पूजन से स्वर्ग में जाते हैं।"

ऐसे २ तोते की वाणी सुन प्रसन्न होकर गोकर्ण बोला "तू देवता है वा ऋषि है? तोता बोला व्यास जी के पुत्र शुकदेवजी तप करते थे। उनके समीप मार्कण्डेय भृगु सुतन्तु आदि ऋषि पुराणों को सुनने के लिये आये और मैं वामदेव का शिष्य शुकोदर नाम था और वारंवार तर्कना से प्रश्न करने लगा। गुरू ने मने भी किया परन्तु मैं न हटा। जब ऋषियों के प्रश्नोत्तर के बीच २ में बोलता ही रहा, तब क्रोध कर शुकदेव जी ने मुझे शाप दिया कि "तू शुक (तोता) होजाय" जब मैं शुक होगया। ऋषियों ने शुकदेवजी से कहा कि क्षमा करो' शुकदेव बोले कि मेरी वाणी अन्यथा न होगी। भविष्य काल में तुम्हारे अनुग्रह से इसको वर दूंगा और इस को पुराण शास्त्रों का ज्ञान रहेगा और यह मथुरा में मर कर स्वर्ग लोक को जायगा।"

"इस प्रकार शुकदेव जी के शाप और वर को ग्रहण करके वहां से मथुरा २ शब्द करता हुआ उड़ा। प्रति दिन उड़ता हुआ मैं हिमाचल की कंदरा से यहां पर आया और थक गया और एक भील ने मुझे पींजरे में पकड़ लिया और वह भील और उसकी स्त्री मेरे संग क्रीड़ा करते हैं।" शुकदेव मुनि की कृपा के पात्र तोते के इन वचनों को सुन कर गोकर्ण बोला कि "मैं भी उसी मोक्ष के देने वाली मथुरा में रहता हूं और व्यापार के लिये परदेश में आया था, अब मथुरा को जाता हूं।" गोकर्ण की यह बात सुनकर तोता बड़ा प्रसन्न हुआ। इतने में भीलनी भी सोकर उठ खड़ी हुई। आसन पर बैठे हुए सुन्दर रूप गोकर्ण को देखा। शुक ने भीलनी से कहा कि "इस अतिथि का पूजन करो।" इसी प्रकार वन से जब पिता भील आये उनसे भी कहा---भीलनी ने गोकर्ण की पूजा करके फल, और मधु, देकर कहा कि "तुम्हारा क्या सत्कार करें" गोकर्ण बोला "यह पींजरे का तोता मुझे देदो। इस को मैं पुत्र बनाऊंगा।" भील बोला कि "यमुना और सरस्वती के संगम में स्नान का जो फल है, वह हमें दो तो तुम्हें तोता दें।" गोकर्ण बोला कि "संगम के स्नान का क्या फल है?" भील बोला कि "मथुरा के स्नान और श्रवण द्वादशी व्रत का जो है, वही फल सरस्वती [संगम] का है। इस तोते ने हम से कहा है। और यम की पुरी में वह मनुष्य नहीं जाता और बैकुण्ठ-वास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पाता है। गोकर्ण ने संगम के स्नान का फल भील और भीलनी को दिया और तोते को लेकर मथुरा पुरी को चला आया--मथुरा में बसते हुए जब बहुत वर्ष बीते और देवता के पूजन में संपूर्ण धन खर्च होगया, फिर उसी प्रकार रत्नों की नाव भर कर परदेश को चला और तोते को संग लिया और चारों स्त्रियों को कह गया कि मेरे माता पिता की आज्ञा में रहियो, और देव मन्दिर और बाग की सावधानी रखियो॥

यह कहकर फिर गोकर्ण नवका में बैठा रत्नाकर में पहुंचा। नाव में बैठे हुए सब मनुष्य मलाहों की असावधानी से अगाध समुद्र में चले गये और बल से नाव उलटी चली सब मलाहों को ज्ञान न रहा कि हम कहां जाते हैं और सब कहने लगे ऐसा कौन पापी है जिसके पाप से सब डूबते हैं इतने में इन सबको विलाप करते हुए चार पुरुष आये उन्होंने कहा कि छः महीने में फल की सिद्धि होगी। गोकर्ण तोते से बोला कि इन सब में पुत्र हीन होने से मैं ही पापी हूं। शुक बोला हे पिता! दुःखी मत हो मैं सब यत्न करता हूं। ऐसे पिता को समझाकर वहां से उड़ा और उत्तर दिशा के सन्मुख चला। वहां एक पर्वत को देखा और विष्णु के मन्दिर में गया और यह विचारा कि किसका मन्दिर है इतने में चिन्ता करते हुए तोते की सोने का पात्र हाथ में लेकर देवी विष्णु का पूजन करती भी हुई और नारायण को नमस्कार करके आसन पर बैठ गई और क्षणमात्र में उसी प्रकार की बहुत सी स्त्री पूजन करने को आईं और गीत, वाद्य, नृत्य करके चली गईं। फिर देव मन्दिर की दक्षिण दिशा में लाखों जटायु देखे। उनके बीच में यह छोटा सा तोता बैठा और अपनी बानी बोल कर उनकी शरण हुआ। वे जटायु इस तोते को समझा कर बोले तू इस समुद्र में कहां से आया? यह तोता बोला कि मेरे पिता की नाव समुद्र में बहगई है। उसकी रक्षा करने के लिये आपकी शरण आया हूं। पक्षी बोले चल तेरे पिता के सुख के लिये चलें; मेरे पैरों की गति के पीछे चला आइये। वह तोता उस जटायु करके सहित पर्वत को लंघ कर गया और पर्वत के पास नाव को ल्याकर खड़ी करदी और जहां विष्णु के पांच मन्दिर थे, वहां गया। उसी प्रकार सम्पूर्ण देवता विष्णु का पूजन करने को आये और गोकर्ण को भोजन के लिये इतने दिव्य फल दिये, जिन से तीन महीने तक तृप्त रहे और इस प्रकार पूजन करके जब देवता चले गये, तब वहां से अपनी नाव को गोकर्ण लेकर रत्नाकर में आगया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इनमें से गोकर्ण ने तोते को न देखा और सोच किया कि कहीं जल में तो नहीं डूब मरा और शोच कर कहने लगा कि जो कोई हमें तोते कूं लादे, उसे हम दो भाग रत्न देंगे। इतने में तोता आया। सोक से व्याकुल गोकर्ण तोते को बोला कि मथुरा में माता पिता के पास शीघ्र चलना चाहिये। तोता बोला मैं तुझे कैसे ले चलूं। उनका वचन तुझे कह दूंगा, तुम कहो सो उन्हें कह आऊंगा। गोकर्ण ने कहा कि बहुत अच्छा। फिर तोता मथुरा में गया और गोकर्ण के पिता की अवस्था देखी। और माता, पिता को यह निश्चय था कि गोकर्ण मर गया। तोते ने माता पिताओं को समझाया। गोकर्ण के जितने साथी थे, वे सब बहुत से रत्न लेकर चले आये और गोकर्ण तेरह बर्ष तक उसी मन्दिर के पास रहा कि जिस मन्दिर की देवी पूजा करने आया करें थीं ॥

एक दिन गोकर्ण ने उन देवियों को उदास देखा और कहा कि मेरे संग से इनकी यह दशा हुई है कि मैं पुत्र हीन हूं। गोकर्ण ने पूछा कि तुम उदास क्यों हो? देवी बोली पूछने योग्य बात नहीं, जैसा प्राणी करता है, वैसा ही भोगता है। फिर भी आग्रह से जब गोकर्ण ने पूछा, तब सब में बड़ी देवी बोली दुःख उसको कहना चाहिये कि जो दुःख को दूर करे। तथापि हम कहें तू सुन। एक रम्यणीक स्थान मथुरा है उसमें तीर्थ सेवा करने के लिये अयोध्या का राजा आया। उसने विष्णु के पांच मन्दिर बनवाये और बाग वाटिका कूप, प्रकार और बहुत से फूल फल वाले वृक्ष लगाये और वहां बसता रहा। उसके सेवकों ने बाग आदि सब नष्ट कर दिये और जिस की ऐसी कीर्ति थी, वह भी मृत्यु को प्राप्त हो गया। ऐसे कह कर सब रोने लगीं। गोकर्ण ने सबके चरण में शिर देकर शान्त किया और कहा कि जो मैं राजा होता तो उनको मनें करता, परन्तु क्या करूं, समर्थ भी मनुष्य दुखी हो जाते हैं। वे देवी बोलीं तू कौन है, कहां से आया है? गोकर्ण बोला कि मैं गोकर्ण हूं तुम कौन हो बताओ। देवी बोली कि हम पुष्पको जाती हैं। आराम (बाग) में रहती हैं। पहिले हम शींचने से प्रसन्न रहती हैं और अब छेदन के करने से मलीन हो गई हैं। पुण्य कर्म का जीव मन्दिर होता है, कूप शीचने वाला होता है, फल वाले वृक्ष पक्षी होते हैं, इस लोक में और परलोक में ये सब स्वामी की रक्षा करते हैं। गोकर्ण बोला बाग लगाने का और कूप मन्दिर बनवाने का क्या फल है? वे बोलीं यज्ञ से स्वर्ग होता है, और बाग कूप मन्दिर बनवाने से मोक्ष होता है। जब मालती ने यह कहा, तब गोकर्ण को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोह आगया उन्होंने समझाया और यह पूछा कि तू यहां क्यों आया है गोक र्ण बोला कि मेरे बूढे माता पिता हैं पतिव्रता चार स्त्री हैं और यह मेराही बगीचा है जो मैं वहां होता तुम ऐसी दुखी कभी न होती मालती बोली कि अभी विमान में बैठ कर मथुरा को चलो और भूषण रत्न फल ये राजा को भेट दो ऐसे सम्मति करके हरको और उन देवियों को नमस्कार कर के वहां से चलकर मथुरा में आया और राजा को बहुत से रत्न दिये और यह कहा कि इस स्थान से चलो क्योंकि आश्चर्य दिखावेंगे वे देवो साधु साधु (अच्छा २) ऐसे कह कर गोकर्ण को प्रशंसा करने लगी और स्वर्ग में गई और गोकर्ण ने तोता माता पिता चारों भार्या इनको प्रसन्न रक्खा विघ्नराज का पूजन किया ब्राह्मणों को दक्षिणा दी और यह कहा कि इस तोतेके प्रताप से मुझे नष्ट हुआ राज्य मिला और शुक के नाम से शुकेश्वर शिवजी का मन्दिर वनवाया और जिसमें दोसौ ब्राह्मण नित्य भोजन करें थे ऐसा क्षेत्र वनवाया वह शुक विमान में वैठकर स्वर्ग लोक को गया।

एक महा नाम ब्राह्मण वनमें रहताथा उसको यह इच्छा हुई कि तीर्थाटन करूंगा यात्रा के लिये चलते हुए उसने भयानक पांच प्रेत देखे उनसे पूछा तुम कौन हो उन्होने कहा कि हमारे नाम पर्युषित,सूचीमुख,शीघ्रग,रोधक,लेखक, हैं ब्राह्मण बोला तुम्हारे ये नाम कैसे हुए--प्रेत बोले कि मैने स्वयं स्वादु भोजन किया और ब्राह्मण को पर्युषित(वासी)दिया इससे मेरा नाम पर्युषित हुआ--इस ने बहुतसे ब्राह्मणों को अन्न के लिये सूचन किया और दिया नहीं इसमेंयहसूची मुख हुआ--और ब्राह्मण की याचना किये पीछे यह शीघ्र चला जया करता था इससे शीघ्रग नाम हुआ यह ब्राह्मणों के भय से घर में छिपकर भोजन करे था इससे रोधक नाम हुआ--और यह याचना करने पर मौन हुआ पृथिवीको लिखनेलगताथा इससेलेखक हुआ ब्राह्मण बोला तुम्हारा भोजन क्याहै प्रेत बोले कि कफ मूत्र बिष्टा ये जिनमें पड़े हों वे घर हमारे वास और भोजन के स्थान हैं-- और जिनमें मंत्र बलि गुरुओं की पूजा नहीं होती जिनमें जहां तहां पात्र पड़े रहते है जहां नित्य कलह होता है और जो भोजन आदि कुपात्रों को दिया जाता है वा विधि से हीन या उच्छिष्ट हमारा भोजन होता है हम प्रेत भाव से दुःखी हैं इससे वह उपाय कहो जिससे प्रेत न हो--ब्राह्मण बोला कि चांद्रायण आदि का कर्ता--मिष्टान्न का दाता--यतीयों का पूजक--सर्व भूतों पर दयालु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इत्यादि उत्तम कर्मों से प्रेत नहीं होता—प्रेत बोले कि प्रेत कौन २ कर्मों से होता है शूद्रान्न का भोजन पाखंडी मद्यप व्यभिचारी मांस भक्षक देव ब्राह्मण गुरु द्रव्य का चोर--कन्या का विक्रेता माता पिता भगिनी पुत्र इनका त्यागी--शूद्र का सेवक--इत्यादि पापों से प्रेत होता है--प्रेत बोले कि इनकी कौन कर्म करने से गति होती है ब्राह्मण ने कहा कि इनकी गति भाद्रपद की श्रवण द्वादशी को व्रत और मथुरा के संगम में स्नान करना है वहां वामन देव का पूजन—दान श्राद्ध से प्रेत नहीं होता—प्रेत बोले कि श्रवण द्वादशी के व्रत की विधि कहो--ब्राह्मणबोलावशिष्टजीने मांधाताराजाको इस व्रतका विधान जो कहा है उसको तुम सुनो--इस द्वादशी को व्रत करे संगम में स्नान वामन का पूजन करक का दान जो करता है उसको सुवर्ण सहित सहस्र गौ दान का फल होता है और स्वर्ग में वास होता है--पांच रत्नों सहित वामनकी मूर्ति को करवा कहते हैं उस मूर्ति को स्नान पूजा कर के ब्राह्मण को दे--इस मंत्र से आवाहन करे कि जो श्रवण नक्षत्र रूप से आकाश में स्थित है उसको मैं वांछित सिद्धि के लिये नमस्कार करता हूं--कमल नाभ केशव नारायण सर्व व्यापी को नमस्कार है इस मंत्र से स्नान करावे फिर शास्त्रोक्त मंत्रों से पूजा धूप--दीप नैवेद्य अर्घ--होम छत्रउपानह का दान दक्षिणा स्तुति कपिलाका--बिसर्जन(दान) करे जो मनुष्य सरस्वती यमुना संगम में इस विधि से स्नान करता है उसको सौ गुना पुण्य होता है मैंने आज तक तीर्थों का सेवन किया है इससे तुम (प्रेत) मुझे दुःख न देसके--श्रवण और द्वादशी के योग में इतने व्रत करे इतने एक का (श्रवण वा द्वादशी का) क्षय न हो ब्राह्मण के इस प्रकार कहते हुये पुष्प वृष्टि हुई और पांच विमान आये--देवताओं के दूतने कहा कि इस ब्राह्मण के प्रताप से तुमारी मुक्ति हुई--इससे सरस्वती संगम के स्नान से प्रेतों की मुक्ति होती है।

कृष्णगंगा--व्यासजी मानसी गंगा में स्नान करके यमुना में प्रति दिन स्नान करते थे सोम और वैकुंठ के मध्य में कृष्ण गंगा है जिसको कहीं पुराणों में संदेह होता है वह कृष्ण गंगा के स्नान से दूर होता है इस तीर्थ के स्वामी कालिंजर महादेव हैं जिसके दर्शन से कृष्ण गंगा का स्नान सफल होता है--व्यासजीने पक्ष में एक दिन मावस वा पूर्णिमा को भोजन कर के तप किया है उस तपके प्रताप से त्रिकाल दर्शी महात्मा व्यास जी होगये पंजाब का एक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वसु नाम का ब्राह्मण था—वह दुर्भिक्ष से पीड़ित होकर दक्षिण में गया—वहां जाकर उसने पांच पुत्र और एक कन्या पैदा की और उनके विवाह किये वह ब्राह्मण दक्षिण देशमेंही मरगया उसकी तिलोत्तमा विधवा कन्याने पिताके फूल मथुरामें आकर अर्द्ध चन्द्रतीर्थमेंडाले अस्थिके डालनेसे वहब्राह्मणप्रलयपर्यंतस्वर्ग में बसेगा, उन पांच भ्राताओं की छोटी भगिनी और बाल विधवा और अप्सराओं के समान रूपवती वह कन्या तीर्थ स्नान करती हुई एक दिन वेश्याओं के समूह ने देखी, और वे वेश्या कन्नोज के चत्र धर्म राजा(जिसका गर्तेश्वर शिवजी पर चित्त था)की थीं उन्होंने उस कन्याको बहका कर वेश्या कर लिया और वह कन्या वेश्याओं के संग महादेव के आगे नृत्य किया करती थी।

उसी ब्राह्मण के छोटे पुत्र पांचल्य ने सर्वत्र विचरते २ मथुरा में आकर निवास किया, वह एक दिन गर्तेश्वर के दर्शन को गया और उसी तिलोत्तमा (विधवा) के रूप को देख कर मोहित होगया और बहुतसा धन—वस्त्र--भूषण उसको देकर वशमें कर लिया--यद्यपि वहउसी वेश्याके घरमें बसा करैया तथापि मध्यान्ह को कृष्ण गंगा में स्नान करके अपने घर आया करता था इस प्रकार छः महीने जब बीत गये तब एक दिन पांचल्य को स्नान कर के आश्रममें बैठे हुये सुमन्तु ऋषिने देखा कि पांचाल्य ब्राह्मण के रोमों में से कोड़े निकलते हैं और स्नान करने के अनंतर सुन्दर रूप होजाता है, इस आश्चर्य को देख कर सुमन्तु बोले तू कौन है कहां से आया है,पांचाल्य ने कहामैं ब्राह्मण का पुत्रहूं व्यापार में लाभ के लिये आया हूं सुमन्तु बोले तुमारें देह में इस आश्चर्य से कुछ न कुछ महा पाप है विचार कर हम से कहो।

उस दिन रात्रि को उसने तिलोत्तमा से पूछा तू कौन है कहां से आई है वेश्या ने कहा गंगा के दक्षिण तट पर पांचल नगरी से मेरे माता पिता दक्षिण में चले गये थे उनके पांच पुत्र और एक मैं बाल विधवा कन्या थी--मेरा छोटा भाई बाल्य अवस्था में ही धन के लोभ से परदेश में चला गया था उसके अनंतर माता पिता मर गये उनके अस्थि लेकर एक संगके साथ यहां आई और इन वेश्याओं ने मुझे वश में कर लिया--मैंने दोनों कुलों के इकीस२पुरुष नरक में डाले ऐसे कह और घरका स्मरण करके रोनें लगी,और पांचाल भी मूर्च्छा से मृतक के समान होगया, रोती हुई उस तिलोत्तमा को उन स्त्रियोंने समझाया और पांचल्य के भी शरीर को मलर कर बड़े यत्नों से चेताया और मूर्च्छा का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

कारण पूछा पांचाल्य ने सब अपने कुल का चरित्र बर्णन किया और गमन के अयोग्य (भगिनी) तिलोत्तमा के संगम के प्रायश्चित्त करने में उद्युक्त हुआ (माता गुरुपत्नी भगिनी पुत्री पुत्रबधू इनके गमन का अग्नि में प्रवेश ही प्रायश्चितहै) पांचाली ने भी उसको अपना ज्येष्ट भ्राता सुन कर अंग के सब भूषण ब्राह्मणों को देदिये और यह निश्चय किया कि मैंभी अग्नि में प्रवेश करूंगी और कालंजर महादेवके मन्दिर को पूजा के निमित्त बहुत से रत्न आदि दिये इस बात को सुन कर मथुरा में सब मनुष्यों को आश्चर्य हुआ, और पांचाल्य ने भी माथुर ब्राह्मणों को बहुत धन दिया और ईशा वास्य मन्त्र का जप किया और ब्राह्मणों से कराया और कुछ धन अपने और्द्धदेहिक कर्म कांड के लिये शेष रक्खा और कृष्ण गंगा क्षेत्र में स्नान और प्रणाम कर कालंजर की पूजा के लिये धन दिया और सुमंतु मुनि के चरणों में पड गया और अपना अपराध (भगिनी गमन)बर्णन किया और आपने जो मेरे गात्र में कृमि देख कर कहा था वह आज सत्य होगया ऐसे मुनि को कह कर ज्वलती हुई अग्नि में जब प्रवेश करने लगा तब यह आकाश वाणी हुई कि शोघ्रता मत करो तुम दोनों पाप हीन हो दोनों गंगा सागर संगम में स्नान करो अथवा पृथिवी के सब तीर्थ पंच तीर्थों में हैं उनमें स्नान करो एकादशी को बिश्रांतमें द्वादशी को बाराह में त्रयोदशी को नैमिष में चतुर्दशी को प्रयाग में औरकार्तिक की पूर्णिमा को पुष्करजी में माघ की पूर्णिमा को त्रिवेणी में स्नान करने से मनुष्यके सब पाप छूटते हैं और मथुरा के इन पांचतीर्थों में जो स्नान से ब्रह्महत्या दूर होती है कि बिश्रांत,चक्रतीर्थ,सरस्वती,संगम असि कुण्ड,कालंजर – ज्ञान वा अज्ञान से किया पाप मथुरा में नष्ट हो जाता है और इन पांचों तीर्थों के फल से भी कृष्ण गंगा के स्नान का दश गुना फल है यह तीर्थों का महात्म्य वाराहजी ने पृथिवी से कहा है—और ज्येष्ट शुक्ल ८ को गंगोदक में स्नान करै वाराहजीको तीन दिन दीपदान करै द्वादशी को कृष्ण गंगामें स्नान कर कालंजर शिवजीकी पूजा करै फिर तीन दिन वाराह क्षेत्र में स्नान करै और शक्ति से दान दे द्वादशी को कालंजर का पूजन करने से मनुष्य सब पापों से छूटता है।

आकाश वाणी के इस कथन को सुनकर पांचाल्य ने सुमंतु ऋषि से पूछा कि तुम हमारे गुरु और पिता हो हेमुनि मैं अग्नि में प्रवेश करूं अथवा मथुरा में तीर्थ स्नान करके माथुर ब्राह्मणोंकी सेवा करूं सुमंतु बोले कि आकाश

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वाणी का कथन सत्य है पहिले भी तेरे गात्रों में से स्नान के अनंतर पाप नष्ट होता मैंने देखा है तू इस आश्रम में टिक चन्द्रकला के समान निर्मल होजा यगा और यह तेरी भगिनी भी पापोंसे निवृत्त होजायगी वे दोनों बहिनभाई पूर्वोक्त तीर्थ स्नान होगये इस मथुरा और कालंजर तीर्थ को महात्म श्रवणकरने से भी सौ गौदान का फल मिलता है। - जैसे मुझे हो

माध्यंदिन तीर्थ--द्वारका में बसते हुये श्रीकृष्णजी के समीप एक समय नारद मुनि आये श्री कृष्ण ने पाद्य अर्घ आदि से पूजन किया एकांत में कृष्ण को मुनिने यह कहा कि आपका जो जांववतीका पुत्र सांव है इसको देख कर आपकी १६ सहस्र स्त्रियोंका मन चलाय मान होता है इस बातकी चर्चास्वर्ग में नित्य होतीहै श्री कृष्णने सांवऔर संपूर्ण स्त्रियोंको बुलाया,सांब हाथजोड और खडा होकर बोला कि महाराज क्या आज्ञा है उस समय सांब के रूप को देख कर संपूर्ण स्त्रियों में काम देवका क्षोभ हुआ, श्री कृष्णने स्त्रियोंको कहा कि अपने २ घर पर जावो,श्री कृष्ण लज्जित होकर नारद को बोले कि स्त्रियां सुरूप पुरुष को देख कर मोहित होजाती हैं नारद मुनि ने कहाकि सत्य है परन्तु एक चक्र से रथ का गमन नहीं होता बिना पुरुष की इच्छा स्त्रियों का मन क्षुभित नहीं होता नारद मुनि के उक्त कथन को सुनकर श्रीकृष्णने सांव को श्राप दिया कि तू कुष्टी होजाय।

फिर नारद मुनि ने कहा कि हे सांव तू शाप निवृत्तिके लिये उदया चल पर सूर्य का आराधन कर और तेरे वृत्तान्तसे भविष्य पुराण होगा और उसपुराण को सुमन्तु ऋषि मुनियों के प्रति वर्णन करेंगे सांव ने कहा मैं उदयाचल पर कैसे जांऊ और पिताजी ने मुझे निर्दोष को दोष लगाया, नारद मुनिने कहा कि जो फल उदयाचल में सूर्य के आराधन से मिलता है वही मथुराकी कृष्ण गंगा में मध्यान्ह समय व त्रिकाल स्नान और सूर्य के आराधन से मिलता है

सांव कृष्ण की आज्ञा से मथुरा में आया और उदय होते हुये सूर्य की विधि पूर्वक पूजा करने लगा---सूर्य नारायण सांव पर प्रसन्न हुये और दूसरा रूप धारकर सांव के आगे आकर बोले कि जो तैने मेरी स्तुति की उससे मैं प्रसन्न हुआ फिर सूर्य ने अपने हाथ से सांव के देहका स्पर्श किया उससे सांव का शरीर सूर्य के समान दमक उठा।

फिर सांवने माध्यंदिनी शाखा के अनुसार मध्यान्ह समय यज्ञ किया जहां

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

यह यज्ञ हुआ उस माघ्य दिन तीर्थ में स्नान करने से सब पाप छूटते सूर्य ने उसी समय सांब को वेद पढ़ाया इस प्रकार सूर्य ने दो देह धार कर मध्यान्ह के समय सांब का कुष्ट दूर किया और कहा कि हे सांब तीर्थ याचा कर सूर्य के संग रात दिन भ्रमते हुये सांबने भविष्य पुराण का श्रवण किया और यमुना जी के मध्यमें सूर्य की मूर्तिका स्थापन किया अपने नाम से मथुरा मन्डल में सांबपुर बसाया माघ को सप्तमी के दिन उसपुर में रथयाचा होती है यह तीर्थ बैकुंठ तीर्थ से पश्चिम दिशा में है और पापका नाशक है।

मथुरा--शत्रुघ्नने जब लवण राक्षस को मारा तवद्विजों के अर्थ मार्गशिर की द्वादशी को उपवास करके अन्नोत्सव किया उस समय शत्रुघ्नको देखकर रामचन्द्र बड़े प्रसन्न हुये--और रामचन्द्रजीने भी उक्तद्वादशीको सकुटुंब अन्नोत्सव किया अज्ञान से जो पाप अथवा मैथुन शवस्पर्श--चांडालका स्पर्श रजस्वला स्पर्श अभक्ष्य भक्षण इत्यादि अपराध होजांय तो वर्ष दिन में एक वार बाराह क्षेत्र में वा कृष्ण गंगामें स्नान करने से शुद्धि होती है और भगवान् ने भूमि से कहा कि पृथिवी के सब तीर्थ शूकर क्षेत्रमें है इससे शूकरक्षेत्र मथुरा से कोटिगुना है और गंगा सागर संगम सब से उत्तम है उससे भी उत्तम मथुरा मंडल है योगी और ब्रह्मज्ञानी की जो गति होती है वही गति मथुरा के मरने से होती है।

ध्रुवतीर्थ -- इसमें पिंड देनेसे पितरोंकी मुक्ति होती है मथुरामें एक चन्द्रसेन धार्मिक राजा था उसके दोसौस्त्री थी उन सबमेंबड़ी और पुत्रवती चन्द्रप्रभा थी और उसको सौ दासीयोंमें एक प्रभावतीदासीकी दासीका नामबिरूपबिधि था और वहदासीमद्यमांसमें तत्पर थी उसके अचारणसे सब पितर नरक में पड़े थे एकसमयसबपितर ध्रुवतीर्थमें आयेजिनमेंकोई सुन्दर, कोई भयानक, श्यामरूप था--उनको आकाश आदि से आते सुभन्तुऋषिनेदेखा वे सब पितर संध्या से पूर्व जहां२से आये थे वहां२चले गये--और ध्रुवतीर्थमेंकोई मनुष्य न रहा--परन्तु उक्त मुनिने कंपता कृश क्षुधा से थकित विह्वल एक पितर को देखा और मुनि बोले तू कौन है क्योंकि मेरा कर्म ऐसे२छोटे बड़े दुष्टजीवोंको इस तीर्थमें देख २ कर नष्ट होता है पितर बोला ध्रुवतीर्थ में जो श्राद्ध करता है उसके पितर तृप्त होकर जाते हैं और मैं योनि संकर के दोष से सौ वर्ष हुये नरकमें पड़ा हूं जो और पितर आये थे उनको श्राद्ध मिला है इससे प्रसन्न होकर चले गये, मैं श्राद्ध हीन दुर्गति नही जासकता वे सब जातियों के पितर तुमने प्रसन्न होकरजाते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देखे और आइउन को मिलता है जिनके सुपात्र संतान हो, ऋषि बोले कि यदि तेरे सन्तान नहो है जो कुछ तू अपनी गति का उपाय मुझे बतावे तो मैं करूं जंतु बोला कि जो मेरे शरीर पर ये मच्छर हैं ये सन्तान के चय से हो गये हैं और ये मेरे हो कुटंबी पितर हैं इसी मथुरा में चन्द्रसेन की राणीकी दासी प्रभावती है उस प्रभावती को एक विरूप विधि दासी है वह हमारी सन्तान में है उसके पिंडकी हो आशा से हम यहां आये थे अब निराश होकर नरक में चले जांयगे नीच योनिका दिया श्राद्ध कैसे मिल सकता है वे मुनि बोले कि पुत्र के बिना गति नहीं है और स्वर्ग में भी टिके पितर यह कहते हैं कि कोई हमारा पुत्र हम को जल की अंजली और पिंड दे परन्तु यह तो वताओ कि कोई मौन कोई प्रसन्न इन पितरोंमें क्यों गयेहैं जंतु बोलाकि जिन्हों ने विधि से हीन श्राद्ध किया है उसका श्राद्ध राक्षसों को मिलता है क्योंकि बामनजीने बलि राक्षसको और रावणको,मारकर श्रीरामचन्द्रजीनेत्रिजटा राक्षसीको,और महादेवजीने बासुकि को अशुद्ध श्राद्धका फल दिया है अशुद्धश्राद्ध करने वालों के पितर जैसे आते है वैसेही चले जाते हैं इनसे किसीके पितर मौन किसी के हंसते हुये जाते हैं मुनि बोले कि तीन दिन तक मैं भोजन को त्याग कर तेरी शांति को करूंगा तू यहां हो स्थिर रहियो मैं सदैव इसी तीर्थ में रहता हुं और उस दासी को लाकर तेरे निमित्त श्राद्ध करातांहुं ऐसे कह कर राजा के समीप गया जहां वह बिरूप बिधि दासी रहती थी राजा ऋषि को देख कर उठे और प्रणाम कर कहा कि आज मेरा जन्म सफल है यह पाद्य अर्घ मधुपर्क गौः ग्रहण करो जिससे मेरी शांति हो पाद्य आदि को ग्रहण कर मुनि बोले कि मेरे आने का यह कारण है कि अपनी राणी की दासी ओं समेत बुलाओ,दासी सहित राणी ने आकर ऋषि को प्रणाम किया मुनि बोले कि आज ध्रुव तीर्थ में एक आश्चर्य देखा कि जो जगत् के पितर हैं वे सब पुत्रों की पूजा को ग्रहण करके प्रसन्नता से चले गये परन्तु नरक से आया एक भूखा कृश पितर पडा है और लौट कर नरक में हो जाना चाहता है मैंने उस पर दया करके पूछा तो उसने यह कहा कि प्रभावती दासी को जो बिरूप बिधि दासी है वही मेरी सन्तान में है—यह सुन कर उस राणी ने उस दासी के बुलाने को सेवक भेजे कि शीघ्र यहां लावो, और वह दासी (बिरूप बिधि) मदिरा पीकर किसी पुरुष के संग सोरही थी, राजा के भृत्य पकड़ लाये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

और मुनिके आगे खड़ी करदी मुनि उस दासी को बोले कि आज तैने पितरों के लिये कुछ श्राद्ध तर्पण किया वा कुछ अन्न ब्राह्मण को दिया, दासी बोली—नहीं दिया मैं श्राद्ध की विधि को नहीं जानती मुनि बोले कि तुम सब पितरों के माहात्म्य और संतानके फल को देखो श्राद्ध कर्म कराने वाले ब्राह्मण बुलाये और श्राद्ध की सब सामिग्री ली और ध्रुव तीर्थ में आये और वहां मच्छरों से लिपटे हुये सब मनुष्यों ने उस जंतु को देखा, मुनि जंतु से बोले कि यह तेरी संतान की स्त्री है अब तू अपने हित को कह यह क्या करै--जंतु बोला कि इस ध्रुव तीर्थ में स्नान करके सब पितरों का तर्पण करै फिर सोना चांदी वस्त्र तिल इनका दान करै और भक्ति से पिंडदान करै इसी ध्रुव तीर्थ में इसके पितर हम सब दीखेंगे उस दासीने जंतुने जो कहाथा वह सब कियाओर श्राद्ध कराने वाले ब्राह्मणों को भोजन वस्त्र दिये और राणीने भी उससे दूना ब्राह्मणों को दिया रेसम के बस्त्र धूप कपूर अगर चन्दन तिल अन्न दक्षिणा आदि बिरूप बिधि दासी के हाथ से दिलाये---श्राद्ध किये पीछे उस जंतु की दिव्यकांति होगयी और जो मच्छर उसके देह पर थे वे सब उस दासी के कुल के पितर थे वे भी सब दिव्य रूप होगये और उन सब के लेने को इतने विमान आये कि विमानों से आकाश पूर्ण होगया विमानों को देख कर वह जंतु बोला कि गया आदि जितने तीर्थ हैं उन सब से उत्तम ध्रुव क्षेत्र है कन्यागतों में सब पितर यहां आते हैं और यमराज की पुरी शून्य होजाती हैं जो पुत्र कन्यागतों में ध्रुव तीर्थ में तर्पण श्राद्ध करता है उसके पितर तृप्त और परम गति को प्राप्त होते हैं ऐसे ध्रुव तीर्थ के प्रभाव को बर्णन करके वह जंतु पितरों समेत विमान में बैठ कर स्वर्ग में गया और राजा भी उक्त ऋषि को नमस्कार कर के अपनी नगरी में चला आया ॥

इस मथुरा माहात्म्य के सुनने से सब पाप दूर होजाते हैं और पितरों को तृप्ति होती है, और तीर्थों में परम तीर्थ, धर्मों में उत्तम धर्म, ज्ञानों में परम ज्ञान, लाभों में उत्तम लाभ---श्रीमथुरा जी का यह मंडल है।

· मथुरा माहात्म्य समाप्त.

——

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वनयात्रा का संक्षेप

मथुरा जी की परिक्रमा के धाम

१ कारागृह कृष्ण-जन्म स्थान---२ विश्रांत घाट कंसको मारिकर विश्रांत लिया ३ श्रीआचार्य महाप्रभु जी की बैठक (१) ४ वलभद्र घाट ५ सतघरा--गतश्रम को परिक्रमा है ६ जोगघाट ७ प्रयाग घाट--रामेश्वर महादेवजी का स्वरूप है। ८ श्यामघाट ९ कनखलक्षेत्र १० तिंदुकतीर्थ ११ बंगालीघाट १२ सूर्य्यघाट १३ ध्रुवक्षेत्र--ध्रुवजी ने तपस्या की है १४ सप्तऋषि टीला--सप्त ऋषियों के तप करने का स्थान १५ कोटि--तीर्थ १६ रावण का टीला--रावण ने तपस्या की है १७ बुद्धितीर्थ १८ रंगभूमि-।-कुवलिया पीड़ का स्थान, धनुष का स्थान, चाणूर और मुष्टिक मल्ल मारे हैं कंस को मार कर उग्रसेन को राज दिया १९ रंगेश्वर महादेव २० सप्त समुद्र कूप २१ वलभद्रकुण्ड २२ भूतेश्वर महादेव २३ पोतराकुण्ड २४ केशवदेवजी का मन्दिर २५ कृष्णकूप २६ कुब्जा कूप २७ महाविद्यादेवी---पांडवों की स्थापित २८ सरस्वतीकुण्ड २९ उत्तर-कोटि-तीर्थ ३० गोकर्णेश्वर महादेव--यहां गौतम ऋषि की समाधि है। ३१ सरस्वती संगम ३२ दशाश्वमेध घाट ३३ अम्बरीष का टीला ३४ कृष्ण गंगा घाट-।-यहां कोढ़ी मन शुद्ध करके स्नान करे तो कोढ़ जाता रहै ३५ सोमतीर्थ ३६ चक्रतीर्थ ३७ घंटाभरण ३८ मुक्ति तीर्थ ३९ बैकुण्ठ घाट ४० वाराह क्षेत्र-।-बाराहजी का मन्दिर है ४१ असिकुण्डा घाट ४२ शिवताल कुण्ड ॥

१—मधुवन के धाम

गोचारन लीला का स्थान २ मधुकुण्ड-कुण्ड के पश्चिम कंदब के नीचें श्री आचार्य्य महाप्रभूजी की बैठक है।

यहा मधु दैत्य को मारा है और नारद का संदेह दूर किया है। ३ चतुर्भुज रायजी का मन्दिर है।

२—ताल वन

यहां बलदेवजी ने सखाओं समेत ताल फल खाये हैं और धेनुकासुर दैत्य का बध किया है॥

---

(१) बैठक उसको कहते हैं जहां २ श्री वल्लभाचार्यजी ने सप्ताह किया है॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

३ कुमोद्वन

१ जल-शय्या विहार-स्थान यहां क्रीड़ा करके ब्रज भक्तों को सुख दिये हैं। नाना प्रकार के शृंगार किये हैं। २ श्याम तमाल के नीचें आचार्य्य महाप्रभुजी की बैठक है ३ कपिलदेवजीका मन्दिर ४ बेणुनाद का स्थान वेणु बजाकर ब्रज भक्त यहां बुलाये हैं और वे छाक लेकर आये हैं।

४ - बहुला बन

१ शांतनुकुण्ड राजा को बरदान मिला है। राजा शांतनु ने श्रीठाकुरजी महाराज के सन्मुख शतुआ का भोग रक्खा था। भगवान् ने बर दिया कि तेरे पुत्र होगा। २ कृष्णकुण्ड, गाय सिंह का मिलाप हुआ है। सिंह ने गाय को नहीं मारा। ३ बहुला गाय का मन्दिर। श्रावण सुदी १२ को कृष्णकुण्ड में स्नान करके जे एक गौ पुण्य करते हैं उनको सहस्र गौ का फल होता है। ४ श्री आचार्य्य महाप्रभूजी की बैठक कुण्ड के पास उत्तर दिशा में बड़ के नीचे है।

१-जाखिनगाव बलदेव जी का मन्दिर २ रेणु कुण्ड ३ बलभद्र कुण्ड॥

५ काम बन

१ पंच तीर्थ २ धर्मकुंड ३ यज्ञकुंड ४ दशावतार की मूर्ति ५ मनकामना तीर्थ - स्नान से मन कामना सफल होती है ६ विमलकुंड ७ यशोदाकुंड - यहां यशोदाजी ठाकुरजी के लिये छाक लाती थीं ८ लंका-कुंड---यहां कृष्ण ने सेतु बांधा है रामावतार की लीला की है ९ चक्र तीर्थ १० पद्मकुंड ११ लुकलुक कुंड १२ लुकलुक कंदरा - यहां कृष्णचंद्र आंख मिचौनी खेले हैं। कंदरा में छिपकर पर्वत पर प्रकट हुए हैं और बंसी बजाई है। १३ चरण-पहाडी---चरण-चिन्ह १४ लकुटी का हौदा १५ गाय बछराओं का खिडक यहां मध्यान्ह की छाक ग्वाल मंडली में बैठकर भोग लगाते थे १६ मही दधि तीर्थ---यहां दही खाकर मुख धोया है १७ धर्मरायजी का मन्दिर--यहां कृष्ण महाराज ने धर्मराय को उपदेश किया है--कि वैष्णव और भक्तों पर तुमारा प्रभाव न चलेगा १८ नंदवट--यहां नन्द, उपनन्द श्रीकृष्ण को गोद में लेकर बैठते थे १९ नन्दकूप २० सुरभीकुंड २१ श्री आचार्य्य महाप्रभुजी की बैठक २२ श्री गुसांईजी की बैठक २३ खिसलनी शिला २४ व्योमासुर की गुफा २५ भोजन-थारी के आगें मानसी-कुंड २६ बारह कुंड २७ कामेश्वर महादेव का मन्दिर। कनवरी ग्राम। यहां ग्वालन को दर्शन दिया है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृष्ण बलदेवने कुड़वारा भोग लगाया है। हिंडोरा का स्थान।
१ सुनहरा कीकदम खंडी २ रास मंडल का चबूतरा ३ हिंडोराका स्थान ४श्रीआचार्य्य महाप्रभुजीको बैठक ५ कुंजमें जलशय्या-बिहारका स्थान ६ चित्र बिचित्र शिला--यहां सखी जनों ने फूलों को सेज श्रीराधा कृष्णजीके लिये बना यी है फूलों के बोजना से श्रम दूर कियाहै, जावक के चिन्ह यहां पर हैं।

६ खदिरबन

यहां गोखेदी है-- बकासुरको मारा है, गोपियोंने चरण दावे हैं-रासलीला की हैं १ सूर्य्यकुंड---यहां पर श्रीराधिकाजी सांझी के फूल बीनने को गयी हैं-कृष्ण मोर का रूप धर कर नांचे हैं-और ललिता को दृष्ट पड़ेहैं-जबराधाजीका हार लता में उरझि कर टूटपड़ा है--तब राधिका जी मोती बीनने लगी हैं। श्री कृष्ण ने पुष्प की गेंद पीछे से मारी है--इस भांति श्री राधिकाजी को कृष्ण-चन्द्र का दर्शन हुआ है--और देहको सुधि जाती रही--ललिता बरसाने ले आई हैं और कीरति से कहा है कि तुम्हारी बेटी कारेसांपने खाईहै। इतने में श्रीठा-कुरजी गारुडी बनकर पधारे हैं और राधिकाजी को अच्छी करके गये हैं। २ कुमरवन,--चार कुंड हैं,गह्वरवन है ३ जावक उपवन यहां कृष्ण चन्द्र ने श्रीप्रियाजी के चरणों में जावक लगाई हैं और नाना प्रकार के श्रृंगार किये हैं, बेंनी गूथी हैं,रास किये हैं मान मनाया है १ जावकवट २ रास मण्डल का चबूतरा ३ हिंडोरा ४ जलशय्या ५ कुण्ड है।

७ वृन्दावन

१ कालीमर्दन-घाट २ कालीमर्दन ठाकुर का मन्दिर ३ आदिवाराहजी का मन्दिर ४ प्रस्कन्दन घाट ५ जुगल घाट ६ जुगलकिशोर जी का मन्दिर ७ बांके बिहारीजी का मन्दिर ८ श्री राधावल्लभ जी का मन्दिर ९ बिहारी-घाट १० नित्यबिहारी ठाकुर जी का मन्दिर ११ सेवा कुंज--इसमें रंग महल है, जहां श्रीकृष्ण और राधिका जी नित्य बिहार करते हैं--१२ श्रृंगार-बट यहां सामवेद मुरली में गाया है १३ श्री स्वामिनी जी की बैठक १४ श्रीजी के चरण चिन्ह १५ यमुना तीर पर हिंडोरा झूलने का बट १६ चैनघाट १७ केशीघाट १८ धीर-समीर घाट १९ दुर्वासा ऋषि का स्थल २० वंशीबट २१ श्री आचार्य्य महाप्रभुजी की बैठक २२ गोपे-श्वर महादेव २३ वृन्दा देवी का स्थान २४ चाणूर और मुष्टिक का स्थान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२५ ब्रह्मकुण्ड २६ ग्वाल मण्डल २७ गोबिन्द देवजी का मन्दिर २८ श्री गोपी नाथ जी का मन्दिर २९ श्री राधा रमण जी का मन्दिर ३० श्रीनिधिवन ३१ शृंगार-मन्दिर ३२ राधा-बाग ३३ श्री राधा का निकुंजमन्दिर ३४ गोबिन्द-कुण्ड ३५ वेणु कूप ३६ बच्छ गोप का स्थान ३७ श्री यमुनाजी का पुलिन जहां श्री राधा और श्री यमुना जी ने गान और रास किया है।

३८ मुंशीघाट--इस घाट पर श्री मदन मोहनजी का मन्दिर है। यह मन्दिर मुंशी रामनारायणजी स्वर्गवासी अपने पिताजी के नाम से डिपटी राजालाल वर्म्मा ने बनाया है और शृंगार वट के निकट है। मुंशी राम नारायण जी का श्रीठाकुर जी की सेवा में ऐसा प्रेम था कि सेवा के लिये कुटुंब और राजपदवी का परित्याग करके श्रीवृन्दावन में ही बसते थे और उनका संपूर्ण समय श्रीठाकुरजी की सेवा और भजन में ही बीतता था। यद्यपि वे क्षत्रिय थे तथापि बिद्वान् महात्मा संन्यासी उनकी भी संगति की अभिलाषा करते थे। श्री ठाकुरजी की दया से उनके पुत्र भी ऐसे श्रीकृष्णचन्द्र जी के भक्त और अपने धर्म में तत्पर हैं कि जिन्होंने अपने पुरुषार्थ के द्वारा पिताजी के नाम से बहुत धन लगाकर उक्त मंदिर की रचना की और सेवा-पूजा का बंधान नियत किया।

८ भद्रवन

१ गोघाट २ मूंजका-बन यहां गोप ग्वाल सब मार्ग भूल गये हैं, दावानल उठी है—नयन मूंदते ही शान्त होगयी है। ३ डांगोला गाम सखाओं की बैठक, यहां श्री ठाकुरजी लाठी भूले हैं ४ मान-सरोवर ५ श्री गोस्वामिनी जी की बैठक ६ श्री आचार्य्य महा प्रभुजी की बैठक ७ पिपरोली गाम ८ मानक-शिला ९ बच्छबन का घाट १० श्री बलदेवजी और श्रीदामा सखा की बैठक॥

९ भांडीरबन

१ भांडीर बट २ भांडीर-कूप ३ बिजौली गाम ४ श्री बलदेव जी और श्री ठाकुर जी का बगीचा॥

श्री यमुना पार के वन

१० बेलबन

१ श्री यमुना जी के तीर कुण्ड मन्दिर २ श्री राधिका जी की बैठक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

११ लोह वन

१ कृष्ण कुण्ड—यहां लोहासुर दैत्य को मारा है और लोहे का दान किया है २ सनकादि की तपस्या का स्थान ३ कृष्ण कूप। यशोदा जी ने श्री कृष्ण को स्नान कराया है ४ गोपाल पुर गाम। यहां श्री ठाकुर जी ने गो-चारन लीला की है और गोपियों ने श्री कृष्ण का नाम ग्वाल-गोपाल रक्खा है ॥

१२ महावन

१ बच्छ गोप का ठौर २ नंदरायजी के दांतन करने का टीला ३ शकटा-सुर, तृणाबर्त का खार ४ नन्द राय जी की सिंह-पौरि ५ नंद-भवन ६ दधि मथने का स्थान ७ श्री कृष्ण की छटी पूजा का स्थान ८ श्री ठाकुरजी का पालना १० अस्सी-खंभा ११ श्याम-मन्दिर। यहां श्री ठाकुर जी की नाक छेदी है १२ नंद-कूप १३ यमलार्जुन दामोदर लाला का स्थान १४ श्री मथुरा नाथ जी का मंदिर १५ श्री द्वारिका नाथ जी का मंदिर १६ श्री महा मल्लराय ठाकुर जी का मंदिर १७ पूतना-खार १८ श्री नंदराय जी की गौओं की खिड़क १९ गोबर के टीले २० रमण स्थल। श्री बलदेवजी श्री कृष्ण ने घुटुवन लीला की है २१ गोपीजनों का रमण २२ रमण-घाट २३ गोप कूप। यहां सों मोती अमावस्या का माहात्म्य है। २४ नारद का टीला २५ गोविंद स्वामी के गान का टीला २५ कोयलाघाट। यहां पूतना का दाह किया है २६ बल्लभ-घाट २७ उत्तेश्वर-घाट। इस घाट होकर बसुदेव जी कृष्ण को ले गोकुल गये हैं २८ उत्तेश्वर महादेवजी की चौकी है २९ बाजन्ता टीला। यहां देवताओं ने दुंदभी वजायी हैं। ३० बंसपौरी। यहां श्रीकृष्ण ने प्रथम दिन बांसरी बजायी है ३१ कर्णवेद-कूप। यहां गर्गाचार्य्य ने नाम-करण किया है।

उपवन

१ गोकुल

श्री गोकुल गांम १ यशोदा-घाट २ श्री विट्ठल नाथजी का मंदिर ३ श्री मदन मोहन जी का मंदिर। यह प्राचीन स्वरूप है ४ कल्याण रायजी का मंदिर ५ श्री गोकुल नाथ जी का मन्दिर ६ श्रीगोकुल नाथजी की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बैठक ७ सिंहपोरी ८ नवनीतिप्रियाजी का मन्दिर ९ श्री गुशाईंजी की बैठक १० श्री रघुनाथजी की बैठक ११ श्री द्वारिकानाथजी का मन्दिर १२ श्री आचार्य्य महाप्रभुजी की बैठक १३ ब्रह्म-छोंकर १४ गोबिन्दघाट १५ ठकुरानी घाट १६ श्री गोकुल-चंद्रमाजी का मन्दिर १७ श्री आचार्यजी का मन्दिर १८ श्री मथुरानाथजी का मन्दिर १९ अठखंभा-घाट २० चौगान पैय्या का स्थान २१ श्री नन्दरायजी की गायों का खिड़क॥

२ गोवर्द्धन

१ मानसी-गंगा २ चक्र तीर्थ ३ आचार्य्य महाप्रभुजी की बैठक संध्याबन्दन की दूसरी बैठक कुण्ड के पास है ४ चरण चिन्हके दर्शन। यहां श्री नन्दरायजी, यशोदाजी, बलूदेवजी और कृष्ण आकर बसे हैं ५ बसई कुण्ड ६ ब्रह्मकुण्ड यहां ब्रह्मा ने स्तुति करके फूलों की बर्षा की है ७ श्री हरिदेवजी का मन्दिर ८ दान घाटी ९ नन्दरायजी का मन्दिर १० धर्म रोचनकुण्ड ११ ऋण मोचन कुण्ड १२ पाप मोचन कुण्ड १३ गोरोचन कुण्ड। जमनाबती गाम—यहां जमुना का घाट हैं।

३ बरसाना

१ भानोखर २ यशोदाजी का कुण्ड ३ हिंडोरा के स्थान, चिकसौली गाम, नंदराय यशोदाजी, रोहिनीजी, बलदेवजी और श्री कृष्ण वृषभान के यहां जब होंने गये थे, तब ठहरते थे। ४ रत्न-सिंहासन ५ दोहिनी कुण्ड—यहां यशोदाजी दोहिनी धोने गयी थीं, तब राधिकाजी उनको मिलीं। श्रीयशोदाजीने उनका शृंगार किया—जबही श्री कृष्ण वहां पधारे हैं, तब माता ने अंचल पसार बिधिसों यह बर मांगा है कि मेरे कृष्णको राधा नारि मिले। ६ मोहनी कुण्ड ७ विलास—गढ़ ८ बिलास—मन्दिर ६ दान-मन्दिर ९ हिंडोरे का स्थान—गहवर बन १० सांकरी खोर ११ श्री आचार्य महाप्रभुजी की बैठक १२ मान-मन्दिर यहां श्री राधाने मान किया है और श्रीकृष्ण उनके चरणों पर गिरे हैं १३ मोर-कुटी यहां मोर का स्वरूप धर के श्री ठाकुरजीने नृत्य किया है १४ मोर सखी की मूर्ति १५ श्री राधिका जी का मन्दिर—१६ कीरत, वृषभान और श्रीदामा का मंदिर १७ अष्टसखियों का मंदिर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

...ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौली
...-5

४ नन्दगाम

१ पीरी-पोखर इसमें उबटना लगाकर सखिओंने श्रीजीको स्नान करायाहै।

५ संकेत

१ प्रेम-सरोवर यहां सलूनों का दिन माना है। गोपियों ने कृष्ण महाराज उठाये हैं। कदम्ब के नीचे चबूतरा पर श्री ठाकुर जी बिराजे हैं। व्रज भक्तों ने राखी बांधी है २ बिमला देवी ३ बिमल-कुण्ड यहां शृंगार करके संकेत के स्थान में पधारे हैं ४ श्री आचार्य्य महाप्रभुजी की बैठक ५ रासमंडल का चबूतरा ६ कृष्ण-कुण्ड यहां सलूने को रास किया है।

रिठेरा चन्द्राबलीका गाम १ चन्द्रावलीकुण्ड २ चन्द्रावली जी की बैठक ३ श्रीआचार्य्य महाप्रभुजी की बैठक ४ श्रीयशोदाजी का मंदिर ५ कृष्ण-कुण्ड यहां प्रातःसमय बछड़ों को जल पान कराया है ६ ललिताजी का मन्दिर ७ ललिता-कुण्ड ८ रास मंडल का चबूतरा ९ हिंडोरा का स्थान १० ललिता कुंज ११ विशाखाजी का भुवन १२ बिशाखा-कुण्ड १३ बिलास-कुण्ड १४ कदम्ब की कुंज १५ पूर्णिमासी का मंदिर १६ पूर्णिमासीकुण्ड १७ मोहन कुण्ड यहां श्री ठाकुरजी की छवि देखि गोपी मोहित हुई हैं, देह दशा भूलों हैं, वंसी की ध्वनि सुनि सुधि आई है—१८ रामदास की धान की क्यारी यहां चिरवा का भोग लगाया है १९ यशोदा-कुण्ड—यहां गोपाष्टमी का उत्सव माना है २० यशोदाजी का मंदिर २१ हाऊ की मूर्ति यहां यशोदा जी ने कृष्ण डरपाये हैं—"दूरि खेलन जिनि जाउ लाला मेरे हाऊ आये हैं," २२ मधु सूदन-कुण्ड २३ दधि बिलोंने का मांट २४पद्म तीर्थ २५चरन-पहाड़ी ।

पनिहारी-गाम १ पनिहारीकुण्ड इस कुण्ड का जल यशोदाजी के घर आता था, श्रीठाकुरजी पान करते थे २ पान-सरोवर ३ श्री आचार्य्य महाप्रभुजी की बैठक ४ गौ बछड़ा बाधने का खुंटा ५ नन्दराय जी का गौओं का खिड़क। ६ टेरक देव ७ रासमंडल का चबूतरा ८नंदगाम की कदमखंडी।

१ गौकुण्ड २ बिलासबट रास लीला का स्थान ३ हंस-सरोवर ४ सारस-वन—यहां फूल वीने हैं और श्री राधिका जी की वेंनी गूंथी हैं ५ रास मंडल का चबूतरा ६ कुण्डल-बन यहां श्री कृष्णचन्द्र का कुण्डल खोगया था और

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोपियों ने ढूंढ़ कर दिया था ७ वखतर-बन यहां श्री कृष्ण और बलदेव जी ने सखाओं के संग शस्त्र पहिने हैं--

६—परभद्रबन—इसमें कोई मुख्य धाम नहीं है।

७ अड़ींग

अड़ींग गाम जहां अड़ि के दान लिये हैं २ किलोलकुण्ड २ बलदेव जी का मन्दिर ३माधुरी कुण्ड ४ मोर-बन।

८ शेष शाई

क्षीर सागर यहां क्षीर सागर और शेषशय्या की लीला कृष्ण बलदेव जी ने दिखायी है। १ लाल बाग २ शेरगढ़ बड़े गोप का गाम।

९ मांट

यहां दधि के मांट श्री ठाकुरजी ने उलटे हैं और भाग कर उपवनमें छिपे हैं।१ यमुनाजी की झील अर्थात् गौओं को जलपान कराने का स्थान॥

१० ऊंचा गाम

१ श्री ठाकुजी की सूक्ष्म शय्या २ बलदेजी के बैठने का चबूतरा ३ रासमण्डल का चबूतरा ४ देहकुण्ड ५ संजोगी तीर्थ।

११ खेलबन

१ रामघाट अर्थात् विलास बन २ बलदेव जी का मन्दिर ३ बलदेव जी के सखा पीपल के वृक्ष ४ ब्रह्मघाट ब्रह्माजी ने तपस्या करके वत्स हरण का दोष दूर किया है।

भूषन-बन यहां आभूषन पहिरे हैं। निवारने-वन--निवाड़े के फूल बहुत हैं गुंज्जावन+ब्रज भक्तों को गुंजा कीं माला पहराई हैं १ अक्षय बट २ संकेत-वन।

१२ श्रीकुण्ड } यहां कोई मुख्य स्थान नहीं है
१३ गंधर्वबन }

१४ परसौली

१ परासौली बट २ चन्द्रसरोवर--यहां ब्रह्मरजनी करके रास किया है ३ श्री-आचार्य्य महाप्रभुजी की बैठक ४ श्रीगुसांईजी की बैठक ५ श्रीगोकुलनाथ जी की बैठक ६ रास मंडल का चबूतरा ७ शृंगार-मंदिर। पैठोगाम--यहां गोवर्द्धन धारनेको ब्रजभक्त आये हैं और शृंगार भी किये हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्यौरा गाम १ संकर्षण बलदेवजी का तीर्थ जहां कोढ़ी सुन्दर काया पाते हैं २ श्री आचार्य्य महाप्रभुजी की बैठक ३ चरण चिन्ह के दर्शन ४ गंधर्व-कुण्ड यहां श्रीराधारानी ने गान किया है ५ गोविंदकुण्ड यहां जल शय्या का स्थान है। अब जल उबटे हैं ६ श्रीठाकुरजी के हस्ताक्षर ७ टोपी के दर्शन ८ चतुरानाग के पास श्रीजी पधारी हैं ९ अप्सराकुंड १० गोपीतलैया ११ गोपालसागर १२ श्रीठाकुरजी का जलघरा १३ श्याम-ढाक जिसपर प्रथम हिंडोरा झूले हैं १४ सुगंध शिला १५ गौओं का खिड़क १६ श्रीकृष्ण की पादुका है १६ सिंहासन-घटिया यहां इन्द्र आकर और सुरभी को लेकर चरणों में पड़ा है। श्रीठाकुरजी ने इन्द्र की पीठ ठोकी हैं और पीताम्बर उढ़ाया है पाग के पेच फिर बांधे हैं १७ नवकांकरी खेलन का थान १८ सुरभी गौ के खुर १९ ऐरावत हाथी के पांव २० श्रीकृष्ण के चरण-चिन्ह २१ सिंदूर-शिला— यहां सखियों ने श्रीराधिकाजी की मांग भरी है २२ बाजनी-शिला २२ सुरभी-कुण्ड।

पूंछरी—गांम १ रामदास की गुफा २ गोविन्द स्वामी की कदमखंडी ३ गोवर्द्धन की कंदरा ४ श्री गुशांइयों की समाधि ५ श्रीजी की गौओं का खिड़क ६ गोवर्द्धन-पूजा का स्थान ७ आचार्य्य महा प्रभुजी की बैठक ८ सुन्दर-शिला ९ गोवर्द्धन नाथ जी का मन्दिर--- १० बूढे बाबू की मूर्ति--- ११ श्री ठाकुर जी का चौंतरा---यहां श्रावण सुदी हरियाली तीज श्रीराधिकाजी ने मांनी हैं। संपूर्ण व्रज युवती श्रृंगार करके गयी हैं १२ तुलसी क्यारी--- १३ दंडौती सिला १४ श्रीजी की सिंह-पौरी।

गोपाल पुर गाम १ सातों स्वरूप के सात मन्दिर २ श्री नाथ जी का खासा भंडार ३ श्री मथुरा नाथजी का मन्दिर ४ एक सिंहासन पर सातों स्वरूपों के दर्शन ५ श्री गुशांईजी की बैठक ६ श्री गोकुल चन्द्रमा जी का मन्दिर ७ नवनीत प्रिया जी का मन्दिर ८ श्री आचार्य्य महाप्रभुजी का मंदिर १० श्री द्वारिका नाथ जी का मन्दिर ११ गोकुल नाथ जी का मन्दिर १२ विट्ठल-नाथ जी का मन्दिर १३ श्री मदन मोहन जी का मन्दिर १४ रुद्रकुंड— यहां ठाकुरजी ने अन्तर्धान लीला की है और गोपियों ने रुदन किया है— १५ सूकटा-कुण्ड १६ जान अजान वृक्ष—गोपियों ने इनसे पूछा है कि कृष्ण तो नहीं देखे एक वृक्ष ने हां कही वह जान वृक्ष हैं दूसरे ने नहीं कही वह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

अजान वृक्ष हैं १७ चौगान-पहिया। यहां ठाकुरजी चौगान खेले हैं और रास-बिलास किये हैं।

१५ बिलछूबन

१ श्यामतमालके नीचे श्रीठाकुरजी और ठकुरानीजी की बैठक २ श्याऊ का ढाक--यहां नाना प्रकार की लीला की हैं। श्री नाथजी का बागडिर भिरहाथा जिसे गोबिंद स्वामी लाये थे ३ गुलालकुण्ड--यहां बसंत के दिनों में गुलाल प्रकट होता है। गांठौली गाम १ कदमखंडी यहां पर गोपियों ने श्रीराधिका का और कृष्ण की गांठि जोड़ी हैं, बिबाह किया है।

१६ बच्छबन

वसईगाम--यहां व्रजभक्त कृष्ण के बसीभूत हुये हैं।

आटस गाम (१)रामचन्द्र जी का ताल, श्री रामचन्द्र जी की मूर्ति।

नरीसिमरी (१)बलदेवजी का मंदिर, किशोरी कुण्ड १ बच्छबिहारी का मंदिर २ चतुर बिहारी का मंदिर ३ ग्वाल मंडल ४ ग्वालकुण्ड ५ हरि बोल तीर्थ ६ यमुनाजी का झील यहां से ब्रह्मा बछड़े हरलेगये थे।

१ तपोवन यहां श्रीराधिकाजी ने विरह किया है २ गोपी बट ३ चीर घाट चीर हरन लीला का स्थान ४ नंदघाट यहां से नंदरायजी को बरुण चुरा ले गये हैं ५ नंदराय जी की बगीची यहां श्री ठाकुर जी ने नंदराय के शालिग्राम मुख में छिपाये थे--गरुड़गोबिंद यहां गोपियों ने कृष्णका गोविंद नाम रक्खा है श्री ठाकुरजीने इन्द्रका मान दूर किया है सठीकरा गामसखियों के कै: कुंज भुवन हैं--अक्रूर जी का ग्राम भतरोंड़।

१७ आदिबद्री

अलख गंगा परिमटिरा यहां इन्द्र श्रीकृष्ण की गांय चुरा लेगया था १ इन्द्रकुण्ड २ इन्द्र कूप।

१८ करहला

१ कृष्णकुण्ड यहां गोपियों को कंकण पहिराये हैं। २ रास मंडल का चबूतरा। ३ हिंडोरे का ठौर ४ करहला की कदमखंडी कदम के न्यारे२ पौक हैं ५ श्री आचार्य्य महाप्रभुजी की बैठक है।

कमई सखियों का गाम।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१९ अजनोख

१ अजनीखर—श्रीठाकुरजी ने श्रीराधिका जी के नेत्र कमल में अंजन आंज्या है—२ अंजन कुण्ड।

२० पिसायो

यहां श्रीठाकुरजी को श्रीराधिकाजीने जलपान कराया है।बंशी बजाकर अनेक प्रकार के जल निकाले हैं,यहां अनेक कुंज-कुटी हैं ।१ ललिताकुण्ड २ ललिताजी का गांम ३ हिंडोरे का स्थान।

२१ कोकिलाबिन

अर्थात् कुंजबिहार का स्थान १कृष्णकुण्ड २ श्रीआचार्य महाप्रभुजी की बैठक ३ ललिताकूप ललिता ने ठाकुरजी को स्नान कराया है ४ कोकिला-कुण्ड।

२२ दधिगाम

यहां दधि-लीला की है १ दधि-कुंड २ मधुसूदन-कुंड ३ सात सखियों के सात रमण के मंडल ४ शीतलकुण्ड इसमें यशोदा ने स्नान करके श्रम दूर किया है ५ श्री आचार्य महाप्रभुजी की बैठक। वह स्थान जहां ६ न्यारे २ चौक में यशोदाजी को रास लीला दिखायी है ७ सूर्यकुंड।

२३ कोटवन

छोटी पठेन १ गौओं का खिड़क २ कृष्णकुंड ३ बलभद्रकुड ४बल-देवजी का मंदिर ५ चरन-पहाड़ी यहां गोपभेष धरिके गोवर्द्धन धारण किया है ६ सुरभी गौ के खुर ७ तुरंग (घोड़े)के सुम ८ ऐरावत हाथी के पांव यहां इन्द्रने स्तुति की है ९ चरण गंगा सखाओं ने चरण धोये हैं।तिससे चरण-गंगा नाम कुंड हुआ है।

रासौली यहां रास लीला कीन्हे है १ रासौली कुंड॥

२४ रावल

अर्थात् श्रीराधिका जी का जन्मस्थान और उनकी ननसार—बुढिया का खेड़ा। एक बुढ़िया के बेटा की वहू मानवती नाम की श्रीजी की सखी थी।कृष्णचन्द्रजी उस बुढ़िया के पुत्र का रूप धरिकर मानवती के पास पधारे।बुढिया से कह दियाँ कि तेरे पुत्र का रूप धरिके कोई आवे तो पत्थर मारना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

तब किवाड़ मत खोलना। बुढिया का पुत्र आया, तब उसने पुत्र के पत्थर मारे कि किवाड़ न खोलो।

वांदी गाम (१) बांदी, आनंदी देवकी की दो मूर्ति हैं ये नन्दराय जी के घर की गोवर-हारी हैं २ बांदी आनन्दी कुण्ड है। बलदेवजी गाम ३ श्री बलदेव जी का मन्दिर ४ श्री गोकुल नाथ जी की मूर्ति ५ श्रीबलदेव जी की बगीची ६ श्री बलभद्रकुण्ड।

हथोरा गाम १ श्री नंदरायजी की अथाई, यहां कृष्ण बलराम गोपियों के आगे खेला करते थे २ चिन्ताहरण घाट ३ ब्रह्मांड घाट, यहां श्रीकृष्ण ने मिट्टी खायी थी और माता को मुख फाड़कर तीनों लोक, सात द्वीप, नव खंड दिखाये हैं।

ब्रज के मुख्य स्थल

वन १२

१ मधु वन २ ताल वन ३ कुमोद बन ४ बहुला बन ५ काम बन ६ खिद्रबन ७ वृन्दावन ८ भद्रवन ९ भांडीरवन १० बेल वन ११ लोहजुवन १२ महावन॥

उपवन २४

१ गोकुल २ गोबर्द्धन ३ बरसाना ४ नन्दगाम ५ संकेत ६ परिमदिरा ७ अड़ींग ८ शेषसाई ९ माट १० ऊंचा गाम ११ खेल वन १२ श्री कुण्ड १३ गंधर्व वन १४ परासोली १५ बिलछू १६ बच्छ वन १७ आदि बद्री १८ करहला १९ अजनोंखरि २० पिसायो २१ कोकिलावन २२ दधिबन २३ कोटिबन २४ रावल।

ताल २

१ मरबारी ताल २ राम ताल।

बलदेव जी सात

१ रीड़ा के पास २ नन्दगाम में ३ अड़ीग में ४ ऊचे गाम में ५ बिलास बन में ६ जाबिन गांम में ७ नरीसेमरी में।

श्रीकृष्ण के चरण चिन्ह ७

१ श्री गोवर्द्धन की तरहटी में २ दो स्थान पर ३ सुरभी-कुण्ड पर ४ नन्दगांम में ५ हाथीपद पास ६ चरण पहाड़ी पर ७ दूसरी चरण पहाड़ी पर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री राधिका जी के स्थान २

१ बरसाने में २ रावल में।

पोखरि ६

१ कुसमी खरि २ अंजनी खरि ३ पीरी-पोखरि ४ पिसाये की पोखरि ५ हरजी की पोखर ६ भानोखर।

देवी ७

१ वृंदादेवी २ संकेतदेवी ३ उपवनदेवी ४ मथुरादेवी ५ विमलादेवी ६ कात्यायन देवकी ७ नौवारी चौबारी देवी।

कदमखंडी ५

१ गांठौली २ करहला ३ सुनहर ४ नन्दगाम ५ गोविन्द स्वामी का॥

महादेव जी ८

१ भूतेश्वर २ गोकर्णेश्वर ३ बूढे बाबू ४ चक्रेश्वर ५ नंदीश्वर ६ गोपेश्वर ७ कामेश्वर ८ उन्मेश्वर।

पर्वत ५

१ गोबर्द्धन २ बरसाने में ३ नन्दगाम में ४ चरनपहाड़ी ५ दूसरो चरन पहाड़ो।

हिंडोरे के स्थान ६

१ गोबर्द्धन पर्वत पर २ करहला में ३ संकेत में ४ अंजनोखर में ५ वृन्दावन में ६ श्री राधाकुण्ड पर।

सरोवर ४

१ मान सरोबर २ पान सरोबर ३ चन्द्रसरोबर ४ प्रेम सरोबर।

कूप ११

१ सप्तसमुद्र कूप २ हगीकूप ३ चंद्रकूप ४ इन्द्रकूप ५ वेणुकूप ६ भांडीर कूप ७ नन्दकूप ८ कर्ण कूप ९ कृष्ण कूप १० कुब्जा कूप ११ गोप कूप।

सिंहासन ६

१ बिष्णु-सिंहासन २ कामबन की चरण पहाड़ी ३ भोजन-थारो में ४ लुक २ कंदरा में ५ सुनहरा की कदमखंडी ६ गोबर्द्धन की तरहटी में।

शिला ११

१ सिंदूरी शिला २ कज्जली शिला ३ बाजनी शिला ४ सुन्दर शिला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizaqtion by eGangotri

५ शृंगार शिला ६ सुगंधी शिला ७ मानक शिला ८ खिसलनी शिला ९ चित्र विचित्र शिला १० स्नान शिला १० दंडोती शिला।

दान लीला के स्थान ६

१ करहला २ गोबर्द्धन पर ३ दान घाटी ४ सांकरी खोर ५ गहवरवन ६ कदम खंडी।

श्री आचार्य्य महाप्रभूजी की बैठक २२

१ गोकुल २ मधुवन ३ कमोदबन ४ बहुला बन ५ राधा कुण्ड ६ गोबर्द्धन ७ गोबिन्दकुण्ड ८ गोपालपुर ९ पूजनी-शिला १० कामवन ११ गहबर बन १२ संकेत १३ नन्दगाम १४ कोकिला बन १५ बीरघाट १६ मानसरोबर १७ कोटिबन १८ वृन्दाबन १९ चन्द्रसरोबर २० चक्रतीर्थ २१ सुनहरा की कदम खण्डी २२ मथुरा में।

श्री गुसांई जी की बैठक ९

१ श्री राधा कुंड २ रासौली ३ गोपाल पुर ४ सुरभी कुण्ड ५ परासौली ६ संकेत ७ टीकरी ८ मानक शिला ९ श्री गोकुल जी में।

कुण्ड ८४

१ बिमलकुण्ड २ धर्मकुण्ड ३ यज्ञ कुण्ड ४ पंचतीर्थ कुण्ड ५ मणिकार्णिका-कुण्ड ६ यशोदा कुण्ड ७ निवासकुण्ड ८ लंकाकुण्ड ९ मनकामना कुण्ड १० सेतु बंध रामेश्वर कुण्ड ११ महोदधिकुंड १२ चीरसागर १३ जल बिहार कुंड १४ प्रयाग कुंड १५ पुष्कर कुंड १६ द्वारिका कुंड १७ घोषरानी कुंड १८ गोपीकुंड १९ काम्यौं कुंड २० मोतीकुंड २१ नृसिंह कुंड २२ सरस्वती कुण्ड २३ परमदरा कुंड २४ अच्युतकुंड २५ रुद्रकुंड २६ सूकटी कुंड २७ गुलाल कुंड २८ संकेत कुंड २९ सुरभीकुंड ३० प्रीतकुंड ३१ रंगीला कुंड ३२ छबीला कुंड ३३ दबीलाकुंड ३४ हठीला कुंड ३५ सैन कुंड ३६ सूर्य्य कुंड ३७ विशाखा कुंड ३८ बिश्राम कुंड ३९ भोगकुंड ४० संकर्षण कुंड ४१ मानसीकुंड ४२ ब्रह्मकुंड ४३ माधव कुंड ४४ खेलकुंड ४५ बद्रीकुंड ४६ केदारकुंड ४७ दोहिनी कुंड ४८ मोहनी कुंड ४९ किशोरी कुंड ५० ललिता कुंड ५१ अप्सरा कुंड ५२ कृष्ण कुंड ५३ राधाकुंड ५४ जुगल बिहारी-कुंड ५५ सांतनु कुंड ५६ नारद कुंड ५७ शृंगारकुंड ५८ हरिद्वार कुंड ५९ अयो-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ध्याकुण्ड ६० चरन कुंड ६१ वामन कुण्ड ६२ ऋणमोचन कुण्ड ६३ पापमोचन कुण्ड ६४ धर्मरोचन कुण्ड ६५ गोरोचन कुण्ड ६६ मत्स्य कुण्ड ६७ बाराह कुण्ड ६८ बलभद्र कुण्ड ७९ रोहिनी कुण्ड ७० मे.हिनी कुण्ड ७१ भामिनी कुण्ड ७२ रत्नकुण्ड ७३ गोबिन्द कुण्ड ७४ गयाकुण्ड ७५ देहकुण्ड ७६ श्यामकुंड ७७ रुक्मिणी कुंड ७८ सत्य भामा कुण्ड ७९ गोमती कुंड ८० यमुना कुण्ड ८१ नैमिषारण्य कुंड ८२ अवंती कुंड ८३ वरुण कुण्ड ८४ व्रज बल्लभ कुंड ॥

इति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्र
भरतनिधि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi